इतिहास मनीषी

डॉ० दसरथ शर्मा

का

मन्तव्य

इतिहास की काल गणना की अत्यन्त आवश्यक पुस्तक है। विद्वान संपादक ने संक्षेप में एक बहुत बड़े विषय का ज्ञान प्रस्तुत किया है। राजस्थान के इतिहास के लिए यह एक अत्यन्त उपयोगी प्रकाशन है।

●

राजस्थान इतिहास परिषद के जोधपुर अधिवेशन के स्थानीय मंत्री

डॉ० रामप्रसाद व्यास का संदेश

"पुस्तक का प्रकाशन एक बहुत बड़ी कमी को पूरी करता है। इसके साथ ही जोधपुर को गर्व है कि आज आगुंतक विद्वान इतिहास प्रेमियों की सेवा में यह कृति प्रस्तुत हो रही है। लेखक श्री सुखवीरसिंह जी गहलोत, इतिहास के जाने माने लेखक हैं। वे इस सामयिक प्रकाशन हेतु बधाई के पात्र हैं।"

मूल्य रु० १२.००

राजस्थान के इतिहास

का

तिथिक्रम

●

सुखवीरसिंह गहलोत

एम. ए.

●

राजस्थान इतिहास परिषद के प्रथम अधि॑

प्रकाशित

जोधपुर, १५ दिसम्बर, १९६७.

प्रकाशक
देवेन्द्रसिंह गहलोत
हिन्दी साहित्य मन्दिर
गहलोत निवास, जोधपुर।

प्रथम संस्करण
मूल्य रु० १२-००

मुद्रक
निर्मल प्रिन्टर्स
मनिहारों का रास्ता, जयपुर।

आमुख

Dasharatha Sharma
M.A., D. Litt.
Professor and Head of the
History Department
University of Jodhpur.

श्री सुखवीरसिंह गहलोत द्वारा सम्पादित 'राजस्थान के इतिहास का तिथिक्रम' देखने का मुझे अवसर मिला। इतिहास की काल गणना विषयक यह अत्यन्त आवश्यक पुस्तक है। इसमें विद्वान सम्पादक ने संक्षेप में एक बहुत बड़े विषय का ज्ञान प्रस्तुत किया है।

आशा है इसी प्रकार की अन्य पुस्तकें प्रकाशित कर यह लोगों को लाभान्वित करेंगें।

दिनांक ७ दिसम्बर, १९६७.

दशरथ शर्मा

दो शब्द

इतिहास का सही मूल्यांकन उसके कालानुसार सही तिथिक्रम के बल पर होता है। घटनाओं का परस्पर सम्बन्ध तथा उनकी पारस्परिक प्रभाव डालने की समता का अंदाज ऐतिहासिक घटना क्रम के मूल से ही लगाया जा सकता है। राजवंशों के इतिहास तो लिखे जा चुके हैं पर समाज की सभ्यता का इतिहास अभी लिखना शेष है। इस सांस्कृतिक उत्थान, पतन एवं विस्तार का सांगोपांग प्रणयन, तिथिक्रम पर अवलंबित होता है। राजस्थान के सर्वांगीण सम्पूर्ण इतिहास की पृष्ठभूमि को समझने के लिए राजस्थान का ऐतिहासिक तिथिक्रम, अलग से प्रकाश में नहीं आया है। इस कमी का अनुभव मुझे भी हुआ, जब ऐसे सम्पूर्ण इतिहास के प्रकाशन का विचार मेरे मन में आया। इस दिशा में यह प्रयास हुआ है और आपके समक्ष है।

इस तिथिक्रम का आधार मैंने अधिकांश में अपने स्वर्गीय पिताश्री इतिहासज्ञ जगदीशसिंह गहलोत की यशस्वी कृति 'राजपूताने का इतिहास' को बनाया है। राजस्थान का सम्पूर्ण इतिहास अभी तक कोई नहीं लिख सका है। स्वर्गीय जगदीशसिंहजी ने सम्पूर्ण इतिहास लिखा और उन्होंने अपने जीवन काल में उसका प्रथम खंड प्रकाशित कराया और उनके पश्चात दूसरा और तीसरा खण्ड, मैंने प्रकाशित किया है। इस बृहद् इतिहास का चौथा तथा पांचवा खण्ड भी अगले वर्ष तक मुद्राणधीन हो जावेंगे, ऐसी आशा है। इस प्रकार ग्रन्थ का सहारा लेकर यह प्रस्तुत तिथिक्रम प्रकाशित हो रहा है। यथा स्थान बहुत स्थलों पर मैंने नई शोध पूर्ण मान्यताओं को स्थान दिया है। फिर भी अनेक विवादास्पद तिथियाँ अपनी समस्याओं सहित इस में स्थान पा गई हैं। ऐसा होना अनिवार्य है क्योंकि शोध कई वर्ष लेती है, नूतन सामग्री तथा अकाट्य प्रमाण मिलने पर ही विवाद शान्त हो सकते हैं। इतनी लम्बी प्रतीक्षा न करके जो कुछ बन पड़ा, उसे प्रस्तुत करना समीचीन ज्ञात हुआ।

ऐतिहासिक घटनाओं के सम्वत्, तिथि, दिन, सन् आदि का रुपान्तर करने में, मैंने स्वर्गीय जगदीशसिंह गहलोत कृत ऐतिहासिक तिथि पत्रक, (विक्रम सम्वत् १५०० से २००० तक) का भी प्रयोग किया है। यह तिथि पत्रक प्रकाशित हो चुका है और इसके पूर्व के खण्ड भी प्रकाश्य हैं। इस प्रकार राजस्थान के इतिहास अध्येताओं के लिए कुछ तो मार्ग सुगम हुआ, यह मेरे लिए सन्तोषप्रद प्रतीत होता है। आशा है भावी इतिहासवेत्ता, इस दिशा में अधिक वैज्ञानिक दृष्टि से आगे बढ़ेंगे।

इस प्रकाशन को एक गौरव और भी प्राप्त हो रहा है और वह यह कि यह जोधपुर में "राजस्थान इतिहास परिषद" के प्रथम अधिवेशन पर प्रकट हो रहा है। राजस्थान के इतिहास लेखन के प्रयासों तथा इतिहास के विद्वान लेखकों को, यह अधिवेशन, बहुत फलप्रद हो, ऐसी मंगल कामना है। इस मांगलिक वेला में यह तुच्छ प्रसून विद्वान स्वीकार करेंगे, यह विश्वास है।

विनीत,

सुखवीरसिंह गहलोत।

सूची

राजस्थान का इतिहास

तिथि-क्रम से

ई० पूर्व	घटना
१,२०,०००	बेड़च व गम्भीरी नदी (चित्तौड़ जिला) के किनारे बस्तियां बसी।
७०,०००	लूनी नदी (जोधपुर जिला) के किनारे बस्तियां बसी।
३१०२	(फरवरी १७) कलियुग संवत आरम्भ हुआ।
२६००	हड़प्पा (पंजाब) में बस्तियां बसी।
२०००	सप्त सरस्वती क्षेत्र (गंगानगर जिला) में आर्यों का आगमन हुआ।
२०००	काली बंगा (गंगानगर जिला) में बस्तियां बसी।
१८००	आहाड़ (उदयपुर शहर) में बस्तियां बसी।
१५००	वेद सम्पूर्ण हुए। खुडी (जोधपुर जिला) में मिले ताम्बे के भंडार का समय।
१४००	गिलुण्ड (जिला उदयपुर) में बस्तियां बसी।
१३७५	सप्त सरस्वती क्षेत्र,में भारत लोग आये।
११००	नोह (जिला भरतपुर) में बस्तियां बसी।
१०००	महाभारत युद्ध हुआ। सरस्वती नदी का सूखना आरम्भ हुआ।
८१७	पारस नाथ का समय।
६६०	उपनिषदों की रचना हुई।
५९९	महावीर वर्धमान का जन्म हुआ।
६२३	बुद्ध का जन्म हुआ।
५२८	महावीर की मृत्यु हुई।
५४३	बुद्ध की मृत्यु हुई।
४००	रामायण व महाभारत की रचना हुई।
३२६	(अप्रेल) सिकन्दर ने सिन्धु नदी को पार किया।
३२६	(मई) सिकन्दर व पुरु के बीच युद्ध हुआ।
३२६	(जुलाई) सिकन्दर ने व्यास नदी को लौटते वक्त पार किया।
३२५	सिकन्दर की मृत्यु हुई।
३२४	चन्द्रगुप्त मौर्य राजगद्दी पर बैठा।
२६६	अशोक राजगद्दी पर बैठा।
२५०	बैराट (जयपुर राज्य) में अशोक के शिलालेख उत्कीर्ण किये गये।

ई० पूर्व	घटना
१८०	अन्तिम मौर्य राजा वृहद्रथ के पुष्यमित्र द्वारा मारे जाने पर मौर्य साम्राज्य समाप्त हुआ ।
१८७	यवन राजा दिमित ने चित्तौड पर आक्रमण किया ।
१५०	मालव राजस्थान व मालवा में आये ।
१००	मनु का धर्म शास्त्र तैयार हुआ ।
७५	शकों ने पूर्वी राजस्थान पर कब्जा किया ।
५८	मालवगण की स्थापना होकर विक्रम संवत प्रारम्भ हुआ ।
३३	पश्चिमी भारत में शक राज्य की स्थापना हुई ।
४	ईसा का जन्म हुआ ।

ई० सन्	
७८	(मार्च १५) शक संवत प्रारम्भ हुआ ।
११६	शक नहपान ने दक्षिण पूर्वी राजस्थान पर कब्जा किया ।
१५०	प्रथम रूद्रदामन ने पश्चिमी राजस्थान को जीता ।
२२५	मालवों का नेता पोरप सोम शकों से स्वतन्त्र हुआ ।
३२०	(२६ फरवरी) प्रथम चन्द्रगुप्त ने गुप्त संवत प्रारम्भ किया ।
४५५	स्कन्दगुप्त राजगद्दी पर वैठा ।
४६०	भारत पर हूणों का आक्रमण होने पर स्कन्दगुप्त ने उन्हें हराया ।
४६८	स्कन्दगुप्त की मृत्यु हुई ।
५३३	यशोधर्मन ने हूण मिहिरकुल को हराया ।
५६६	मेवाड़ में गुहिल द्वारा राज्य स्थापित किया गया ।
५७०	(अगस्त २०) हजरत मुहम्मद का जन्म हुआ ।
६०६	हर्ष राजगद्दी पर वैठा ।
६२२	(मार्च) हिजरी सन् प्रारम्भ हुआ । चान्द्र-सौर वर्ष के अनुसार यह सन् जुलाई १५ की शाम से आरम्भ हुआ ।
६२८	भीनमाल के ब्रह्मदत्त ने "ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त" की रचना की ।
६३०	चीनी यात्री व्हेनसाग भारत आया ।
६३१	सिन्ध के शासक चच ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया ।
६३२	(जुलाई ७) मुहम्मद पैगम्बर की मृत्यु हुई ।
६४३	सिन्ध पर पहला अरब आक्रमण हुआ ।
६४४	व्हेनसांग चीन जाने के लिये भारत से रवाना हुआ ।
६४७	हर्ष की मृत्यु हुई ।
६६०	भारत पर अरबों का एक बड़ा आक्रमण हुआ ।
७१२	मुहम्मद बिन कासिम के सेनापतित्व में अरबों ने देवल (सिन्ध) पर हमला कर सिन्ध पर कब्जा किया । इस हमले में राजा दाहीर की रानी अरबों से

ई० सन्	घटना
७१२	लड़ती मारी गई। मुहम्मद बिन कासिम ने हिन्दुओं पर प्रथम बार जजिया कर लगाया।
७१३	मुसलमानों ने मुल्तान को जीता।
७२६	अजयपाल का पड़पोता दुर्लभराय अजमेर में मारा गया।
७२५	चित्तौड़ पर अरबों का पहला हमला हुआ। कन्नौज में प्रतिहारों का राज्य स्थापित हुआ।
७२८	बापा रावल ने मौर्य राजा से चित्तौड़ का राज्य जीता।
७३१	तन्नौट (जैसलमेर राज्य) का किला बना।
७३१	अरबों का राजस्थान से सीधा संघर्ष प्रारम्भ हुआ।
७३६	गुर्जर राज्य की समाप्ति पर चौहान राजस्थान में आये।
७५५	बापा रावल ने चित्तौड़ राजा कुकुटेश्वर से जीता।
७६०	भट्टारक रत्नकीर्ती के शिष्य हेमराज की अजमेर में मृत्यु हुई।
८०५	मारवाड़ नरेश नागभट्ट ने प्रथम गुवक को "वीर" की पदवी दी।
८१६	कन्नौज लूटा गया। प्रतिहारों की अवन्नति प्रारम्भ हुई।
९४३	सांभर के लक्ष्मण चौहान ने नाडोल पर हमला कर स्वतन्त्र राज्य स्थापित किया।
९४४	सपादलक्ष के चौहानों ने रणथम्भौर के दुर्ग का निर्माण कराया।
९४७	(जनवरी ६) रामसिंह ने टोंकरा (वर्तमान टोंक) बसाया
९५०	सांभर के चौहान सिंहराज ने तंवरों को हराया।
९५६	(दिसम्बर ६) प्रथम सिंहराज ने शेखावाटी में हर्षनाथ पहाड़ (सीकर) पर शिव मन्दिर बनवाया।
९६१	सोलंकी मूलराज ने अपने माम। सामन्तसिंह को मार कर चावडों के राज्य पर अधिकार किया।
९७२	मालवा के परमार मुंज (वाकपतिराज) ने चित्तौड़ पर कब्जा किया।
९७३	चौहान प्रतिहारों से स्वतन्त्र हुए। मालवा के परमार मुंज ने आहाड़ को नष्ट किया। गुजरात के राष्ट्रकूटों का साम्राज्य समाप्त हुआ।
९८९	शुबुक्तगीन ने हिन्दू राजाओं के संघ को लमगांव के निकट हराया।
९९१	जयपाल ने मुसलमानों के आक्रमण के विरुद्ध अजमेर, कलिंजर और कन्नौज के राजाओं का संघ बनाया।
९९३	दिल्ली नाम से नया नगर बसना प्रारम्भ हुआ।
९९७	विग्रहराज चौहान (अजमेर नरेश) ने शुबुक्तगीन की सेना का सामना करने के लिये अपनी सेना भेजी
१०००	महमूद गजनवी का भारत पर पहला आक्रमण हुआ।
१००१	(नवम्बर २८) जयपाल महमूद गजनवी से पेशावर में हारा।

ई० सन्	घटना
१००१	(दिसम्बर ३१) कछवाहा वज्रदामन मारा गया।
१००८	आनन्दपाल ने महमूद के खिलाफ उज्जैन, ग्वालियर, कालिंजर, कन्नौज, दिल्ली और अजमेर के राजाओं को संगठित किया।
१०१५	(२१ नवम्बर) महापुरूष तेजा जाट की मृत्यु हुई।
१०१८	महमूद गजनवी ने मथुरा लूटा।
१०२०	अजमेर नरेश विग्रहराज ने मालवा पर आक्रमण किया लेकिन धार के राजा भोज द्वारा हरा दिया गया।
१०२४	महमूद गजनवी ने अजमेर पर आक्रमण किया और गढ़ वीठली का घेरा डाला लेकिन घायल हो जाने पर घेरा उठा कर अनहिलवाड़ा चला गया। (अक्टुवर) महमूद गजनवी सोमनाथ पर आक्रमण करने के लिए रवाना हुआ।
१०२५	(जनवरी) महमूद गजनवी अनहिलवाड़ा नाडोल होता हुआ पहुंचा। बाद में महमूद ने सोमनाथ पर हमला किया।
१०२६	महमूद गजनवी ने वाराह (जैसलमेर राज्य) पर हमला किया।
१०२७	महमूद गजनवी ने मुल्तान के जाटों को हराया।
१०३१	विमलशाह ने आदिनाथ जैन मन्दिर की स्थापना आबू पहाड़ पर कराई।
१०४०	यादव विजयपाल ने मथुरा से अपनी राजधानी हटा कर विजय मन्दिर गढ़ में स्थापित की। यह गढ़ अब बयाना के गढ़ के नाम से प्रसिद्ध है।
१०४२	वसन्तगढ़ (सिरोही राज्य) को परमार नरेश पूरणपाल ने अपनी राजधानी बनायी।
१०४३	दिल्ली नरेश की अध्यक्षता में भारत के कुछ नरेशों ने पंजाब से मुसलमानों को हटाने के लिये एक संघ बनाया। इस संघ में चौहान अनहिल भी था।
१०४४	बड़गुजर नरेश अजयपाल ने राजोरगढ़ (अलवर राज्य) में नीलकण्ठ महादेव का मन्दिर बनवाया। गुजरात नरेश कर्ण ने तुर्कों द्वारा जीता हुआ अपने राज्य का भाग वापिस लिया।
१०७५	तृतीय दुर्लभराय चौहान ने शहाबुद्दीन को हराया। उसने मालवा के राजा उदयादित्य को गुजरात विजय करने व वहां के राजा कर्ण को मारने में सहायता दी थी।
१०८०	मेवातपति महेश ने अजमेर के वीसलदेव चौहान की अधीनता स्वीकार की (जनवरी २१) अर्थुणा (बांसवाड़ा राज्य) का मंडलेश्वर महादेव का मन्दिर बना।
१११३	चौहान अजयराज ने अजमेर बसाया।
१११६	मुहम्मद बाहलीम ने नागोर का किला बनवाया।
११२४	अनहिलवाड़ा के सिद्धराज जयसिंह ने अरणोराज पर हमला किया लेकिन

ई० सन्	घटना
११२४	हार गया तथा अपनी पुत्री का विवाह अरणोराज से कर दिया। उसके उत्तराधिकारी कुमारपाल ने ११५० में अरणोराज को हराया।
११३५	अरणोराज ने मुसलमान आक्रमणकारियों को हरा कर युद्ध स्थल पर आना सागर (अजमेर) झील का निर्माण करवाया।
११३६	गुजरात के जयसिंह सिद्धराज ने मालवा के यशोवर्मन को हरा कर चितौड़ पर कब्जा किया।
११३७	दुल्हराय ने बड़गुजरों को हराकर दौसा पर कब्ज़ा किया।
११४३	चौहानों ने नाडोल व जालोर पर कब्जा किया। मीणा शासक आमेर व खोगांव (जयपुर) से हटे।
	नाडोल के चौहान रायपाल ने प्रतिहारों को हरा कर मण्डोर पर कब्जा किया।
११४४	पोलविजय खीची ने खटकड़ जीता।
११५०	अरणोराज अपने पुत्र जगदेव द्वारा मारा गया।
	द्वितीय भास्कराचार्य ने ज्योतिष सिद्धान्त के एक महत्वपूर्ण ग्रंथ "सिद्धान्त शिरोमणि" की रचना की।
	गुजरात के कुमारपाल ने पाली को जीता। कुमारपाल ने सज्जन को चितौड़ का प्रशासक बनाया। कुमारपाल ने आबू के विक्रमसिंह को हरा कर उसके भतीजे यशोधवल को राजगद्दी पर बैठाया। काकिल ने सुसावत मीणों को हरा कर आमेर के किले की नींव रखी।
११५१	अजमेर के चतुर्थ विग्रहराज ने चित्तौड़ पर कब्जा कर मेवाड़ का कुछ हिस्सा अपने राज्य में मिलाया।
११५२	विसलदेव (चतुर्थ विग्रहराज) ने अपने पितृहन्ता भाई जगदेव को हराकर अजमेर की राजगद्दी प्राप्त की।
११५३	विसलदेव दिल्ली को जीतकर भारत का प्रथम चौहान सम्राट बना।
११५४	जैन आचार्य जिनदत्त सूरी का अजमेर में स्वर्गवास हुआ।
	(अप्रैल १७) चौहान सोमेश्वर के सामन्त कैमास ने नागौर दुर्ग के निर्माण में काफी परिवर्तन किये।
११५५	(जुलाई १२) राव जैसल ने जैसलमेर बसाया।
११५७	(अक्टुबर ५) सन्यासियों ने गुजरों से पुष्कर ले लिया व अपने प्रतिनिधियों को मन्दिरों में नियुक्त किया।
११५८	यादव तवनपाल ने बयाना से १५ मील दूर तवनगढ़ बनवाया।
११६१	जालोर के सोनगरा कीर्तिपाल ने परमारों से किराडू जीता।
११६३	विग्रहराज का पुत्र अमर गांगेय अजमेर का राजा बना लेकिन जगदेव के पुत्र पृथ्वीभट्ट द्वारा उतार दिया गया।

ई० सन्	घटना
११३४	(अप्रैल ६) विग्रहराज चौहान ने शिवलिंग स्तम्भ शिलालेख दिल्ली में खुदवाया।
११६६	इल्तुमश ने मण्डोर पर पुनः कब्जा किया। (मई) तृतीय पृथ्वीराज चौहान का जन्म हुआ।
११७०	तोमराणा (अलवर राज्य) के मदनपाल ने मंडावर बसाया।
११७५	गुहिलवंशी सामंतसिह ने वागड़ पर अधिकार किया। सामन्तसिंह ने गुजरात के चालुक्य अजयपाल को हराया। मुहम्मद गौरी का मुल्तान पर हमला हुआ।
११७८	आबू के परमार नरेश धरणीवराह धारावर्ष ने मुहम्मद गौरी को हराया। मुहम्मदगौरी ने नाडोल व किराड़ू लूटा। आबू नरेश यशोधवल के पुत्र धारावर्ष ने मुहम्मदगौरी के अनहिलवाडा पर आक्रमण के वक्त गुजरात के शासकों को सहायता दी। मुहम्मद गौरी कायन्द्रा (सिरोही राज्य) में नाडोल के कीर्तिपाल चौहान से लड़ता घायल हुआ।
११८०	नाडोल के कीर्तिपाल सोनगरा (चौहान) ने मेवाड़ के गुहिलवंशी सामन्तसिंह को हराया।
११८२	कीर्तिपाल सोनगरा (चौहान) ने जालोर पर कब्जा किया। पृथ्वीराज चौहान दिग्विजय के लिये निकला। उसने भडानकों से मेवात जीता।
११८७	तृतीय पृथ्वीराज ने गुजरात पर आक्रमण किया तथा आबू के परमार शासक धारावर्ष को हराया।
११९०	जयनक ने अजमेर में "पृथ्वीराज विजय" नामक प्रसिद्ध काव्य रचा।
११९१	पृथ्वीराज ने थानेश्वर के निकट तरावडी के मैदान में मुहम्मद गौरी को हराया। वामणवार (सिरोही राज्य) के प्रसिद्ध शिव मन्दिर का निर्माण हुआ।
११९२	तरावड़ी का दूसरा युद्ध हुआ जिसमें पृथ्वीराज मुहम्मदगौरी से हारा और मार डाला गया। कुतुबुद्दीन ऐबक ने अजमेर और मेरठ के विद्रोह को दबाया। वीसलदेव के सरस्वती मन्दिर को तोड़ा गया। शहाबुद्दीन गौरी ने अजमेर आकर पृथ्वीराज के पुत्र गोविन्दराज को गद्दी पर बैठाया लेकिन गौरी के लौट जाने पर पृथ्वीराज का छोटा भाई हरिराज गोविन्दराज को हटा कर, अपने को अजमेर का स्वतंत्र शासक घोषित कर, राजगद्दी पर बैठ गया।
११९३	हरिराज ने दिल्ली पर आक्रमण किया।
११९४	कन्नौज का जयचन्द मुहम्मदगौरी से इटावा के पास चंदावर में हारा व मारा गया। (अप्रैल १५) पृथ्वीराज के भाई हरीराज ने आग मे जल कर आत्महत्या की।

ई० सन् **घटना**

११९४ कुतुबुद्दीन ऐबक ने अजमेर पर पुनः कब्जा कर उस स्वतंत्र राज्य को समाप्त किया और वहां मुसलमान शासक नियुक्त किया।

११९५ मुहम्मदगौरी ने बयाना के जादो भट्टी राजपूतों को हराया। मुयुनुद्दीन चिश्ती अजमेर आया।

११९६ कुतुबुद्दीन अजमेर से अनहिलवाड़ा पर आक्रमण करने के लिए रवाना हुआ लेकिन मेरों और राजपूतों द्वारा रोक दिया गया।
राजपूतों व मेरों ने अजमेर से मुसलमानों को निकाल बाहर करने का प्रयत्न किया। कुतुबुद्दीन ने तारागढ़ में शरण ली। कुतुबुद्दीन ऐबक ने नाडोल पर अधिकार किया।

११९७ (जनवरी) कुतुबुद्दीन ऐबक ने मुहम्मद गौरी की सेना से तवनगढ़ व बयाना पर कब्जा किया।

१२०२ (अप्रैल १२) राजपूतों ने अजमेर के दुर्ग पर हमला किया और मुसलमानी सेना को मय सेनापति सैयद मीरन हुसेन खग सवार को तलवार के घाट उतार दिया।

१२०६ (मार्च १५) मुहम्मदगौरी खोखरों द्वारा मारा गया।
दौसा में दुल्हराय ने अपना राज्य स्थापित किया।

१२१० बादशाह समसुद्दीन अलतमश ने जालोर विजय किया।

१२१३ अजमेर का सरस्वती मन्दिर तोड़ा जा कर मसजिद में परिवर्तित किया गया जो अब अढ़ाई दिन का झोंपड़ा कहलाता है।

१२१७ लाहोर के सूबेदार नासिरुद्दीन महमूद ने मण्डोर पर अधिकार किया लेकिन शीघ्र ही मण्डोर उसके हाथ से निकल गया।

१२२६ दिल्ली के सुल्तान समसुद्दीन अलतमश ने रणथम्भौर पर कब्जा किया। इसके बाद के चार वर्षों में उसने बयाना, अजमेर, नागौर व जालोर पर भी कब्जा किया।

१२२७ समसुद्दीन अलतमश ने मण्डोर को पुनः विजय किया। बाद में उसने स्वालक तथा सांभर को भी जीता।

१२३१ तेजपाल ने नेमीनाथ (लूणवसही) मन्दिर का निर्माण आबू पहाड़ पर कराया।

१२३३ जालोर के उदयसिंह का कब्जा नाडोल पर हुआ।

१२३४ मेवाड़ के राणा जैत्रसिंह ने समसुद्दीन अलतमश को हराया।

१२३६ वागभट्ट ने रणथम्भौर पर पुनः अधिकार किया।
(मार्च १६) अजमेर में ख्वाजा मुयुनुद्दीन चिश्ती की मृत्यु हुई।

१२३७ मेवाड़ के राणा समरसिंह ने तुर्कों को हराया।

११४० परिहारों ने मुसलमानों को हरा कर मण्डोर पर कब्जा किया।

ई० सन्	घटना
१२४२	सुल्तान अलाउद्दीन मसूदशाह ने मल्लिक इज्जुद्दीन बलबन किशलुखां को नागोर (जिसमें अजमेर व मण्डोर सम्मिल्ति थे) का सूवेदार बनाया।
१२४३	राव सीहा राजस्थान में आ कर पाली में रहा।
१२४५	दिल्ली के सुल्तान का भाई जलालुद्दीन अपनी जान बचाने के लिये चित्तौड़ की पहाड़ियों में आ छिपा।
१२४६	बारड़देव परमार ने बारडमेर (वर्तमान बाडमेर) बसाया।
१२४८	अलगूखां (गयासुद्दीन बलबन) ने रणथम्भौर, बूंदी व चित्तौर पर हमला किया व यहां से काफी धन माल ले गया।
१२५१	नागौर के सूबेदार इजुद्दीन ने विद्रोह किया जो बादशाही सेना द्वारा दबाया गया।
१२५२	नसिरूद्दीन महमूद ने बयाना विजय किया।
१२५६	मेवातियों ने हासी को लूटा।
१२५७	मेवातियों ने विद्रोह किया।
१२५८	अलगूखां (गयासुद्दीन बलबन) ने रणथम्भौर व मेवात पर आक्रमण किया।
१२६१	रावण देहरा को अलगूखां (गयासुद्दीन बलबन) ने लूट कर बर्बाद किया और हजारों मेवातियों को कत्ल करा दिया।
१२६२	लखमसी के वंशज गांगा और माणक ने गिरासिया कौम के बांसिया जोगराज को मार कर उसकी राजधानी खारा को मय ७०० गांवों के छीन लिया।
१२६५	अलगूखां (गयासुद्दीन बलबन) ने मेवात को रोन्दा।
१२६६	पाबू राठौड़ और जिन्दराव खीची के बीच युद्ध में पाबू मारा गया।
१२६६	केसरीसिंह परमार ने अपनी राजधानी गबरगढ़ के बदले तरसंगगढ़ स्थापित की।
१२७२	(अक्टूबर ६) रावसिहा राठौड़ का स्वर्गवास हुआ।
१२८०	टूंक (टोंक) पुनः बसा।
१२८३	विजलराय ने मण्डार (सिरोही राज्य) के मुसलमानों को हरा कर कब्जा किया।
१२८७	आबू के परमार शासक प्रताप ने मेवाड़ से युद्ध कर चन्द्रावती पर अधिकार किया। रणथम्भौर के हम्मीर चौहान ने नागोर सूबे को अपने अधीन किया।
१२९०	जलालुद्दीन फिरोजशाह खिलजी ने रणथम्भौर के हमीर पर हमला किया लेकिन विफल हो कर लौटा।
१२९१	फिरोजखां ने सांचोर पर आक्रमण किया।
	(अप्रल १५) राव आस्थान पाली में जलालुद्दीन फिरोजशाह की सेना से लड़ता मारा गया।
१२९२	जलालुद्दीन फिरोजशाह ने रणथम्भौर पर फिर हमला किया।

ई० सन्	घटना
१२९४	चन्द्रावती के एक राजकुमार प्रहलाद परमार ने प्रहलाद पाटन बसाया जिसको बाद में पालदेव परमार ने पालनपुर नाम दिया ।
	जलालुद्दीन फिरोजशाह खिलजी ने मण्डोर जीता ।
१२९९	हम्मीर ने मुहम्मद शाह को उसके अन्तिम दिनों में शरण दी ।
	अलाउद्दीन खिलजी का चित्तौड़ और बागड पर पहला आक्रमण हुआ ।
१३००	अलाउद्दीन खिलजी ने अपने सेनापति उलूगखां व नुसरतखां को रणथम्भौर के हम्मीर के विरुद्ध भेजकर घेरा डाला ।
१३०१	(जुलाई १०) रणथम्भौर पर अलाउद्दीन खिलजी का कब्जा होने पर हमीर ने आत्महत्या करली ।
	(जुलाई १२) रणथम्भौर राजपूतों द्वारा खाली कर दिया गया ।
१३०३	(जनवरी २८) अलाउद्दीन खिलजी चित्तौड़ विजय करने के लिये दिल्ली से रवाना हुआ ।
	(अगस्त २६) अलाउद्दीन ने चित्तौड़ विजय किया और चित्तौड़ का शासक अपने पुत्र खिजूखां को नियुक्त किया ।
१३०४	अलाउद्दीन खिलजी की सेना ने जैसलमेर पर हमला किया ।
१३०५	अलाउद्दीन खिलजी की सेना ने जालोर का घेरा डाला ।
१३०८	(जुलाई २) अलाउद्दीन खिलजी सिवाणा के शासक सातलदेव को दण्डित करने के लिये दिल्ली से रवाना हुआ ।
	(नवम्बर ६) सिवाणा का सातलदेव मारा गया ।
१३०९	धुअड तिरसिंगरी (जिला बाडमेर) के युद्ध पड़िहारों से लड़ता हुआ मारा गया ।
१३१०	अलाउद्दीन की सेना ने सांचोर के महावीर के मन्दिर को नष्ट किया ।
१३१४	(मई) कानड़देव चौहान मारा गया । अलाउद्दीन ने जालोर पर कब्जा किया । चित्तौड़ का शासन जालोर के मालदेव सोनगरा को सौंपा गया ।
१३१५	देवड़ा लुंभा ने आबू और चन्द्रावती परमारों से ली ।
१३१६	जैसलमेर का शाका हुआ ।
१३२०	सिरोही के महाराव लुंभा ने आबू के अचलेश्वर मन्दिर का जीर्णोद्धार कराया । इस मन्दिर में लगे शिलालेख से चौहानों को चन्द्रवंशी बतलाया गया है ।
१३२१	मालदेव सोनगरा की मृत्यु के पश्चात हम्मीर सम्पूर्ण मेवाड़ का स्वामी बना ।
१३२२	जलालुद्दीन की सेना सिन्ध विजय कर गुजरात होती हुई मेवाड़ पहुंची ।
१३२८	मंगोलों का भारत पर हमला हुआ ।
१३३६	हम्मीर ने चित्तौड़ पर अधिकार किया ।
१३३८	चन्द्रावती का कानड़देव राजगद्दी पर बैठा ।

ई० सन्	घटना
१३४१	बम्बावदा के राव देवा ने जैता मीणा से बूंदी जीता।
१३४४	छाड़ा राठौड़ अमरकोट के हमले में मारा गया।
१३४६	बूंदी के राव समरसी के पुत्र जैतसिंह ने अकेलगढ़ के भीलों को मार कर कोटा पर अधिकार किया। तब से कोटा बूंदी के युवराज की जागीर में रहने लगा।
१३४८	महाराजा अर्जुनदेव यादव ने करौली (कल्याणपुर) बसाया। अर्जुनदेव ने मुसलमानों को हरा कर बयाना दुर्ग पर कब्जा किया।
१३५४	राव नरसिंह ने तारागढ़ (बूंदी) का दुर्ग बनवाया।
१३५७	फिरोजशाह तुगलक ने सिवाणा पर आक्रमण किया। राव टीडा इस आक्रमण में मारा गया।
१३५८	डूंगरसिंह ने डूंगरपुर बसाया।
१३६०	अलवर में मेव जबरदस्ती मुसलमान बनाये गये।
१३६४	महाराणा क्षेत्रसिंह ने अजमेर पर कब्जा किया।
१३६६	पाबू राठौड़ का स्वर्गवास हुआ।
१३७४	त्रिभुवनसिंह मल्लीनाथ से हारा। मल्लीनाथ महेवे (मालानी) और खेड का स्वामी हुआ।
१३७८	मण्डोर के मुसलमान शासक ने मल्लीनाथ के राज्य पर अधिकार किया लेकिन हार कर लौटा।
१३८३	(अक्टूबर १७) मण्डोर का विरम राठौड़ जोहियों से लड़ता मारा गया। दिल्ली के बादशाह फिरोजशाह ने करमचन्द को मुसलमान बना कर उसका नाम क्यामखां रखा।
१३८३	महाराणा लाखा ने धवल को मेवाड में जागीर दी। राजपूतों व चारणों की देवी करणी चारणी का जन्म हुआ।
१३८८	बूंदी का राव नरपाल टोडा के सोलंकी रेपाल से लड़ता बूंदी में मारा गया।
१३८९	मेवाड़ के राणा क्षेत्रसिंह ने मालवा के दिलावरखां को हराया।
१३९२	जालोर के बीसलदेव चौहान की विधवा रानी पोपां बाई को हटा कर उसके दीवान बिहारी पठान खुर्रमखां ने जालोर पर कब्जा किया। मेवात के सरदार बहादुर ने दिल्ली दरबार में उच्चपद प्राप्त किया।
१३९३	अलवर में तरंग सुल्तान की कब्र का निर्माण हुआ। नयनचन्द सूरी ने "हमीर महाकाव्य" नामक चौहानों का इतिहास लिखा। मेवात में विद्रोह हुआ।
१३९४	वीरम के पुत्र चून्डा की सहायता से ईन्दा परिहार ने मण्डोर पर कब्जा किया। (नवम्बर) २६) परिहारों ने मण्डोर पर पुनः कब्जा कर उसे चुण्डा राठौड़ को दे दिया। राव चूण्डा ने चामुण्डा का मन्दिर बनाया। बिहारी पठान

ई० सन्	घटना
१३६४	खुर्रमखां को गुजरात के सुल्तान से जालोर राज्य की सनद मिली। मुहम्मद तुगलक ने बयाना पर आक्रमण किया।
१३६५	बिहारी पठान खुर्रमखां लोसणा गांव (सिरोही राज्य) में मारा गया।
१३६६	गुजरात के सूबेदार जफरखां ने मण्डोर का घेरा डाला।
१३६७	जैतमल के पुत्र खेमकरण ने गुढा व नगर जीते।
१३६८	मेवाड़ के कुंवर चूण्डा ने अपना राजगद्दी का अधिकार छोड़ा।
	तैमूर का भारत पर हमला हुआ।
	तैमूर ने मेवात के वहादुर नाहर के पास अपना दूत भेजा।
	(सितम्बर २४) तैमूर ने सिन्ध नदी पार की।
	(नवम्बर ६) भटनेर के भाटी राजपूत शासक राय दूलचन्द ने तैमूर के सामने आत्मसमर्पण किया। भटनेर नगर जला कर भस्म कर दिया गया और वहां की जनता को मार डाला गया।
	(नवम्बर १३) तैमूर ने भटनेर छोड़ा।
	(दिसम्बर १७) तैमूर ने दिल्ली पर कब्जा किया।
१३६६	(मार्च ६) तैमूर ने खिज्रखां को मुल्तान, देपालपुरा तथा लाहोर का सूबेदार बनाया। खिज्रखां को मुल्तान की जागीर देकर तैमूर भारत से चला गया। मालानी के रावल मल्लीनाथ का स्वर्गवास हुआ। मल्लीनाथ एक सिद्ध पुरुष माना जाता है।
	चून्डा ने खोखर को हराकर नागोर पर अधिकार किया।
१४०४	(जनवरी ३) संत रामदेव का जन्म हुआ।
१४०५	चून्डा राठौड ने अजमेर पर कब्जा किया।
	शिवभाण देवडा ने शिवपुरी (पुराना सिरोही) शहर बसाया।
१४०८	गुजरात के सुल्तान मुज्जफरशाह के भाई शम्सखां ने नागोर पर चढाई कर उस पर कब्जा किया।
१४११	राव चूंडा राठौड ने अपने भाई जैसिंह से फलोदी छिना।
	क्यामखां का हिसार पर कब्जा हुआ।
१४१३	मेवाड़ का महाराणा मोकल मारा गया।
	(दिसम्बर) खिज्रखां सेना लेकर मेवात में गया।
	जैन धर्म सुधारक लोकाशाह का अटवाडा (सिरोही) में जन्म हुआ।
	खिज्रखा ने नागोर पर आक्रमण किया।
१४१६	राजद्रोह के अपराध में खिज्रखां ने क्यामखां को मरवा दिया।
१४२०	झाला राघवदेव को वर्तमान झालावाड़ का काफी हिस्सा मांडू के शासक से जागीर में मिला।
१४२१	राव चून्डा ने नागोर के फिरोजखां पर चढ़ाई कर पुनः कब्जा किया। खिज्रखां

ई० सन्	घटना
१४२१	ने सेना लेकर मेवात पर हमला किया और बहादुर नाहर के किले को नष्ट किया ।
१४२३	(१५ मार्च) राव चून्डा का नागोर के भाटियों, सांखलों व मुसलमानों के साथ युद्ध हुआ । इस युद्ध में राव चून्डा वीरगति को प्राप्त हुआ ।
	(सितम्बर २७) मालवा के होशंगशाह ने १५ दिन के घेरे के बाद नागोर के गढ़ पर कब्जा किया । अचलदास खिंची मारा गया ।
१४२४	सैयद मुबारक नें बयाना के शासक अमीरखां ओहदी को हराया । मुबारक द्वारा मेवात का दमन किया गया ।
१४२५	(अप्रेल २०) देवडा सहसमल ने चन्द्रावती के स्थान पर वर्तमान सिरोही नगर को बसाकर राजधानी बनाया । रणमल ने नाडोल पर अधिकार किया । मेवात का विद्रोह दबाया गया ।
१४२६	रणमल राठौड की सेना ने जैतारण व सोजत पर अधिकार किया । मालवा के सुल्तान हुसैन शाह ने गागरोण (कोटा राज्य) का किला जीता ।
१४२७	रणमल ने राणा मोकल की सहायता से राव सत्ता को हारकर मन्डोर पर कब्जा किया ।
१४२८	(मार्च २४) बयाना के निकट युद्ध हुआ ।
	(मई) सैयद मुबारक शाह ने बयाना पुनः जीता और कर वसूल किया महाराणा मोकल ने नागोर के शासक फीरोज खां को हराया ।
	अचलदास खीची ने गागरोण गढ़ पर पुनः अधिकार किया ।
१४३०	रणमल राठौड ने जैसलमेर पर चढाई की लेकिन सन्धि हो जाने पर महारावल लक्ष्मण की पुत्री से विवाह कर लौट आया ।
१४३२	गुजरात के सुल्तान प्रथम अहमदशाह ने बून्दी, कोटा व डूंगरपुर नरेशों को हराकर उनसे कर वसूल किया ।
१४३३	आमेर के राव शेखा (शेखावतों का पूर्वज) का जन्म हुआ ।
	राणा मोकल अहमदाबाद के सुल्तान के विरुद्ध लड़ने गया लेकिन मारा गया ।
	महाराणा कुम्भा राजगद्दी पर बैठा ।
	(मार्च) गुजरात के सुल्तान प्रथम अहमदशाह ने डूंगरपुर पर चढ़ाई की लेकिन हारकर लौट गया ।
१४३६	महाराणा कुम्भा ने गुजरात के शासक कुतुबुद्दीन से सुरक्षा प्राप्त करने के लिए आबू के पहाड़ों में आश्रय लिया ।
१४३७	प्रतापगढ़ के खेमकरण ने सादड़ी पर अधिकार किया ।
१४३८	(नवम्बर २) मण्डोर का रणमल राठोड़ मेवाड़ में मारा गया ।
	राव जोधा का मेवाड़ की सेना के साथ चितरोडी का युद्ध हुआ ।
१४३९	मेवाड़ की सेना ने मंडोर व सादड़ी पर अधिकार किया ।

ई० सन्	घटना
१४४०	राणकपुर के त्रैलोक्य दीपक मन्दिर की प्रतिष्ठा हुई।
१४४२	(नवम्बर ३०) मालवा का महमूद महाराणा कुम्भा पर आक्रमण करने रवाना हुआ।
१४४३	(अप्रेल २६) महाराणा कुम्भा व मालवा के सुल्तान महमूद शाह खिलजी के बीच कुम्भलगढ़ के निकट युद्ध हुआ। महमूद विफल होकर लौटा।
१४४४	मालवा के महमूद ने गागरोण पर कब्जा किया।
१४४५	आमेर का राजा नरवाडा, मोजावाद आदि का स्वामी बना।
१४४६	(अक्टुबर) महाराणा कुम्भा व मालवा के महमूद शाह खिलजी के बीच मांडलगढ़ के युद्ध में महमूद हारा।
	गुजरात के महमूदशाह ने डूंगरपुर पर चढ़ाई की।
१४४८	महाराणा कुम्भा ने कुंभश्याम मन्दिर चित्तौड़गढ़ में बनवाया।
१४४९	(फरवरी २) महाराणा कुम्भा का कीर्ति स्तम्भ बनकर पूर्ण हुआ।
	महाराणा कुम्भा ने आबू के यात्रियों पर लगनेवाले कर को हटाया।
१४५०	अफगानिस्तान के पठान इस्माइल खां दलेरजंग का नरहड़ पर कब्जा हुआ।
	क्यामखांके पुत्र मुहम्मदखां ने राजपूतों के राज्य को जीतकर नया राज्य स्थापित किया जिसकी राजधानी झूंझनू बनाई गई।
१४५१	(अगस्त २०) विसनोई मत के प्रवर्तक जांभा का पीपासर (बीकानेर) में जन्म हुआ। फतेहपुर (जिला सीकर) के गढ़ की नींव रखी गई तथा नया शहर बसाया गया।
	महाराणा कुम्भा ने बसन्तगढ़ का पुनः निर्माण कराया।
१४५३	(जनवरी २५) महाराणा कुम्भा ने अचलगढ़ दुर्ग (आबू पहाड़) की प्रतिष्ठा करवाई।
१४५४	जोधा राठौड़ सोजत पर कब्जा कर वहां दो वर्ष तक रहा।
	कुम्भा ने मालवा व गुजरात की सेना को हराया।
	मालवा का महमूद खिलजी नागोर से विफल होकर लौटा।
	राव जोधा का चौकड़ी के सिपाहियों के साथ युद्ध किया।
	राव जोधा ने मण्डोर व सोजत पर कब्जा किया।
	गुजरात के महमूद शाह ने बूंदी पर हमला किया।
१४५५	मालवा के सुल्तान महमूद ने अजमेर पर कब्जा किया।
१४५६	महाराणा कुम्भा ने गुजरात की सेना को हराकर नागोर जीता।
	गुजरात के सुल्तान कुतुबुद्दीन ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया लेकिन हारकर लौटा।
	मालवा के महमूद ने माण्डलगढ़ पर आक्रमण किया लेकिन महाराणा कुम्भा ने उसका कब्जा नहीं होने दिया।
१४५७	सिरोही के राव लाखा ने गुजरात के शासक कुतुबुद्दीन की सहायता से मेवाड़ियों

ई० सन्	घटना
१४५७	को आबू पहाड़ व बसन्तगढ़ से हटा कर कब्जा किया। गुजरात व मालवा के सुल्तानों ने मेवाड़ पर दो ओर से आक्रमण किया लेकिन हार कर लौटे। (अक्तुबर २०) महमूद खिलजी ने मांडलगढ़ पर कब्जा किया। (दिसम्बर ३) महमूद खिलजी मांडलगढ़ से मांडू लौटा।
१४५८	(मार्च १३) कुंभलगढ़ की प्रतिष्ठा की गई। (अगस्त २०) संत रामदेव ने जीवित समाधी ली। राव जोधा का मण्डोर में राज्याभिषेक हुआ। महाराणा कुंभा की नागोर पर दूसरी चढ़ाई हुई। महाराणा कुंभा ने गुजरात के सुल्तान कुतुबुद्दान को हराया।
१४५९	(मई १२) राव जोधा ने जोधपुर नगर बसाया। मालवा के महमूद खिलजी के आक्रमण में बूंदी का बरीसाल मारा गया। मालवा के महमूद ने डूंगरपुर पर चढ़ाई की तथा वहां से दो लाख रुपये व २१ घोड़े लेकर लौटा।
१४६०	मंडोर की चामुंडा की मूर्ति जोधपुर के किले में स्थापित की गई।
१४६१	राव जोधा के पुत्र वरसिंह तथा दूदा ने मेड़ता तथा उसके आस पास के ३६० गांवों पर कब्जा किया।
१४६४	अजमेर में ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की कब्र पर पहला पक्का गम्बद बनवाया गया।
१४६५	(दिसम्बर ३०) राव जोधा का पुत्र बीका अपने चाचा कांधल के साथ जांगलू प्रदेश की ओर गया और उसको जीत कर नया राज्य स्थापित किया।
१४६६	छापर द्रोणपुर के राजा वछराज ने मारवाड़ में लूटमार की अतः जोधा ने सेना भेजकर छापर पर कब्जा कर लिया लेकिन (छापर) शीघ्र वापस लौटा दिया गया।
१४६७	राव जोधा ने नागोर फदनखां से जीता। फदनखां भूंभनू चला गया।
१४६८	महाराणा कुम्भा का उसके बड़े लड़के ऊदा ने राज्य लोभ में खून कर दिया।
१४६९	(अक्टूबर २०) सिक्ख गुरु नानक का जन्म हुआ।
१४७०	आमेर नरेश चन्द्रसेन ने नरु को आमेर से निकाल दिया।
१४७१	आमेर नरेश चन्द्रसेन की शेखा से सन्धि हुई।
१४७२	राव बीका ने कोडमदेसर में राजधानी स्थापित की व अपने आपको राजा घोषित किया।
१४७३	महाराणा कुम्भा के पुत्र ऊदा, जिसने अपने पिता की हत्या की थी, को मेवाड़ की जनता ने विद्रोह कर उसके छोटे भाई रायमल को राजगद्दी पर बैठा दिया। ऊदा सोजत में जा रहा।

ई० सन्	घटना
१४७४	जोधपुर राज्य का छापर द्रोणपुर प्रदेश (वर्तमान लाडनूं) व सुजानगढ़ के आसपास के क्षेत्र पर कब्जा हुआ।
१४७५	मांडू सुलतान गयासुद्दीन ने चित्तौड़ पर चढ़ाई की लेकिन हारकर लौट गया। सुलतान गयासुद्दीन ने डूंगरपुर पर आक्रमण किया।
१४७७	सिरोही के चौमुखा जैन मन्दिर का निर्माण हुआ।
१४७८	वल्लभ सम्प्रदाय के संस्थापक श्री वल्लभाचार्य तेलंग का जन्म हुआ। राव बीका का भाटियों से युद्ध हुआ।
१४८२	(अप्रेल १२) महाराणा संग्रामसिंह (सांगा) का जन्म हुआ।
१४८३	राजस्थान में घोर अकाल पड़ा।
१४८४	मालवा के सुल्तान महमूद की सेना ने प्रतापगढ़ के खेमकरण को हराया।
१४८५	राव बीका ने बीकानेर नगर में राती घाटी पर किला बनवाया।
१४८६	राव जोधा का आमेर के चन्द्रसेन के साथ सांभर में युद्ध हुआ जिसमें चन्द्रसेन हारा।
१४८८	(अप्रेल १३) राव बीका ने बीकानेर नगर बसाया। सोजत पर मुसलमानों का आक्रमण हुआ। राव बीका ने राव कांधल के बैर में सारंगखां पर चढ़ाई की। राव बीका ने बिदा को छापर द्रोणपुर दिलवाया। सिरोही के राव जगमाल ने ईरान व खुरासान के व्यापारियों को आबू पहाड़ के निकट लूटा।
१४८९	जैन धर्म सुधारक लोकाशाह की मृत्यु हुई।
१४९१	सिकन्दर लोदी ने बयाना पर कब्जा कर उसे खान खाना करमूला के सुपुर्द किया।
१४९२	(मार्च १) जोधपुर नरेश सातल का कोसाने के पास अजमेर के मल्लूखां के साथ युद्ध हुआ। यवन सेनापति घडूला मारा गया। तबसे राजस्थान में घड़ूले के मेले का प्रचलन हुआ। अलवर दुर्ग को निकुम्भ राजपूतों से अलावलखां खानजादा ने जीता। राव बीका राजवंश की पूजनीक चीजें जोधपुर से बीकानेर ले गया।
१४९७	आमेर के पृथ्वीराज के पौत्र तथा जगमाल के पुत्र खंगार ने जोबनेर का अलग ठिकाना स्थापित किया।
१५०१	(मार्च २६) सिकन्दर लोदी ने धोलपुर दुर्ग पर कब्जा किया।
१५०३	मालवा के नासिरशाह ने मेवाड़ पर चढ़ाई की। वह महाराणा के सामंत राजा भवानीदास की पुत्री को लेकर लौट गया। यह लड़की बाद में "चित्तौड़ी बेगम" कहलाई।
१५०४	(जुलाई १२) मीरांबाई (प्रसिद्ध कवियत्री) का जन्म हुआ। मेवाड़ का सग्रामसिह निर्वासित किया गया जो १५०८ तक निर्वासन में रहा।

ई० सन्	घटना
१५०४	सिरोही के जगमाल ने जालोर के पठान मजीद खां को कैद किया लेकिन उसे बाद म छोड़ दिया गया ।
१५०५	मेवाड़ के राणा रायमल के पुत्र पृथ्वीराज ने अजमेर पर कब्जा किया । जाट सरदार सुरजनसिंह को गोहद राजपूतों से मिला ।
१५०६	भटनेर (हनुमानगढ़) को सिकन्दर लोदी ने जीता । मालवा के सुलतान नासिर शाह के पास प्रतापगढ़ का सुरजमल सहायतार्थ गया । काठियावाड़ के हलवद राज्य का स्वामी, झाला राजसिंह का पुत्र, मेवाड़ में आकर रहा । महाराणा ने इसे मेवाड़ में जागीर दी ।
१५०८	(मई ४) महाराणा संग्रामसिंह मेवाड़ की राजगद्दी पर बैठा । प्रतापगढ़ का सूरजमल कान्ठल में आबाद हुआ ।
१५०९	(सितम्बर २३) बीकानेर के राव लूणकरण ने ददरेवा पर चढ़ाई कर उसे जीता तथा अपना थाना स्थापित किया । सिक्ख गुरु नानक पुष्कर में आया ।
१५१०	मेवाड़ की सेना ने सोजत पर कब्जा किया ।
१५११	(दिसम्बर ५) मारवाड़ के राव मालदेव का जन्म हुआ ।
१५१२	(अप्रेल २२) बीकानेर के राव लूणकरण ने फतहपुर पर चढाई कर १२० गांवों पर कब्जा किया ।
१५१३	नागोर के मुहम्मदखां ने बीकानेर पर चढाई की लेकिन हारकर लौटा । श्रीमुथरा मे यादव राजपूतों का राज्य हुआ ।
१५१४	महाराणा सांगा का गुजरात के सुल्तान मजफ्फर शाह से युद्ध हुआ । डूंगरपुर का उदयसिंह राव रायमल राठौड़ की सहायतार्थ ईडर गया । बाद में वह निजामुलमुल्क को सजा देने के लिए अहमदनगर भी गया ।
१५१५	महाराणा सांगा ने मांडू के सुल्तान से रणथम्भौर लिया । सिरोही से घनश्याम की मूर्ति जोधपुर लाई गई जो १७६० में एक मन्दिर बनवाया जा कर वहां स्थापित की गई ।
१५१६	महाराणा सांगा के ज्येष्ठ कुंवर भोजराज का मीरांबाई से विवाह हुआ । सिकन्दर लोदी ने रणथम्भौर पर आक्रमण किया लेकिन वह असफल हो कर लौटा ।
१५१७	दिल्ली के सुल्तान इब्राहीम लोदी व मेवाड़ के महाराणा सांगा के बीच खातोली गांव के पास युद्ध हुआ जिसमें महाराणा सांगा की विजय हुई ।
१५१८	वागड़ के महारावल उदयसिंह ने अपना आधा राज्य (बांसवाड़ा) अपने दूसरे पुत्र जगमाल को दिया । दिल्ली के सुल्तान इब्राहीम ने अपनी सेना चित्तौड़ पर आक्रमण करने भेजी अतः धोलपुर के पास युद्ध हुआ जिसमें महाराणा सांगा की विजय हुई ।

ई० सन्	घटना
१५१९	मालवा के महमूद शाह ने गागरोण के फौजदार भीमकरण को हराया तथा उसको मार दिया। महाराणा सांगा ने बाद में महमूद को गागरोण के निकट हरा कर क़ैद कर लिया।
१५२०	गुजरात के सुलतान मुजफ्फरशाह की सेना ने वागड़ में प्रवेश कर डूंगरपुर को लूटा। बादमें महाराणा सांगा ने मुजफ्फर शाह को हरा कर अहमदाबाद पर कब्जा किया।
१५२१	जैतसिंह ने भटनेर पर क़ब्जा किया।
	मालवा के महमूद ने गागरोण का घेरा डाला लेकिन राणा सांगा के आ जाने पर हटा लिया।
१५२३	बीकानेर के राव लूणकरण ने रेवाड़ी पर आक्रमण किया लेकिन वहां युद्ध में मारा गया।
१५२४	पंजाब के हाकिम दौलतखां लोदी ने बाबर को हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने के लिए बुलाया।
१५२५	(नवम्बर १७) बाबर काबुल से १२,००० सैनिक लेकर भारत पर आक्रमण करने के लिये रवाना हुआ।
	राव गांगा ने गजनीखां को सहायता देने के लिए जालोर के सिकन्दरखां पर चढ़ाई की लेकिन फौज खर्च लेकर लौट गया।
	डूंगरपुर के महारावल उदयसिंह ने गुजरात के शाहजादे बहादुरशाह को शरण दी।
१५२६	(अप्रेल २०) बाबर ने इब्राहीम लोदी को पानीपत के युद्ध में हरा कर दिल्ली पर कब्जा किया। हसनखां मेवाती को अपने राज्य से हाथ धोना पड़ा।
	(मई १०) बाबर ने आगरा में प्रवेश किया।
	बीकानेर के लूणकरण ने नारनोल पर चढ़ाई की।
	सुल्तान बहादुरशाह ने कांगड़ पर आक्रमण किया लेकिन महारावल ने उससे मिल कर मित्रता करली।
१५२७	(जनवरी ४) आमेर का पृथ्वीराज मौत के घाट उतार दिया गया।
	(जनवरी ३०) बिसनोई धर्म के प्रवर्तक जांभा की तालवा गांव (बीकानेर) में मृत्यु हुई।
	(जनवरी) बाबर को भारत से बाहर निकालने के लिये राणा सांगा बयाना की ओर रवाना हुआ।
	(फरवरी २२) राणा सांगा नें बाबर के एक सेनाध्यक्ष अब्दुल अजीज को हराया।
	(मार्च १३) महाराणा सांगा भुसावर से खानुवा पहुंचा।

ई० सन्	घटना
१५२७	(मार्च १६) महाराणा सांगा व बाबर के बीच खानुवा के मैदान में युद्ध हुआ। जिसमें महाराणा सांगा की हार हुई। डूंगरपुर केरावल उदयसिंह रावत रतनसिंह चुण्डावत, हसनखां मेवाती आदि वीरगति को प्राप्त हुये। भारत में पहली बार इस युद्ध में बारूद का प्रयोग हुआ।
	(अक्टुबर ४) बीकानेर के राव जैतसी ने अपनी सेना द्रोणपुर पर भेज कर उस पर कब्जा किया।
	(अप्रेल ३०) बाबर अलवर दुर्ग में आकर रहा।
	डूंगरपुर के महारावल उदयसिंह के पुत्रों जगमाल और पृथ्वीराज के बीच राजगद्दी के लिये विरोध बढ़ा।
१५२८	(जनवरी २६) बाबर ने महाराणा सांगा के साथी मेदनीराय पर चढ़ाई कर चन्देरी पर कब्जा किया।
	(मई २०) महाराणा सांगा की मृत्यु माण्डलगढ़ में जहर खाने से हुई।
	(सितम्बर) महाराणा सांगा के पुत्र विक्रमादित्य ने बाबर को रणथम्भौर का दुर्ग सौंपा।
	(नवम्बर ३) बीकानेर का राव जैतसिंह जोधपुर के राव गाँगा की सहायता के लिये गया।
	गुजरात के बहादुर ने ईडर व बागड पर आक्रमण किया।
१५२९	मंडोर के राव गांगा का चाचा शेखा नागौर के शासक खानजादा दौलत खां की सहायता से जोधपुर पर चढ़ आया लेकिन शेखा मारा गया और दौलत खां नागोर लौट गया।
१५३०	गुजरात के सुल्तान बहादुरशाह ने बागड में प्रवेश कर जगमाल को आधा राज्य दिलाया। तब से बागड के दो राज्य डूंगरपुर व बांसवाडा स्थापित हुए।
१५३१	(जनवरी) मेवाड़ के रतनसिंह ने मालवा पर आक्रमण किया।
	(अप्रेल) रत्नसिंह और सूरजमल हाडा शिकार खेलते आपस में लड़ मरे।
	गजनी खां सिकन्दर खां को गद्दी से उतार कर स्वयं जालोर का स्वामी बन गया।
	राव गांगा का वीरम के साथ सोजत में युद्ध हुआ जिसमें गांगा जीता।
	डूंगरपुर के महारावल पृथ्वीराज की गुजरात के सुलतान बहादुर शाह के साथ संधि हुई।
१५३२	(मई २१) मालदेव मारवाड़ की राजगद्दी पर बैठा उसका राज्याभिषेक सोजत दुर्ग में हवा।
	मेवाड़ के पुराने साथी तथा मेवाड़ राजवंश के सम्बन्धी रायसीन के तंवर सिलहदी के सहायतार्थ विक्रमजीत सेना लेकर गया।
	गुजरात के बहादुरशाह ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया।

ई० सन्	घटना
१५३३	(जनवरी ३१) गुजरात के बहादुरशाह ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया। (फरवरी ३) मुहम्मदखां असीरी तथा खुदावन्दखां को भी वह अपने साथ लेकर पहुंचा। हुमायूं मेवाड़ की रानी कर्मवती की सहायता के लिये आया लेकिन ग्वालियर में ही (फरवरी व मार्च) ठहरकर आगरा लौट गया। (मार्च २४) मेवाड़ की राजमाता कर्मवती ने बहादुरशाह के साथ काफी धन-माल देकर सन्धि की। (मार्च) बहादुरशाह ने अपने सेनापतियो को भेजकर रणथम्भौर तथा अजमेर पर कब्जा किया। तातारखां ने बयाना के आसपास विद्रोह किया।
१५३४	(अक्टुबर २६) कामरान से बीकानेर के राव जैतसिंह का युद्ध हुआ। कामरान मैदान छोड़कर लाहोर की ओर भाग गया।
१५३५	(जनवरी) बहादुरशाह ने चित्तौड का घेरा डाला। (मार्च ८) चित्तौड़गढ़ के किले में १३००० स्त्रियों ने जौहर किया तथा वाद में किला बहादुरशाह के हाथों में आ गया। (अप्रेल २५) बहादुरशाह हुमायूं से मन्दसौर के युद्ध में हारा। इसके वाद ही चित्तौड भी बहादुरशाह के हाथों से निकल गया। मेड़ता के वीरमदेव ने गुजरात के बहादुरशाह के हाकिम शमशेरउलमल्क को हराकर अजमेर पर अधिकार किया। राव मालदेव ने अजमेर पर कब्जा किया।
१५३६	(जनवरी १०) मालदेव ने नागोर के खानजादे पर चढ़ाई कर नागौर पर कब्जा किया। (अप्रेल २४) मालदेव का विवाह जैसलमेर के रावल की पुत्री उमा देवी (जो "रूठी रानी" के नाम से प्रसिद्ध है) से हुआ। (जन ८) हुमायूं अपने भाई असकरी से निपटने चित्तौड़ पहुंचा। राणा रायमल के कुंवर पृथ्वीराज का अनौरस पुत्र बणवीर विक्रमाजीत को मारकर मेवाड़ की राजगद्दी पर बैठा। मेवाड़ के भावी राणा बालक उदयसिंह को लेकर पन्ना-धाय देवलिया (प्रतापगढ़ राज्य) व डूंगरपुर गई।
१५३७	राणा उदयसिंह को कुंभलगढ़ में मेवाड़ का शासक घोषित किया गया।
१५३८	(जून २०) राव मालदेव ने राठौड़ डूंगरसी को निकाल कर सिवाणा पर कब्जा किया।
१५३९	(सितम्बर २२) सिक्खों के गुरु नानक की मृत्यु हुई।
१५४०	(मई ९) महाराना प्रतापसिंह का जन्म हुआ। मालदेव ने मेडता के किले का परकोटा बनवाया।

ई० सन्	घटना
१५४०	मालदेव ने जालोर के किले को जीता । बनवीर को मावली के युद्ध में हराकर उदयसिंह ने चित्तौड़ पर कब्जा किया । उदयसिंह अपने पैतृक राज्य (मेवाड़) का स्वामी बना ।
१५४१	(जून) राव मालदेव ने मुगल बादशाह हूमायूं को मारवाड़ आने का निमंत्रण दिया । (जलाई ३०) राव चन्द्रसेन राठोड का जन्म हुआ ।
१५४२	(फरवरी २६) राव मालदेव ने बीकानेर पर चढ़ाई कर आधे राज्य पर कब्जा किया । राव जैतसिंह युद्ध मं मारा गया । उसका पुत्र राव कल्याणमल वाद में सिरसा में राजगद्दी पर बैठा । मालदेव की सेना ने झूंझनू पर भी अधिकार किया । (मई ७) हुमायूं मारवाड की ओर रवाना हुआ । (जून) शेरशाह मारवाड़ में आया । (अगस्त) हुमायूं फलौदी पहुंचा । (अगस्त १३) हुमायूं जैसलमेर पहुंचा । (अगस्त २३) हुमायूं अमरकोट पहुंचा । (अक्टुवर १५) अकबर का अमर कोट में जन्म हुआ ।
१५४४	(जनवरी ५) राव मालदेव और शेरशाह की सेनाओं के बीच समेल का युद्ध हुआ । राब मालदेव की सेना इस युद्ध में हारी । शेरशाह ने रणथम्भौर के किले पर कब्जा कर उसे अपने पुत्र आदिल खां को जागीर में दे दिया । शेरशाह ने मारवाड़, चित्तौड़, नागौर तथा अजमेर पर कब्जा किया । शेरशाह ने राव कल्याणमल को बीकानेर पर अधिकार कराया ।
१५४५	(जून) मालदेव ने जोधपुर पर पुनः अधिकार किया ।
१५४६	मालवा के सुल्तान की सहायता पाकर पठान केशरखां और डोकरखां ने कोटा पर अधिकार किया । राव मालदेव की सेना ने मांगेसर (पाली) के शाही थाने पर आक्रमण किया ।
१५४७	राव मालदेव ने अपने ज्येष्ठ पुत्र राम को निष्कासित कर दिया । मालदेव ने राव सूजा के पौत्र हमीर से फलोदी छीन ली । अलवर में फतहगंज की गुम्वज का निर्माण हुआ ।
१५४८	(मई) आसकरण ने आमेर के रतनसिंह को जहर देकर मार डाला । (दिसम्बर ६) वादशाह अकवर ने जगन्नाथ कछवाहा को मेवाड़ पर आक्रमण करने भेजा ।
१५४९	राजस्थान के प्रसिद्ध कवि पृथ्वीराज का जन्म हुआ । वीकानेर नरेश कल्याणमल के भाई ठाकुरसिंह ने भटनेर पर अधिकार किया ।

ई० सन्	घटना
१५५०	(दिसम्बर ६) आमेर के मिर्जा राजा मानसिंह का जन्म हुआ।
	कन्धार का अमीर अली खां राज्य च्युत होकर जैसलमेर पहुंचा। मालदेव ने कान्हा से पोकरण छीना।
	हकीम हाजी खां ने अलवर में सलीम सागर तालाव बनवाया।
१५५१	राव मालदेव ने बाडमेर व कोटडा पर हमला किया। राव मालदेव ने पोकरण का गढ़ बनवाया।
१५५२	पठान मलिक खां ने सांचोर पर कब्जा किया।
	राव मालदेव की सेना ने जालोर दुर्ग पर कब्जा किया।
	राव मालदेव ने जैसलमेर पर आक्रमण कर वहां के शासक को अपने आधीन किया।
१५५३	पठान मलिक खां ने राठौड़ों को हराकर जालोर पर कब्जा किया। मालदेव ने मेडता पर कब्जा किया।
	प्रतापगढ़ के विक्रमसिंह ने मेवाड का परित्याग किया।
१५५४	(अप्रेल ४) मालदेव ने मेडता पर चढ़ाई की लेकिन बीकानेर के कल्याणमल की सहायता से वीरम के पुत्र जयमल ने मारवाड की सेना को मेडता में हराकर वापस कब्जा कर लिया।
	पृथ्वीराज के पुत्र जगमाल ने जोबनेर पर कब्जा किया।
	राव सुर्जन हाडा ने पठान केसर खां व डोकर खां से कोटा वापस जीता।
	राणा उदयसिंह ने राव सुर्जन हाडा को बून्दी पर कब्जा करने में सहायता दी।
१५५६	जोधपुर नरेश मालदेव की सेना अजमेर के सूबेदार हाजी खां की सेना से हारी। इस युद्ध में मेवाड़ के राणा उदयसिंह व बीकानेर नरेश कल्याणमल ने हाजी खां की सहायता की थी।
	दिल्ली के सूर सुल्तानों के अधिकार से बयाना हटा।
	(सितम्बर १०) अकबर का फसली संवत प्रारम्भ हुआ।
	(अक्टुबर) मेवात के हेमू ने दिल्ली से बयाना तक के प्रदेश पर कब्जा कर लिया।
	(नवम्बर) बादशाह अकबर ने मुल्ला पीर मुहम्मद खां शेरवानी को मेवात का प्रदेश (वर्तमान अलवर व भरतपुर के जिले) जागीर में दिया।
	(नवम्बर) पानीपत के द्वितीय युद्ध में हेमू अकबर से हारा।
	(दिसम्बर) आमेर का राजा भारमल अकबर से मजनू खां के प्रयत्नों से दिल्ली में मिला।
१५५७	(जनवरी २४) हरमाड़ा के युद्ध में मालदेव और हाजी खां की सम्मिलित सेना ने राणा उदयसिंह व उसके सहायक मेडता के जयमल को पराजित किया। डूंगरपुर के महारावल आसकरण ने महाराणा का साथ दिया।

ई० सन्	घटना
१५५७	(जनवरी २७) मालदेव के सेनापति देवीदास ने मेडता पर कब्जा किया।
	(मार्च) मुगल सेना ने जैतारण को जीता।
	(अप्रेल) अकबर की आज्ञा से मुहम्मद कासिम खां निशापुरी ने हाजी खां से अजमेर व नागोर छीना।
	जेन खां कूका ने बूंदी पर आक्रमण किया।
१५५८	(मार्च १२) जैतारण पर मुगल सेना ने कब्जा कर लिया।
	(मार्च) मुगलों ने अजमेर नगर व दुर्ग पर अधिकार किया। सूजा ने आमेर पर हमला किया।
	(अक्टुबर) बादशाह अकबर ने रणथम्भौर लेने का प्रयत्न किया लेकिन असफल रहा।
	मसूदा (अजमेर जिला) की जागीर स्थापित हुई।
१५५६	(फरवरी ७) महाराणा उदयसिंह ने उदय सागर तालाब (उदयपुर नगर से ८ मील पूर्व) बनवाया तथा उदयपुर नगर बसाया।
	रणथम्भौर का किला वहां के किलेदार जुझारखां ने बूंदी के सूर्जन हाडा को कुछ धन लेकर सौंप दिया।
१५६०	(जून १२) वल्लभ सम्प्रदाय के बल्लभाचार्य की मृत्यु हुई।
	(जून १३) मुगल सेना ने नागोर पर कब्जा किया।
	बादशाह अकबर ने मालवा के बाजबहादुर को परास्त किया।
	मुगल सेनापति अधम खां ने गागरोण पर कब्जा किया।
	बैरम खां बीकानेर आकर रहा।
	विक्रमसिंह ने देवलिया (प्रतापगढ़ राज्य) को राजधानी बनाया।
१५६१	मिर्जा शरफुद्दीन ने सूजा को राजगद्दी दिलाने के लिये आमेर पर चढ़ाई की। अकबर से मेडता का जयमल सांभर में मिला और राव मालदेव के विरुद्ध सहायता मांगी। बादशाह अकबर ने अजमेर पहुंच कर राव मालदेव के विरुद्ध अपने सेनापति मिर्जा शरफुद्दीन को मेड़ता भेजा जिसने मेडता पर कब्जा कर लिया।
	(मई) अकबर ने गागरोण पर कब्जा किया।
१५६२	(जनवरी १४) बादशाह अकबर अजमेर के लिए रवाना हुआ।
	(जनवरी २०) भारमल ने अकबर की अधीनता उसके सांगानेर के पडाव पर स्वीकार की।
	(फरवरी ६) अकबर ने आमेर के भारमल की जयेष्ठ पुत्री बाई हरखां के साथ विवाह किया। बादशाह की यह बेगम "मरियमऊ जमीनी" के नाम से प्रसिद्ध हुई। बादशाह जहांगीर इसी के पेट से उत्पन्न हुआ।

ई० सन्	घटना
१५६२	(फरवरी १०) आमेर के भगवानदास व मानसिंह की मुगल दरबार में नियुक्ति की गई। तबसे ही मुगल शासकीय सेवा में हिन्दुओं को उच्च पद दिये जाने लगे।
	(फरवरी १३) भगवानदास व मानसिंह आगरा पहुंचे।
	(मार्च) अकबर के सूबेदार शरफुद्दीन ने मेडता पर अधिकार किया।
	(नवम्बर ५) सरफुद्दीन मुगल दरबार से भाग कर अजमेर पहुंचा।
	(नवम्बर ७) मारवाड के राव मालदेव की मृत्यु हुई।
	(दिसम्बर) मारवाड के राव चन्द्रसेन व उसके भाई उदयसिंह के बीच लोहावटी में युद्ध हुआ।
	(दिसम्बर ३१) राव चन्द्रसेन मारवाड की राजगद्दी पर बैठा।
	प्रतापगढ़ का विक्रमसिंह बांसवाडा के प्रतापसिंह की सहायतार्थ महारावल आसकर्ण (डूंगरपुर) से लड़ा।
	अकबर ने अजमेर टकसाल से पहला तांबे का सिक्का जारी किया।
	उदयपुर के महाराणा उदयसिंह ने सिरोही के मानसिंह देवड़ा मेडता के जयमल राठौड तथा मालवा के बाज बहादुर को शरण दी।
१५६३	सरफुद्दीन अजमेर में मुगल सेना आने पर नागौर चला गया। मुगल सेना ने अजमेर पर कब्जा किया।
	राम राठौड मुगल सेना को जोधपुर पर चढ़ा लाया तब चन्द्रसेन ने राम को सोजत तथा शाही सेनाध्यक्ष को ५ लाख रुपये फौज खर्च देना स्वीकार किया।
	महाराणा उदयसिंह ने भोमट (उदयपुर का दक्षिण पश्चिमी भाग) के राठौडों के विद्रोह को दबाया।
	बादशाह अकबर ने हिन्दुओं पर लगने वाला यात्रा कर समाप्त कर दिया।
१५६४	(मार्च १५) अकबर ने हिन्दुओं पर से जजिया कर हटाया।
	(मई २२) मुगल सेना ने जोधपुर पर अधिकार कर लिया। चन्द्रसेन भाद्राजुण चला गया। अकबर ने अजमेर व नागौर का फोजदार हुसेन कुली बेग को सरफुद्दीन के स्थान पर नियुक्त किया।
	मालवे का सुल्तान बाज बहादुर डूंगरपुर जाकर रहा।
	अचल दास ने अचरोल बसाया।
१५६५	(जनवरी १७) मुगल सेना ने जोधपुर पर पुनः चढ़ाई की।
	(मार्च १३) मुगल सेना ने तीसरी बार जोधपुर पर चढ़ाई की।
	(दिसंबर २) मुगल सेना ने चंद्रसेन को हराया। चंद्रसेन भाद्रजुण चला गया। मुगलों का जोधपुर पर अधिकार हो जाने पर वहां मुगल बादशाह के सिक्के का प्रचलन हुआ।
१५६६	बादशाह अकबर ने आगरा के किले की नींव करौली नरेश गोपालदास से रखवाई।

ई० सन्	घटना
१५६७	(अगस्त ३०) अकबर चित्तौड़ पर आक्रमण करने के लिए रवाना हुआ।
	(सितम्बर) महाराणा उदयसिंह का द्वितीय पुत्र शक्तिसिंह बादशाह अकबर के धोलपुर पड़ाव से भागकर चित्तौड़ चला गया।
	(सितम्बर) अकबर ने शिवपुर और कोटा के किलों पर अधिकार किया।
	(अक्टुबर २३) अकबर ने चित्तौड़ पहुंच कर किले पर धावा किया।
	(दिसम्बर १७) चित्तौड़ के किले का एक बुर्ज उड़ाया गया। जिससे दोनों ओर के काफी सैनिक मारे गये।
	अकबर ने अजमेर की दरगाह खाजा को १८ गांव दान में दिये तथा सांभर के नमक की बिक्री का एक प्रतिशत देना तय किया।
१५६८	(फरवरी २३) वदनोर का जयमल राठौड अकबर की चलाई गोली से चित्तौड़ गढ़ में मरा।
	(फरवरी २४) चित्तौड़गढ़ का तीसरा साका और अकबर ने चित्तौड गढ़ में कतले आम कर कब्जा किया।
	(फरवरी २५) चित्तौड़ के किले का द्वार खोला जाकर मुगल सेना से संघर्ष किया गया। अकवर ने चित्तौड़गढ पर कब्जा किया। गढ के रहने वाले लगभग ३०००० निहत्थे व्यक्ति कत्ल किये गये। व चित्तौड़ एक अलग सरकार बनाया गया।
	(फरवरी २८) अकबर चित्तौड़ से आगरा के लिये रवाना हुआ।
	(मार्च २) मीराँ बाई का मृत्यु हुई।
	(मार्च ६) अकवर पैदल चित्तौड़ से मांडल और आगे सवारी से अजमेर पहुंचा।
	(अप्रैल १३) अकवर आगरा पहुंचा।
	(दिसम्वर २१) अकवर रणथम्भोर के लिए रवाना हुआ।
१५६९	(फरवरी १०) अकबर रणथम्भोर पहुचा।
	(मार्च २२) सुर्जन हाडा ने बादशाह अकवर की अधीनता स्वीकार की।
	अकवर रणथम्भोर से अजमेर आया।
१५७०	(जनवरी २०) अकबर आगरा से पैदल रवाना हुआ और सोलहवें दिन अजमेर पहुंचा। अजमेर में उसने अकबरी मजलिस दर्गाह में बनवाई।
	(मई २) अकबर अजमेर से आगरा लौटा।
	(सितम्बर १) अकवर आगरा से अजमेर गया।
	(नवम्बर ३) अकवर अजमेर से नागौर के लिये रवाना हुआ। वहां वह ५ नवम्बर को पहुंचा जहां जोधपुर का राव चन्द्रसेन उससे मिला। व उसकी नाम मात्र के लिये अधीनता स्वीकार कर वापस भाद्राजुण लौट गया। बीकानेर के राव कल्याणमल का पुत्र रायसिंह तथा जैसलमेर का रावल हरराय ने अकवर की अधीनता स्वीकार की। रावल हरराय ने अपनी पुत्री

ई० सन्	घटना
	का विवाह अकबर के साथ करने की इच्छा प्रगट की, जो स्वीकार की गई। अत: डोला भेजा गया।
	बीकानेर नरेश कल्याणमल की भतीजी का डोला अकबरके लिए भेजा गया।
१५७१	(फरवरी १४) राव चन्द्रसेन भाद्राजूण छोड़कर सिवाणा की पहाड़ियों में चला गया और भाद्राजूण पर मुगलों का अधिकार हो गया।
	शेख सलीम चिश्ती की मृत्यु हुई।
	बादशाह अकबर ने अजमेर शहर की चार दीवार बनवाई। उसने अपने निवास के लिए एक महल भी बनवाया जो अब तोपखाना कहलाता है।
१५७२	(फरवरी २८) महाराणा प्रतापसिंह गोगुन्दा में राजगद्दी पर बैठा।
	(सितम्बर ९) बादशाह के तीसरे शाहजादे दानियाल का जन्म अजमेर में हुआ जिसके लालन पालन के लिए आमेर के भारमल की रानी नियुक्त की गई।
	(सितम्बर १०) बादशाह अकबर बागोट (उदयपुर राज्य) पहुंचा।
	(अक्टुबर) अकबर ने बीकानेर के राजा रायसिंह को जोधपुर में मुगल अधिकारी बना कर उसे चन्द्रसेन को दबाने के लिए भेजा। जोधपुर में रायसिंह ३ वर्ष तक रहा।
	आमेर का भगवानदास बादशाह अकबर के साथ गुजरात अभियान में गया।
१५७३	(जनवरी) इब्राहीम हुसैन मिर्जा कठौती (जिला नागोर) में मुगल सेना से हारा।
	(अप्रेल) अकबर गुजरात प्रान्त का शासन प्रबन्ध ठीक कर सिरोही और अजमेर होता हुआ फतेहपुर सीकरी लौटा। मुगल सेनानायक आमेर का कछवाहा मानसिंह ईडर की राह से डूंगरपुर पर चढ़ाई कर वहां के रावल को हरा कर उदयपुर पहुंचा।
	(जून) मानसिंह महाराणा प्रताप से मिला। लेकिन महाराणा प्रताप ने शाही दरबार में उपस्थित होने से मना कर दिया।
	(सितम्बर २) अकबर अजमेर, जालौर और सिरोही होता हुआ अहमदाबाद पहुंचा और सरनाल के युद्ध में हुसैन मिर्जा को हराया।
	(अक्टुबर) गोगुन्दा में भगवानदास कछवाहा महाराणा प्रताप से मिला।
	(नवम्बर) भगवानदास उदयपुर के महाराज कुमार अमरसिंह को लेकर फतेहपुर सीकरी पहुंचा।
	(दिसम्बर) गुजरात का सूबेदार टोडरमल महाराणा प्रताप से मिला।
	(दिसम्बर २८) बीकानेर का रायसिंह इब्राहीम हुसैन मिर्जा का पीछा करता हुआ नागोर पहुंचा।
	अकबर ने आगरा से अजमेर के बीच प्रत्येक कोस पर ठहरने के लिए मकान व कुंवे बनाये ताकि वह प्रतिवर्ष वहां धर्मयात्रा को जा सके।

ई० सन्	घटना
१५७४	(जनवरी २७) आमेर के राजा भारमल की मृत्यु हुई। उस वक्त वह पांच हजारी का मनसबदार था जो सबसे ऊंचा मनसब माना जाता था।
	(फरवरी ८) बादशाह अकबर ने अजमेर के लिए प्रस्थान किया तब यह स्थाई आदेश जारी किया कि उसकी यात्रा या चढ़ाई के वक्त रौंदी गई फसल की क्षति का अनिवार्य रूप से मूल्यांकन कर कृषकों की क्षतिपूर्ति मालगुजारी के वितरणों को यथास्थान ठीक करके ही की जानी चाहिए।
	(मार्च) अकबर ने सिवाणा को जीतने के लिये सेना भेजी।
	(जून) आमेर का भगवानदास अकबर के साथ बिहार व बंगाल विजय करने के लिये पटना गया।
	घोड़ों के बादशाही दाग लगाने की प्रथा चालू की गई।
१५७५	अकबर ने जलालखां की अध्यक्षता में चन्द्रसेन को दबाने के लिये सेना भेजी। चन्द्रसेन हार कर पहाड़ों में चला गया। बाद में अचानक हमला कर उसने जलालखां को मार डाला।
	(अक्टुबर) जैसलमेर के रावल हरराज ने पोकरन पर हमला किया।
१५७६	(जनवरी २९) पोकरन पर जैसलमेर के हरराज भाटी का कब्जा हुआ।
	(मार्च) सिवाणा का किला मुगल सेनानायक के कब्जे में आया।
	(मार्च १८) अकबर राणा प्रताप के विरुद्ध समुचित कार्यवाही करने के उद्देश्य से ससैन्य अजमेर पहुंचा।
	(अप्रेल ३) आमेर का मानसिंह मेवाड़ पर चढ़ाई करने के लिये अजमेर से रवाना हुआ।
	(जून १८) महाराणा प्रताप व मुगल सेनापति मानसिंह कछवाहा के बीच हल्दी घाटी में युद्ध हुआ। मानसिंह विजयी हुआ।
	(जून) मानसिंह ने गोगुन्दा पर कब्जा किया।
	(सितम्बर) गोगुन्दा (उदयपुर राज्य) मुगलों से मुक्त हुआ।
	(सितम्बर २९) बादशाह अकबर मुइनुद्दीन चिश्ती के उर्स पर अजमेर आया और यहां से छ: लाख रुपये की राशि मक्का और मदीना के योग्य पुरुषों को बांटने भेजी।
	(अक्टुबर ११) अकबर महाराणा प्रताप को दबाने के लिये अजमेर से गोगुन्दा के लिये रवाना हुआ।
	(नवम्बर) अकबर उदयपुर पहुंचा। अकबर ने बीकानेर के राव रायसिंह की अध्यक्षता में सिरोही के राव सूरतान देवड़ा के विरुद्ध सेना भेजी। अकबर की सेना ने जोधपुर के राव चन्द्रसेन को हरा कर सिवाणा पर कब्जा किया।
१५७७	(मार्च ३०) बूंदी के राव दूदा के विरुद्ध बादशाह अकबर ने जैतखां के नेतृत्व में सेना भेजी।
	(जुलाई) मुगल सेना ने गोगुन्दा पर कब्जा किया।

ई० सन्	घटना
१५७७	(अक्टूबर) महाराणा प्रताप ने मोदी परगने के मुगल सैन्यदल पर आक्रमण कर वहां के खेतों की खड़ी फसल को नष्ट किया।
	(अक्टुबर १५) बादशाह अकबर ने शाहबाजखां को कुम्भलगढ़ लेने भेजा।
	अकबर ने बूंदी का राज्य रावभोज को अपने पिता के जीवनकाल में दे दिया।
	सिरोही के राव सुल्तान, डूंगरपुर के महारावल तथा बांसवाड़ा के महारावल प्रतापसिंह ने अकबर की अधीनता स्वीकार की।
१५७८	(अप्रेल ३) शाहबाज खां ने कुम्भलगढ़ पर कब्जा किया।
	(अप्रेल ४) शाहबाज खां ने उदयपुर पर कब्जा किया।
	(जुलाई १९) चन्द्रसेन ने सोजत पर कब्जा किया।
	(नवम्बर) महाराजकुमार अमरसिंह ने मुगल सेनापति सुल्तान खां को कुम्भलगढ़ के निकट दिवेर के युद्ध में मारकर मुगल तोपखाने पर कब्जा किया।
	(दिसम्बर १५) अकबर ने शाहबाज खां को मेवाड पर आक्रमण करने पंजाब से भेजा।
	राव चन्द्रसेन बांसवाड़ा में जाकर रहा।
	महाराणा प्रताप ने बांसवाड़ा व डूंगरपुर पर सेना भेज
१५७९	(जुलाई १९) चन्दसेन ने सोजत पर कब्जा किया।
	राव चन्द्रसेन ने सरवाड के बादशाही थाने पर अधिकार किया।
	(नवम्बर) शाहबाज खां पुनः मेवाड पर आक्रमण करने पहुंचा।
	कोटा के गैपरनाथ महादेव की प्रतिष्ठा हुई।
	भगवानदास व मानसिंह कछवाहा काबुल में मिर्जा हकीम का विद्रोह दबाने भेजा गया।
	अकबर ने अजमेर की आखिरी यात्रा की।
	अकबर फतेहपुर सीकरी जाते समय अलवर में ठहरा।
१५८०	(जनवरी) मानसिंह कछवाह ने काश्मीर के निर्वासित शासक युसुफ खां क फतेहपुर सीकरी में अकबर से मिलाया।
	(जून १६) अब्दुर्र रहीम खानखाना अजमेर का सूबेदार बनाया गया।
	मेवाड पूर्ण रूप से राणा प्रताप के प्रभाव से मुक्त हो गया।
	मुगल साम्राज्य को सूबों में बांटा गया।
	बादशाह अकबर का जोधपुर पर पूर्ण कब्जा हो गया व उसे अजमेर सूबे क एक सरकार बना दिया गया।
	चन्द्रसिंह ने मुगल सेना की सहायता से सोजत पर कब्जा किया।
१५८१	(जनवरी ११) राव चन्द्रसेन की मृत्यु हुई।
	(जून २३) बादशाह अकबर ने शाहजादा मुराद को मिर्जा राजा मानसिंह व बीकानेर नरेश रायसिंह आदि के साथ अपने भाई हकीम मिर्जा को समझाने भेजा।

ई० सन्	घटना
१५८१	(सितम्बर २२) मानसिंह कावुल का सूबेदार बनाया गया। सिसोदिया जगमाल को सिरोही बादशाह के आदेश से प्राप्त हुई।
१५८२	(मार्च २५) जोधपुर के राव चन्द्रसेन के द्वितीय पुत्र उग्रसेन ने अपने छोटे भाई आसकरण को मार डाला। महाराजा रायसिंह ने बीजा देवड़ा से सिरोही छीन कर आधा भाग राव सुरतान को दे दिया।
१५८३	(जनवरी) आमेर का भगवानदास लाहोर का सूबेदार बनाया गया। (अक्टूबर १७) सिरोही के देवड़ा सुरतान ने सिसोदिया जगमाल पर दताणी गांव में आक्रमण किया। जिसमें सुरतान की विजय हुई। जगमाल मारा गया। राठौड व सिसोदिया हारे। जोधपुर व नागोर का किला बादशाह अकबर ने उदयसिंह राठौड को दिया। जोधपुर राज्य के जागीरदारों को विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया गया। अब तक वे अपने को नरेश की बराबरी का मानते हैं। बादशाह अकबर ने जोधपुर के राव मालदेव की पोत्री तथा आमेर के भगवानदास के चचेरे भाई जयमल कछवाहा की पत्नी को सती होने से रोका।
१५८४	(जनवरी १) जोधपुर नरेश उदयसिंह शाही सेना के साथ गुजरात के मज्जफर खां से लड़ने पट्टन पहुचा। (फरवरी १५) बादशाह अकबर ने हिजरी वर्ष गणना को बन्द कर तारीख इलाही चलाया जिसमें सौर वर्ष गणना थी। (मई) भाद्राजूण के मीणा हरराज ने जोधपुर दुर्ग पर आक्रमण किया तब उदयसिंह ने उसे मृत्यु दण्ड दिया। (अक्टुबर) अकबर का चचेरा भाई बदखशां को शाहरूख मिर्जा राजा मानसिंह से मिला। (दिसम्बर) बादशाह अकबर ने राजा जगन्नाथ कछवाहा को महाराणा प्रताप को बंदी बनाने भेजा। बादशाह ने सोजत परगना उदयसिंह को दिया।
१५८५	(फरवरी १३) आमेर के भगवानदास की पुत्री मानबाई का शाहजादा सलीम के साथ लाहोर में विवाह हुआ। (मार्च) बादशाह अकबर ने भगवानदास को मनसब दी। (सितम्बर) बूंदी का दूदा हाडा मालवा में मरा। जगन्नाथ कछवाहा ने महाराणा प्रताप को बन्दी करने की विफल चेष्टा की। (दिसम्बर) बादशाह ने भगवानदास को सेनाध्यक्ष बना कर काश्मीर भेजा मानसिंह ने अफगानिस्तान पर कब्जा किया तथा अपने पुत्र जगतसिंह को वहां का शासन संभलाया। महाराणा प्रताप ने चावण्ड को अपनी राजधानी बनाया।

ई० सन्	घटना
१५८५	महाराणा प्रताप ने छप्पन के राठौड़ों का दमन किया ।
	शेखावतों ने मेवात क्षेत्र में गड़बड़ मचाई ।
	बूंदी का राव सुर्जन बनारस में मरा ।
१५८६	(फरवरी २२) काश्मीर के शासक युसुफ खां की भगवानदास से संधि हुई ।
	(मार्च २८) भगवानदास ने काश्मीर के शासक युसुफ खां को बादशाह के के सामने पेश किया ।
	(जून २७) जोधपुर के राजा उदयसिंह की पुत्री भानमती (जगतगुसाईन) का शाहजादा सलीम से विवाह हुआ । यह बेगम बाद में जोधाबाई कहलाई । उदयसिंह राठौड़ ने सिंघलवाटी (जालोर परगना) को लूटा । आमेर का भगवानदास पंजाब का सूबेदार तथा बीकानेर का रायसिंह संयुक्त सूबेदार बनाया गया ।
	महाराणा प्रताप ने चित्तौड़गढ़ व मांडलगढ़ को छोड़ कर सारे मेवाड़ पर पुनः कब्जा कर लिया ।
१५८७	(दिसम्बर) आमेर का मानसिंह काबुल से हटाया जा कर बिहार के सूबेदार पद पर नियुक्त किया गया ।
१५८८	(फरवरी २१) मुगल सेना ने नितोड़ा गांव (सिरोही राज्य) को लूटा । जोधपुर का राव उदयसिंह बादशाह द्वारा सिरोही के राव सुरतान का दमन करने के लिये भेजा गया ।
१५८९	(जनवरी २) उदयसिंह राठौड़ सिवाणा पहुंचा व किले पर कब्जा किया ।
	(जनवरी) मानसिंह उड़ीसा पर आक्रमण करने भेजा गया ।
	(फरवरी १७) बीकानेर के रायसिंह ने बीकानेर के वर्तमान किले का शिलान्यास किया ।
	बादशाह अकबर ने दीवान गजनीखां (द्वितीय) को पालनपुर, डीसा व दंतीवा का इलाका दिया ।
	(नवम्बर १५) मिर्जा राजा मानसिंह आमेर की राजगद्दी पर बैठा ।
१५९०	बीकानेर के महाराजा रायसिंह का पुत्र केशवदास अपने पिता का बैर का बदला लेकर मारा गया ।
१५९१	(नवम्बर) आमेर के मानसिंह ने उड़ीसा में अफगानों के विद्रोह को दबाया । बीकानेर का महाराजा रायसिंह खानखाना की सहायतार्थ कन्धार गया ।
१५९२	(जुलाई) बादशाह ने जोधपुर नरेश उदयसिंह के लाहोर को प्रबन्ध के लिये भेजा ।
	(अक्टुबर) जोधपुर नरेश उदयसिंह राठौड़ शाहजादा दानियाल के साथ दक्षिण भेजा गया ।
१५९३	उदयसिंह राठौड़ ने रावल विरमदेव को जसोल से निकाल बाहर किया व उस क्षेत्र पर कब्जा किया ।

ई० सन्	घटना
१५९३	तिलवाड़ा में पशु मेला भरना आरम्भ हुआ ।
	बीकानेर का महाराजा रायसिंह दक्षिण में नियुक्त किया गया । महाराजा रायसिंह और बादशाह अकबर के बीच मनोमालिन्य हुआ । अत: रायसिंह बीकानेर जा बैठा ।
	(जून २४) उदयसिंह राठौड़ राव सुरतान के विरुद्ध सिरोही भेजा गया ।
१५९४	(जनवरी १७) रायसिंह ने बीकानेर के वर्तमान किले का निर्माण पूर्ण कराकर प्रतिष्ठा कराई ।
	अकबर ने अपने १२ सूबों में से ८ में हिन्दू मंत्री नियुक्त किये ।
	बादशाह अकबर ने कृष्णसिंह (किशनगढ़ राज्य के संस्थापक) को कुछ परगने इनाम में दिये ।
१५९५	शेरसिंह गुजरात का नायब सूबेदार नियुक्त किया गया ।
	बूंदी के राव भोज ने अहमदनगर के युद्ध में भाग लिया ।
१५९६	(मार्च २८) कवि सुन्दरदास का दौसा में जन्म हुआ ।
	बीकानेर नरेश रायसिंह द्वारा अपने एक नौकर का बादशाह के आदेश प पेश न करने पर बादशाह उस पर नाराज हो गया ।
१५९७	(जनवरी १४) बादशाह अकबर ने बीकानेर के महाराजा रायसिंह क अपराध क्षमा कर दक्षिण में नियुक्त किया ।
	(जनवरी १९) महाराणा प्रतापसिंह की मृत्यु हुई ।
	महाराणा अमरसिंह चावन्ड गांव में राजसिंहासन पर बैठा ।
	(दिसम्बर २८) जैसलमेर के रावल भीम की सेना मारवाड़ की सीमा में घुस आई लेकिन भगा दी गई ।
	मनोहरदास के पुत्र कर्णदास ने चौमू कस्बे की नींव रखी ।
१५९८	शाहबाजखां मेवाड़ पर आक्रमण करने के लिये अजमेर पहुंचा लेकिन वह १५९९ में अजमेर में ही मर गया ।
१५९९	(सितम्बर १९) बादशाह अकबर ने सलीम के साथ मानसिंह को अजमेर भेजा ताकि मेवाड़ पर आक्रमण कर सके । सलीम थोड़े दिन उदयपुर रह कर अजमेर चला गया ।
	जोधपुर नरेश सूरसिंह दक्षिण में शाहजादा दानियाल के साथ नियुक्त किया गया ।
१६००	(जनवरी १६) भामाशाह की मृत्यु हुई ।
	(जून १४) जोधपुर नरेश सूरसिंह ने नासिक को मुगल साम्राज्य में मिलाया ।
	(जून) अकबर का शाहजादा सलीम मेवाड़ छोड़ कर इलाहाबाद की ओर चला गया ।
	(अक्टूबर १५) भगवानदास कछवाहा के पुत्र माधोसिंह से लेकर बीकानेर के

ई० सन्	घटना
१६००	महाराजा रायसिंह को नागोर जागीर में दिया गया । (दिसम्बर ३१) महारानी एलिजावेथ ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी को भारत में १५ वर्ष के लिये व्यापार करने की अनुमति दी । बीकानेर के कवि पृथ्वीराज राठौड़ की मृत्यु हुई ।
१६०१	जोधपुर का शूरसिंह अहमदनगर विजय करने के लिये अबुलफजल के साथ गया । मुगल सेना ने मेवाड़ के माण्डल, मोही और ऊंटाला को घेर लिया । बीकानेर का महाराजा रायसिंह नासिक में नियुक्त किया गया ।
१६०२	जोधपुर नरेश शूरसिंह राठौड़ का मालिक अम्बर के साथ दक्षिण में युद्ध हुआ ।
१६०३	(अक्टुबर) अकबर ने शाहजादे सलीम के नेतृत्व में सेना मेवाड़ विजय हेतु भेजी पर वह टालमटोल कर गया । अकबर ने बांसवाड़ा राज्य पर हमला किया । नराणा में संत दादू की मृत्यु हुई ।
१६०४	(मई ६) शाहजादा सलीम की बेगम मानी बाई (शाह बेगम, आमेर नरेश बीकानेर के महाराजा रायसिंह को शमसावाद तथा नूरपुर मिला । मिर्जा राजा मानसिंह ने बंगाल की सूबेदारी से स्तीफा दिया । वह जहांगीर के ज्येष्ठ पुत्र खुशरो को राजगद्दी दिलाना चाहता था अतः सूबदारी छोड़ कर दिल्ली चला आया ।
१६०५	(मई) बादशाह ने जोधपुर के शूरसिंह को जेतारण व मेडता दिये । (नवम्बर) बादशाह जहांगीर ने मेवाड के महाराणा के विरूद्ध परवेज को भेजा । साथ में महाराणा उदयसिंह का पुत्र सगर भी था । मिर्जा राजा मानसिंह पुनः बंगाल का सूबेदार नियुक्त किया गया । जोधपुर के शूरसिंह का मान्डवी (गुजरात)के कोलियों के साथ युद्ध हुआ । बादशाह जहांगीर से सावर (अजमेर) की जागीर गोकुलदास को मिली ।
१६०६	जोधपुर नगर के बाहर महाराजा शूरसिंह ने शूरसागर तालाब बनवाया । बीकानेर के महाराजा रायसिंह को पांच हजारी मनसब मिला । बीकानेर का महाराजा रायसिंह बादशाह की आज्ञा लिये बिना बीकानेर चला गया । बीकानेर के महाराजकुमार दलपतसिंह ने विद्रोह किया ।
१६०७	जोधपुर नरेश शूरसिंह ने गुजरात का विद्रोह दबाया । जोधपुर के महाराजकुमार गजसिंह को जालौर दिया गया ।
१६०८	(जुलाई २८) बादशाह ने महाबत खां को मेवाड पर आक्रमण करने भेजा । किशनगढ़ नरेश कृष्णसिंह भी इस सेना के साथ भेजा गया ।

ई० सन्	घटना
१६०८	(अगस्त २४) बीकानेर के महाराजा रायसिंह व कुंवर दलपतसिंह शाही सेवा में गये ।
	(नवम्बर) मारवाड नरेश शूरसिंह के मनसब में वृद्धि की गई और उसे दक्षिण में भेजा गया ।
१६०९	(जून) बादशाह ने अब्दुल्ला खां को मेवाड पर आक्रमण करने भेजा ।
	डूंगरपुर के महारावल कर्मसिंह का बांसवाड़ा के महारावल उग्रसेन से युद्ध हुआ ।
१६१०	जैसलमेर का महारावल कल्याणदास उड़ीसा का सूबेदार नियुक्त किया गया
	महावतखां महाराणा अमरसिंह के विरुद्ध अजमेर से भेजा गया लेकिन हार गया ।
	(मार्च ३१) महावतखां ने सोजत पर अधिकार किया ।
१६११	मिर्जा राजा मानसिंह अहमदनगर (दक्षिण) भेजा गया ।
१६१२	(जनवरी २८) कृष्णसिंह राठौड ने किशनगढ़ नगर बसाया ।
	(फरवरी १२) सिरोही नरेश व जोधपुर नरेश के बीच पुराना बैर समाप्त करने के लिए राजीनामा लिखा गया ।
	बीकानेर नरेश दलपतसिंह ने अपने भाई शूरसिंह की जागीर जब्त करली तब वह बादशाह के पास गया जिसने उसे बीकानेर का राज्य दे दिया और दलपतसिंह को हराने के लिए सेना भेज दी । दलपतसिंह हार कर हिसार चला गया ।
	बादशाह ने राजा बसू को मेवाड़ भेजा ।
१६१३	(अप्रेल १७) नागोर के राव अमरसिंह राठौड का जन्म हुआ ।
	(सितम्बर ७) मेवाड पर आक्रमण करने के लिए बादशाह जहांगीर अजमेर के लिए रवाना हुआ और वहां ८ नवम्बर को पहुंचा ।
	(सितम्बर) जहांगीर ने शूरसिंह को बीकानेर का शासक बनाया ।
	शूरसिंह ने दलपतसिंह को गिरफ्तार किया ।
	बादशाह ने फलोदी परगना पुनः जोधपुर नरेश शूरसिंह को दे दिया तथा वह शाहजादा खुर्रम के साथ (दिसंबर) मेवाड परआक्रमणकरने भेजा गया ।
	मिर्जा अजीज कोका को मेवाड भेजा गया ।
	(दिसम्बर १७) शाहजादा खुर्रम अजमेर से चलकर मांडलगढ़ पहुंचा ।
१६१४	(मार्च ११) शाहजादा खुर्रम ने महाराणा के १७ हाथी पकड़ कर बादशाह के पास भेजे ।
	माण्डल, कपासन, ऊंटाला, नाहर, मगरा, देवारी व दबोक में मुगल थाने कायम किये गये । चावण्ड पर भी मुगलों का कब्जा हुआ । अतः महाराणा अमरसिंह ने बादशाह की अधीनता स्वीकार की ।
	(जुलाई ६) आमेर के मिर्जा राजा मानसिंह का देहान्त हुआ ।

ई० सन्	घटना
१६१४	बीकानेर का महाराजा दलपतसिंह शाही सेना से लड़ता हुआ मारा गया।
	राव रतन हाडा बादशाही सेना के साथ दक्षिण में भेजा गया।
	अजमेर में अंग्रेजी माल का गोदाम बना जहां से माल भेजा व मंगाया जाता था।
१६१५	(फरवरी ५) महाराणा अमरसिंह शाहजादा खुर्रम से गोगुंदा में मिला।
	(फरवरी १६) उदयपुर का कुंवर कर्णसिंह बादशाह जहांगीर के दरबार में (अजमेर) उपस्थित हुआ।
	(मार्च १७) बादशाह जहांगीर ने उदयपुर के कुंवर कर्णसिंह को पांच हजारी माल और पांच हजार सवारों का मनसब दिया।
	जहांगीर ने महाराणा अमरसिंह पर विजय पाने की खुशी में अजमेर टकसाल से चांदी के रुपये जारी किये।
	डूंगरपुर, बांसवाड़ा व देवलिया (प्रतापगढ़) शाही फरमान के अनुसार मेवाड के अधीन माने गये।
	(मई ११) बादशाह ने मवाड का जीता हुआ सारा प्रदेश महाराणा को लौटा दिया। चित्तौड़ का किला भी लौटा दिया गया। इनके अलावा फूलिया रतलाम बांसबाडा, जोरन, नीमना, अरणोद, आदि भी जागीर में लिये गये।
	(जून ५) उदयपुर का कुंवर कर्णसिंह बादशाह के दरबार (अजमेर) से विदा किया गया। उसके अजमेर आने के दिन से विदा होने के दिन तक बादशाह ने उसे दो लाख रूपये पांच हाथी और ११० घोड़े देकर सम्मानित किया।
१६१५	जोधपुर नरेश शूरसिंह का अजमेर के पास किशनगढ़ नरेश किशनसिंह से युद्ध हुआ। जोधपुर नरेश शूरसिंह दक्षिण भेजा गया।
	बीकानेर नरेश शूरसिंह की नरवर के किसानों के कष्टों की जांच के लिये नियुक्ति की गई।
	जहांगीर ने तारागढ़ (अजमेर) की घाटी में "चश्मेनूर" नामक महल बनवाया।
१६१६	(जनवरी १०) अंग्रेजी बादशाह सर जैम्स का राजदूत टामसरो जहांगीर के दरबार में व्यापारिक संधि हेतु पहुँचा।
	(मार्च ६) बादशाह ने रावत मेघसिंह चूड़ावत को मालपुरा की जागीर दी।
	(नवम्बर १०) जहांगीर अजमेर से माण्डू के लियें रवाना हुआ।
	शाहजादा खुर्रम दक्षिण जाते हुए मार्ग में उदयपुर ठहरा।
	मेरों ने जहांगीर के डेरे को उसके अजमेर से दक्षिण जाते वक्त लूटा।
१६१७	(फरवरी) जालौर के शासक गजनीखां बिहारी के उत्तराधिकारी पहाड़खां ने अपनी माता को मार डाला अतः जहांगीर ने इस अपराध के लिये पहाड़खां

ई० सन्	घटना
१६१७	को मृत्युदंड दिया। जालौर शाहजादा खुर्रम की जागीर में मिला दिया गया। (जून २५) बांसवाड़ा नरेश बादशाह जहांगीर से माडू के मुकाम पर मिला और भेंट दी। (अगस्त ३०) जोधपुर के महाराजकुमार गजसिंह ने जालौर जीता। अतः बादशाह ने जालौर का परगना उसके नाम कर दिया। बांसवाड़ा का महारावल समरसिंह बादशाह जहांगीर के पास मांडू गया।
१६१८	जालौर के पठान नवाब कुरजा (पालनपुर) में जा बसे। बादशाह ने जोधपुर नरेश शूरसिंह को दक्षिण में उपद्रव दबाने भेजा।
१६१९	बादशाह जहांगीर स्वयं रणथम्भौर आया और यह दुर्ग विट्ठलदास गौड़ को दे दिया। जोधपुर के गजसिंह ने जालौर पर कब्जा किया।
१६२०	मुगल सेना कन्धार में हारी।
१६२१	बादशाह जहांगीर ने गजसिंह को 'दलथमन" (फौज का रोकने वाला) की पदवी तथा जालौर का परगना मनसब की जागीर में दिया।
१६२२	(मई ६) शाहजादा खुर्रम अपने आपको बादशाह घोषित कर आगरा की ओर सेना लेकर बढ़ा। बीकानेर नरेश शूरसिंह की आमेर के निकट जालनापुर के थाने पर नियुक्ति हुई।
१६२३	(मार्च) बिलोचपुर के युद्ध में शाहजादा खुर्रम हारकर उदयपुर की ओर भागा। (अप्रेल २१) शाहजादा खुर्रम ने राजा जयसिंह की अनुपस्थिति में आमेर को लूटा। (अप्रेल) शाहजादा खुर्रम उदयपुर पहुंचा, वहां महाराणा से भाई-चारे की पगड़ी की अदला बदली की। (मई ५) जोधपुर नरेश गजसिंह व बूंदी का राव रतन हाडा खुर्रम का विद्रोह दबाने भेजे गये। खुर्रम बिलोचपुर में मुगल सेना से हारा। (नवम्बर १४) जहांगीर अजमेर से काश्मीर के लिये रवाना हुआ।
१६२४	(अक्टुबर १६) हाजीपुर के युद्ध में शाहजादा खुर्रम हारा। इस युद्ध में बादशाही सेना में आमेर का जयसिंह व जोधपुर का गजसिंह भी था।
१६२५	जहांगीर की आज्ञा से माधोसिंह कोटा की राजगद्दी पर बैठा। बूंदी के राव रतन को बादशाह ने ५ हजार जात व ५ हजार सवार का मनसब तथा "राव राय" की पदवी दी। फतेहपुर के नवाब अलफखां को कांगड़ की फौजदारी मिली।
१६२६	(मई ६) जहांगीर ने अजमेर में पड़ाव डाला। महावत खां देवलिया प्रतापगढ़ में जाकर रहा।

ई० सन्	घटना
१६२६	बीकानेर नरेश शूरसिंह मुलतान की ओर भेजा गया। शूरसिंह की बुरहानपुर में नियुक्ति की गई।
	जोधपुर नरेश गजसिंह के पुत्र अमरसिंह को नागोर की जागीर मिली।
१६२७	(मई ६) शिवाजी का जन्म हुआ।
	(सितम्बर २६) बीकानेर नरेश शूरसिंह को जागीर में नागोर और मारोठ मिले।
	शूरसिंह की काबुल में नियुक्ति हुई।
	बादशाह ने माधोसिंह को कोटा का स्वतंत्र शासक नियुक्त किया।
	डूंगरपुर के महारावल पुंजरात को बादशाह से शाही मनसब मिला।
१६२८	(जनवरी १) शाहजादा अहमदाबाद से ईडर होता हुआ मेवाड़ में गोगुन्दा (जनवरी ६) पहुंचा।
	(जनवरी १४) शाहजहां मांडल से अजमेर पहुंचा जहां आमेर के राजा जयसिंह ने उनसे भेंट की।
	शाहजहां ने महावतखां को अजमेर का सूबेदार बनाया।
	(फरवरी ४) डूंगरपुर व बांसवाड़ा को मेवाड़ से स्वतंत्र घोषित किया गया, अत: महाराणा ने देवलिया प्रतापगढ़, डूंगरपुर व बांसवाड़ा पर आक्रमण करने सेना भेजी।
	(फरवरी १३) जोधपुर नरेश गजसिंह शाही दरबार में पहुंचा।
	मेवाड़ की सेना ने सिरोही राज्य के गांव लूटे।
	(अप्रेल) शाहजहां के आदेश से जयसिंह ने महावन (मथुरा) के विद्रोहियों का दमन किया।
	जोधपुर नरेश गजसिंह ने फतेहपुर सीकरी के निकट सिसोदरी के किले पर कब्जा किया।
१६२९	महाराणा जगतसिंह ने रावत जसवंतसिंह को उदयपुर बुलाकर धोखे से मरवा डाला।
	डूंगरपुर का महारावल पुंजरात शाही सेना के साथ दक्षिण गया।
१६३०	(फरवरी) जोधपुर नरेश गजसिंह व बीकानेर नरेश शूरसिंह को खानजहां लोदी (दक्षिण के सूबेदार) के विरुद्ध भेजा गया।
	(अक्टूबर) जोधपुर नरेश गजसिंह को बादशाह जहांगीर ने महाराजा की पदवी दी।
	मेडतिया रघुनाथसिंह ने गौड़ो से गोडावाटी (मारोठ के आसपास का क्षेत्र) जीता।
१६३१	(दिसम्बर १) कोटा राज्य बूंदी राज्य से अलग स्थापित हुआ।
	माधोसिंह का कोटा में राज्याभिषेक हुआ।
	कोटा का दुर्ग माधोसिंह ने बनवाया।

ई० पूर्व	घटना
१६३१	(दिसम्बर) जोधपुर नरेश गजसिंह मुगल सेनापति आसफखां के साथ बीजापुर के सुल्तान मोहम्मदखां अदिलखा के विरुद्ध भेजा गया।
१६३३	(अप्रेल) विट्ठलदास अजमेर का फौजदार नियुक्त हुआ।
	(दिसम्बर) कई बहुमूल्य भटों के साथ जगतसिंह ने कल्याण झाला को शाहजहां के पास आगरा भेजा।
	बादशाह ने सेना भेज कर देवलिया (प्रतापगढ़) पर महारावल का कब्जा करवाया।
	उदयपुर का धरयावाद परगना खालसा किया गया।
	प्रतापगढ़ स्वतत्र हुआ।
१६३४	महावतखां का अजमेर में देहान्त हुआ। उसने अपनी कुल सम्पत्ति अपने राजपूत सहायकों को दे दी।
	बीकानेर नरेश कर्णसिंह परन्डा की चढ़ाई में शाही सेना के साथ गया।
१६३५	महाराणा जगतसिंह की सेना ने बांसवाडा पर चढ़ाई की। तब महारावल की ओर से दो लाख रुपये दण्ड के लेकर महाराणा के अधीन किया।
	जालोर के पठान पहाड़खाँ का चाचा फिरोजखां पालनपुर का नवाब बना।
१६३६	अजमेर की दरगाह में शाहजहा ने जामा मस्जिद बनवाई।
	बीकानेर का महाराजा कर्णसिंह शाहजी भोंसले के विरुद्ध भेजा गया।
१६३७	शाहजहां ने अजमेर की आना सागर झील पर बारहदरिया बनवाई।
	कोटा का माधवसिंह दिल्ली से काबुल पहुंचा।
१६३८	(मार्च) आमेर का जयसिंह शाहजादा शाहशुजा के साथ कन्धार को विजय करने भेजा गया।
	(अगस्त १३) राठौड दुर्गादास का जन्म हुआ।
	बादशाह शाहजादा ने मारवाड नरेश गजसिंह की इच्छानुसार उसके ज्येष्ठ पुत्र अमरसिंह को राव की पदवी देकर नागोर जागीर में दिया।
१६३९	(जनवरी २३) जोधपुर नरेश जसवंतसिंह को जैतारण का परगना तथा पाच हजार जात व सवार का मनसब दिया गया।
	(अप्रेल १९) आमेर नरेशजयसिंह को बादशाह ने मिर्जा राजा की पदवी दी।
	(अप्रेल २६) जोधपुर नरेश जसवंतसिंह जमसद के निकट बादशाह से मिला व उसके साथ फरवरी १६४० तक रहा।
	कोटा का माधवसिंह कन्धार से लाहोर पहुंचा।
१६४१	राव शत्रुसाल हाडा दारा शिकोह के साथ कंधार गया।
	मिर्जा राजा जयसिंह शाहजादा मुराद के साथ काबुल भेजा गया।
१६४२	(अगस्त ३१) जालोर का परगना गजसिंह के चचेरे भाई महेशदास को मिला।
	जोधपुर नरेश जसवंतसिंह ईरान के शाह सफी के विरुद्ध मुगल सेना के साथ भेजा गया।

ई० सन्	घटना
१६४२	किशनगढ़ नरेश रूपसिंह को शाहजादा मुराद के साथ कन्धार [illegible] में नियुक्त किया गया।
	मिर्जा राजा जयसिंह ने शाहजादा दारा के साथ कंधार की रक्षा की।
१६४३	शाहजहां राणा के विरुद्ध कार्यवाही करने उद्यत हुआ। तब महाराणा ने अपने कुंवर राजसिंह को बादशाह के पास भेजा।
	वादशाह ने मिर्जा राजा मानसिंह द्वारा बनवाये गये वृन्दावन के मन्दिर का प्रवन्ध मिर्जा राजा जयसिंह को सौंपा।
१६४४	वीकानेर व नागोर के शासकों की सेना के बीच मतीरे की राड़ (लड़ाई) हुई।
	(जुलाई २५) नागौर का राव अमरसिंह राठोड़ आगरा में मारा गया।
१६४५	जोधपुर नरेश जसवंतसिंह आगरे का सूवेदार नियुक्त किया गया।
	जोधपुर के मंत्री मुहणोत नैणसी ने रावत नारायण को दवाने के लिये मेर-वाडा पर आक्रमण किया।
१६४६	(अप्रेल) जोधपुर नरेश जसवंतसिंह वादशाह के साथ कावुल गया।
१६४७	मिर्जा राजा जयसिंह शाहजहां से मिलने कावुल गया।
	वादशाह ने जोधपुर नरेश जसवंतसिंह को हिण्डोन परगना दिया जो उसके कब्जे में लगभग ६ वर्ष तक रहा।
१६४८	(मार्च) वलख और वदखशा के युद्धों में प्राप्त मुगल सफलताओं के लिये महाराणा जगतसिंह की ओरसे शाहजहां को वधाई देने के लिये उसका कुंवर राजसिंह आगरा शाही दरवार में पहुंचा।
	कोटा का माधवसिंह वलख और वदखशा के युद्ध मे वापिस कोटा पहुंचा।
	(सितम्वर) मिर्जा राजा जयसिंह को पुनः कंधार की सुरक्षा के लिये शाह-जादा औरंगजेव तथा शादुलखां के साथ नियुक्त किया गया।
	शाहजहां ने प्रतापगढ़ के महारावल हरिसिंह को खिलत आदि दी।
	महाराणा जगतसिंह इस वर्ष से प्रति वर्ष अपनी जन्म गांठ पर स्वर्ण की तुला करने लगा।
१६४९	जोधपुर नरेश जसवंतसिंह तथा वूंदी के शत्रुशाल को औरंगजेव के साथ कंधार भजे गये।
	मिर्जा राजा जयसिंह की मनसव में पांच हजार जात व पांच हजार सवार किये गये जिसमें से तीन हजार सवार दो अस्पा सेह अस्पा थे।
१६५०	(अक्टूवर ५) जोधपुर की सेना ने पोकरण दुर्ग पर कब्जा किया।
	(अक्टुवर ५) जैसलमेर के रामचन्द्र को खरोड़ा के युद्ध में हरा कर जोधपुर नरेश जसवंतसिंह ने सवलसिंह को जैसलमेर की राजगद्दी दिलाई।
	(अक्वटूर ३१) जसवंतसिंह को जैसलमेर का शातलमेर परगना दिया गया।
	मिर्जा राजा जयसिंह के द्वितीय पुत्र कीर्तिसिंह को वादशाह ने मेवात का फौजदार नियुक्त किया।

ई० सन **घटना**

१६५१ मिर्जा राजा जयसिंह को पुनः कन्धार की सुरक्षा के लिये नियुक्त किया गया।
कोटा के मुकन्दसिंह ने मुकन्दरा के दर्रे में किलाबन्दी की और नाल (घाटी) में दरवाजा बनवाया तथा अपनी रखेल अबला मीणी के लिये महल बनवाये।

१६५२ (मई १३) उदयपुर में जगदीश के मन्दिर का निर्माण प्रथम जगतसिंह ने पूर्ण करवाया।
(नवम्बर) महाराजा राजसिंह ने रत्नों का तुलादान किया।
बीकानेर के कर्णसिंह को तीन हजारी मनसब हुई और दक्षिण में औरंगजेब के साथ नियुक्ति की गई।
उदयपुर के महाराणा राजसिंह व सिरोही के महाराव अखैराज के बीच राजीनामा हुआ।
बादशाह मुहम्मदशाह ने नरेश गोपालसिंह को माहामारातीब का पदवी दी।

१६५३ बूंदी का राव शत्रुशाल कंधार पर कब्जा करने के लिये शाहजादा दारा के साथ भेजा गया।
प्रतापगढ़ के महारावत को कोटडी का परगना मिला।

१६५४ (जनवरी ६) जोधपुर नरेश जसवंतसिंह को मनसब में ६००० जात व ६००० सवार जिसमें ५००० दो अस्पा सेह अस्पा के फी जाकर महाराजा की पदवी दी गई।
(मई २१) बादशाह ने अब्दुलबेग को महाराणा के पास भेजा।
(सितम्बर ४) बादशाह द्वारा वजीर सादुल्लाखां को मेवाड़ पर आक्रमण करने को भेजा गया, ताकि महाराणा द्वारा मरम्मत कराये गये चित्तौड़गढ़ के बुर्ज गिरा दिये जावे।
(सितम्बर २४) बादशाह राणा के विरुद्ध कार्यवाही करने के लिये अजमेर रवाना हुआ।
(अक्टूबर ७) मुगल सेना ने चित्तौड़ पर हमला किया।
(नवम्बर २१) महाराणा का ज्येष्ठ पुत्र शाही दरबार में पहुंचा।
जोधपुर के जसवन्तसिंह ने मुहणोत नैणसी को मंत्री नियुक्त किया।
सम्राट शाहजहां ने महाराणा राजसिंह के कुछ परगनों को जब्त कर लिया।
नागोर के राव अमरसिंह राठोड़ की पुत्री की शादी दारा के पुत्र के साथ हुई।

१६५६ (दिसम्बर १३) जालोर का परगना महाराजा जसवन्तसिंह को प्रदान किया गया। दारा ने महाराजा जसवन्तसिंह को कासिमखां के साथ मालवा भेजा।

१६५७ जोधपुर नरेश ने अपने राज्य के मिवासों के उपद्रव का दमन किया।
(दिसम्बर १३) जोधपुर नरेश जसवंतसिंह को मनसब ७००० जात और ७००० सवार का किया गया तथा उसे एक लाख रुपये तथा मालवे की सूबेदारी देकर औरंगजेब के विरुद्ध भेजा गया।

ई० सन् घटना

१६५८ (अप्रेल १६) धर्मत के युद्ध में दारा की सेना हारी।
शाहपुरा नरेश सुजानसिंह और कोटा नरेश मुकन्दसिंह धर्मत के युद्ध में मारे गये।
(अप्रेल २६) जसवंतसिंह धर्मत के युद्ध के बाद जोधपुर पहुंचा।
(मई २६) बूंदी के राव शत्रुशालसिंह सामूगढ़ के युद्ध में मारा गया।
शाहजादा दारा सामूगढ़ के युद्ध में औरंगजेब से हारा।
(मई) महाराणा ने दरीबा, मांडल, बनेडा आदि पर कब्जा किया।
(जून ६) रूपसिंह सामूगढ़ के युद्ध में दारा शिकोह की ओर से लड़ता हुआ मारा गया।
(जून २१) महाराणा उदयपुर की ओर से कुंवर सुलतानसिंह ने सामूगढ़ की विजय पर औरंगजेब को बधाई दी।
(जून २५) मिर्जा राजा जयसिंह औरंगजेब से भेट करने मथुरा गया।
(जुलाई २३) औरंगजेब अपने पिता शाहजहां को गिरफ्तार कर राजगद्दी पर बैठा।
(अगस्त ७) औरंगजेब ने महाराणा उदयपुर का पद बैठा कर ६००० जात व ६००० सवार जिसमें १००० सवार दो अस्पा तीन अस्पा कर दिया।
(अगस्त ७) बादशाह औरंगजेब ने वांसवाड़ा व डूंगरपुर व देवलिया का फरमान महाराणा राजसिंह के नाम दिया।
(अगस्त १६) जोधपुर नरेश जसवंतसिंह बादशाह औरंगजेब से मिला।
(सितम्बर) जोधपुर नरेश जसवन्तसिंह औरंगजेब से सतलज नदी के किनारे मिला।
(दिसम्बर २४) औरंगजेब व शूजा के बीच कोड़ा का युद्ध हुआ तब बूंदी का राव भावसिंह शाही तोपखाने का अधिकारी था।
(मेवाड़ के महाराणा राजसिंह ने शाहपुरा राज्य पर हमला किया।
मेवाड के महाराणा राजसिंह के नाम बसाड, गयासपुर, बासवाड़ा देवलिया, डूंगरपुर आदि का फरमान किया।

१६५९ (जनवरी ५) जोधपुर नरेश, जसवन्तसिंह खजवाहा का युद्ध प्रारम्भ होने के पूर्व ही शाह शूजा के ईशारे पर औरंगजेब की सेना में लूटमार कर मारवाड़ चला गया।
(जनवरी ७) औरंगजेब ने मिर्जा राजा जयसिंह को पत्र लिखा कि वह जोधपुर नरेश जसवन्तसिंह से मिले व कहे कि वह दारा की सहायता न करे। जसवन्तसिंह जयसिंह से ईटावा में मिला।
(जनवरी १५) दारा शिकोह ने महाराणा राजसिंह को सहायता के लिये निशान (पत्र) भेजा।
(जनवरी १६) औरंगजेब ने जसवंतसिंह के विरूद्ध जोधपुर सेना भेजी।

ई० सन	घटना
१६५९	(मार्च १४) औरंगजेब व दारा शिकोह के बीच दौराई (अजमेर के निकट) का युद्ध हुआ जिसमें दारा हारा। औरंगजेब ने तारागढ़ (अजमेर) पर कब्जा किया।
	(मार्च १५) दारा का दल मेडता पहुंचा।
	(अप्रेल ५) उदयपुर के महाराणा ने बांसवाडा के विरुद्ध सेना भेजी जिस पर वहां के रावल समरसिंह ने महाराणा की अधीनता स्वीकार करली।
	(अप्रेल १५) जोधपुर नरेश जसवंतसिंह ने गुजरात की सूबेदारी का पद सम्भाला जिस पद पर वह जुलाई १६६२ तक रहा।
	(सितम्बर) मिर्जा राजा जयसिंह की दक्षिण में नियुक्ति की गई।
	बादशाह ने आदेश जारी किया कि नये हिन्दू मन्दिर नहीं बनवाये जावे।
	जोधपुर नरेश जसवंतसिंह गुजरात का सूबेदार बनाया गया जहां वह १६६२ तक रहा।
१६६०	(अगस्त) औरंगजेब ने अब्दुल नबीखां को मथुरा परगना का फौजदार नियुक्त किया।
	महाराणा राजसिंह ने किशनगढ़ की राजकुमारी चारुमती के साथ विवाह किया।
	महाराणा राजसिंह ने डूंगरपुर पर सेना भेजी।
	बीकानेर नरेश कर्णसिंह की नियुक्ति दक्षिण में की गई।
	जैसलमेर राज्य में डोडिया नाम्बे का पैसा चालू किया।

ई० सन्	घटना
१६६४	(मई २८) जसवंतसिंह ने कोण्डाना के किले का घेरा उठा लिया।
	(जून १) जसवंतसिंह कुडाणा का घेरा उठाकर पूना चला गया।
	(सितम्बर ३०) औरंगजेब ने मिर्जाराजा जयसिंह को शिवाजी को दबाने के लिये नियुक्त किया।
	(अक्टूबर १६) जसवंतसिंह दिल्ली के लिए दक्षिण से रवाना हुआ।
	मिर्जा राजा जयसिंह ने आमेर में महावटा झील के किनारे पर दिलाराम बाग का निर्माण कराया।
१६६५	(जनवरी १६, आमेर नरेश जयसिंह बुरहानपुर पहुंचा।
	(मार्च ३) महाराजा जसवंतसिंह ने मिर्जा राजा जयसिंह को दक्षिण की सेना के संचालन का भार पूना में सौंपा।
	(मार्च १४) मिर्जा राजा जयसिंह ने शिवाजी पर आक्रमण करने के लिये सासवाड से पूना की ओर कूच किया।
	(मार्च ३०) मिर्जा राजा जयसिंह पुरन्दर पहुंचा।
	(मार्च ३१) जयसिंह ने पुरन्दर व रुद्रमाल दुर्गों का घेरा डाला।
	(अप्रैल १०) औरंगजेब ने आदेश जारी किया कि भविष्य में बाहर से लाये जाने वाले माल पर चुंगी मुसलमानों से ढ़ाई प्रतिशत तथा हिन्दुओं से ५ प्रतिशत वसूल की जायगी।
	(अप्रल १४) रुद्रमाल के मराठा सैनिकों ने मुगल सेना के सम्मुख हथियार डाल दिये।
	(अप्रेल १७) राजसमुद्र (उदयपुर) की नींव का पत्थर (आधार शिला) रखा गया।
	(अप्रल २५) जोधपुर नरेश जसवंतसिंह दक्षिण से दिल्ली पहुचा।
	(मई १३) जसवंतसिंह दक्षिण से दिल्ली पहुचा।
	(जून १२) शिवाजी की मिर्जा राजा जयसिंह से पुरन्दर के सामने भेंट हुई। पुरन्दर की सन्धि हुई।
	(जून १४) मिर्जा राजा जयसिंह ने शिवाजी को एक हाथी और एक घोड़ा भेंट किया।
	(जून १८) शिवाजी का पुत्र शम्भाजी जयसिंह के पास पहुचा।
	(जून २३) बादशाह ने मिर्जा राजा जयसिंह का मनसब ७००० सवार दो अस्पा सेह अस्पा शिवाजी के विरुद्ध सफलता प्राप्त करने के कारण कर दिया।
	(सितम्बर २७) पुरन्दर के पास राजा जयसिंह के शिविर में शिवाजी आया।
	(नवम्बर २०) जयसिह और शिवाजी बीजापुर पर आक्रमण करने के लिये पुरन्दर से रवाना हुए।
	(दिसम्बर २५) बीजापुरियों के साथ मुगल सेना की पहली लड़ाई हुई।

ई० सन्	घटना
१६६५	(दिसम्बर २८) बीजापुरियों के साथ राजा जयसिंह का दूसरा युद्ध हुआ। मुगल सूबेदार हाँसिमखां ने डग जीता। बूंदी के राव मानसिंह हाडा ने दिलेरखां के साथ चान्दा राज्य पर हमला किया। बादशाह औरंगजेब ने आदेश जारी किया कि आदमियों व जानवरों का रूप देते खिलौने नहीं बनाये जावे क्योंकि ऐसा करना मुस्लिम धर्म के विरूद्ध है।
१६६६	(जनवरी ५) मिर्जा राजा जयसिंह बीजापुर के युद्ध में पीछे हटा। (जनवरी ११) पनहाला पर आक्रमण करने के लिये जयसिंह ने शिवाजी को भेजा। (मार्च ५) शिवाजी अपने ज्येष्ठ पुत्र शम्भाजी को साथ लेकर आगरा के लिये रवाना हुआ। (मई १२) शिवाजी औरंगजेब से आगरा के किले में मिला। (जून ८) शिवाजी ने बादशाह से प्रार्थना की कि उसे आमेर के महाराजकुमार रामसिंह की निगरानी से हटा दिया जावे। (जुलाई १५) शिवाजी ने आमेर के रामसिंह से ऋण लिया। (अगस्त १८) शिवाजी औरंगजेब की कैद से निकल गया। (सितम्बर ३) महाराजा जसवंतसिंह को शाहजादा मुअज्जम के साथ उत्तर पश्चिमी सीमान्त प्रदेश की रक्षा के लिए नियुक्त कर भेजा गया। (सितम्बर १२) शिवाजी राजगढ़ (दक्षिण) पहुंचा। (नवम्बर २२) बादशाह ने जोधपुर राज्य के जाजु परगने को ले लिया। (दिसम्बर २६) सिक्खों के दसवें गुरु गोविन्दसिंह का जन्म हुआ। बीकानेर नरेश कर्णसिंह को जंगलधर बादशाह की पदवी मिली।

ई० सन्	घटना
१६६७	बादशाह ने बीकानेर नरेश कर्णसिंह पर अप्रसन्न होकर बीकानेर का राज्य और मनसब कुंवर अनूपसिंह के नाम कर दिया।
१६६८	औरंगजेब ने शाही हुक्म निकाला कि साम्राज्य भर में उत्सव मेले नहीं मनाये जावे संगीत भी बंद किया गया।
१६६९	(अप्रेल ९) औरंगजेब ने हिन्दुओं पर मन्दिर व पाठशालाओं के तोडने की आज्ञा जारी की।
	(मई १०) जाटों ने अपने नेता गोकुला के नेतृत्व में मथुरा के फौजदार अब्दुल नबीखां को मार डाला।
१६६९	(सितम्बर २९) मथुराधीश की प्रतिमा बूंदी लाई गई जो १७४४ में कोटा ले जाई गई।
	(नवम्बर १८) औरंगजेब जाटों का दमन करने के लिये मथुरा गया।
	बादशाह के आदेश से मुसलमान शीयामत का धार्मिक त्यौहार मुहर्रम मनाया जाना वन्द किया गया।
१६७०	(जनवरी) जाटों के नेता गोकुला जाट तथा उसके चाचा उदयसिंह को आगरा की कोतवाली के सामने निर्दयता पूर्वक कत्ल किया गया।
	(मार्च) औरंगजेब ने अपने जन्म-दिनके सारे उत्सवों को मनाना बंद करा दिया।
	(अप्रेल) बादशाह ने एक दूसरे को प्रणाम करने की अब तक प्रचलित हिन्दू तरीका काम में लाने की मुगल दरबारियों को मनाही कर दी गई।
	(अगस्त ३) जोधपुर के मुहणोत नणसी ने आत्म हत्या की।
	जसवंतसिंह की गुजरात में दुबारा सूबेदार पद पर नियुक्ति की गई तब उसे थिराद व राधनपुर के परगने दिये गये।
	बीकानेर के अनूपसिंह की दक्षिण में नियुक्ति की गई।
१६७१	(मार्च) आमेर का रामसिंह रंगमांत (आसाम) से लौट आया।
	(मई २१) बादशाह ने जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह को जमसद का थानेदार नियुक्त किया गया।
	(सितम्बर २५) कल्याणसिंह नरूका को माचेडी (अलवर राज्य) की जागीर मिली।
	औरंगजेब ने एक हुक्म निकाला को कि राज्य के कर वसूल करने वाले केवल मुसलमान ही हो।
१६७२	बीकानेर का मोहनसिंह शाहजादा मुअज्जम के साले मुहम्मदशाह से मारा गया बाद में उसके भाई पदमसिंह ने मुहम्मदशाह को मार कर अपने भाई की मृत्यु का बदला लिया।
१६७३	(फरवरी १०) चौपासनी (जोधपुर) से श्रीनाथजी की प्रतिमा सिहाड (वर्तमान नाथद्वारा) ले जाई जाकर स्थापित की गई।

ई० सन्	घटना
१६७३	(मई ३१) जोधपुर नरेश जसवंतसिंह गुजरात से हटाया जाकर जमसद का थानेदार बनाया जाकर भेजा गया।
	मुगलों के विरुद्ध सतनामियों का विद्रोह हुआ।
१६७४	देबारी (उदयपुर) की चार दीवारी व दरवाजे का निर्माण किया गया।
	जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह का पठानों के साथ घोर युद्ध हुआ।
	बादशाह औरंगजेब ने प्रतापगढ़ के महारावल प्रतापसिंह को मनसब दी।
	(जून १५) महाराणा राजसिंह ने बांसवाडा राज्य पर हमला कर सताईस गांव छीन लिये।
१६७५	सिक्खों ने मुगल बादशाह के विरुद्ध विद्रोह किया।
	महाराणा और महारावत की तकरार की जांच के लिये शेख इनायतुल्ला को भेजा गया।
१६७६	(जनवरी १४) राजसमुद्र की प्रतिष्ठा का कार्य आरम्भ हुआ।
	(जून) आमेर का रामसिंह मुगल दरबार में उपस्थित हुआ।
१६७७	बूंदी के राव भावसिंह हाडा के दत्तक पुत्र किशनसिंह को औरंगजेब के इशारे पर मार डाला गया।
	सिरोही का राव वैरीशाल जब राज्यच्युत किया जाने लगा तब महाराणा ने उसकी सहायता कर उसे राज्यच्युत होने से बचाया। इसके बदले में उससे एक लाख रुपये व ५ गांव लिये।
१६७८	बादशाह का फरमान महारावल कुशलसिंह के नाम हुआ।
	अनूपसिंह ने अनूपगढ़ (बीकानेर राज्य) का निर्माण कराया।
	(नवम्बर २८) जोधपुर नरेश जसवंतसिंह की मृत्यु हुई।
१६७९	(जनवरी ९) बादशाह अजमेर के लिये रवाना हुआ।
	(जनवरी ७) बादशाह ने सेना जोधपुर पर कब्जा करने भेजी।
	(फरवरी १९) जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह का लाहोर में जन्म हुवा।
	(फरवरी २०) बादशाह औरंगजेब अजमेर पहुंचा तब उदयपुर के महाराणा

ई० सन्	घटना
१६७६	(अप्रेल १४) दुर्गादास राठौड औरंगजेब से दिल्ली में मिला ।
	(अप्रेल) वादशाह ने उदयपुर के कुवर जयसिंह के साथ महाराणा उदयपुर के लिये भेंट भेजी ।
	(मई) औरंगजेव के आदेश से खानजहां बहादुर ने सीकर के निकट हर्ष पहाड के चौरासी मन्दिर नष्ट किये ।
	(मई २७) नागोर के इन्द्रसिंह राठौड का बादशाह ने जोधपुर का राजा बन कर भेजा । वादशाह ने वह हिन्दू प्रथा बंद की जिसके अनुसार जब वड़े वड़े राजाओं को राज्य सौंपा जाता तब वादशाह स्वयं उनके तिलक करता था ।
	(जुलाई १५) वादशाह ने जोधपुर नरेश के परिवार को बन्दी हालत में रखने का आदेश दिया ।
	(जुलाई १६) दिल्ली में राठौडों का वादशाही सेना से युद्ध हुआ ।
	(जुलाई २३) दुर्गादास राठौड वालक महाराजा अजीतसिंह को लेकर जोधपुर पहुंचा । राठौडों ने जोधपुर दुर्ग के मुगल रक्षक रहिमखां को नागौर भगा दिया ।
	(अगस्त २) वालक महाराजा अजीतसिंह का राजतिलक संस्कार किया गया ।
	(अगस्त १७) वादशाह ने जोधपुर पर अधिकार करने के लिये एक बडी सेना भेजी जिसने जोधपुर पहुंच कर दुबारा कब्जा किया ।
	(अगस्त २१) पुष्कर के निकट अजमेर के सूवेदार तहव्वखां व राठौड के वीच युद्ध हुआ, जिसम मुगल सेना हारी ।
	(सितम्बर २) इन्द्रसिंह राठौड ने जोधपुर के गढ़ में प्रवेश किया ।
	(सितम्बर ३) वादशाह मेवाड़ पर चढ़ाई करने के लिय दिल्ली से अजमेर के लिय रवाना हुआ ।
	(सितम्वर १५) औरंगजेव अजमेर पहुंचा ।
	(अक्टुवर २६) मारवाड में मुगल फौजदार नियुक्त किया गया । मारवाड़ वादशाह के प्रयत्न से नियंत्रण में आया ।
	(अक्टुवर २७) औरंगजेव ने तहव्वरखा के नेतृत्व में मेवाड के माण्डल आदि पर आक्रमण करने सेना भेजी ।
	(नवम्बर ३०) औरंगजेव अजमेर से मेवाड़ के लिये रवाना हुआ । वादशाह ने मेवाड़ पर चढ़ाई करने के समय प्रतापगढ़ के महारावत को मंदसोर में उपस्थित होने के लिये फरमान भेजा ।
	मेवाड़ पर आक्रमण के समय शाहपुरा नरेश दौलतसिंह ने वादशाह का साथ दिया ।

ई० सन् — घटना

१६८१ (फरवरी २३) बादशाह ने उदयपुर के महाराणा को लिखा कि वह उसके अपराध क्षमा करने को तैयार है।

(मार्च २०) इनायतखां अजमेर का फौजदार बनाया गया।

(अप्रेल ३) शाहजादा आजम ने उदयपुर के महाराणा को लिखा कि वह शाहजादा अकबर देसूरी की ओर आ रहा है अतः वह उसे पकड ले अथवा मारडाले।

(मई १) राठौड दुर्गादास व शाहजादा अकबर ने नर्मदा नदी को पार किया।

(मई २१) आमेर के नरेश बिशनसिंह ने जाटों के किले सौगढ़ को जीता।

(जून १) दुर्गादास व शाहजादा अकबर शम्भाजी के राज्य (पाली) में जा पहुंचे।

(जून २४) महाराणा जयसिंह और शाहजादा मुअज्जम राजसमुद्र में मिले और सन्धि की।

(सितम्बर ८) बादशाह दक्षिण की ओर रवाना हुआ।

(सितम्बर २६) औरंगजेब ने आदेश दिया कि जो कोई कैदी मुस्लिम धर्म में परिवर्तित होगा वह छोड़ दिया जावेगा।

(अक्टुबर ३०) जोधपुर के राठौड़ों ने मेडता को लूटा।

(नवम्बर १३) शम्भाजो राठौड दुर्गादास व अकबर से मिला।

(दिसम्बर) दुर्गादास राठौड व शाहजादा अकबर ने शम्भाजी को जंजीरा के सिद्दियों के विरूद्ध सहायता दी।

१६८३ (मार्च १४) बीकानेर का पदमसिंह दक्षिण में ताप्ति नदी के तट पर मरहठों से लड़ता मारा गया।

राठौडों ने मेडता पर अधिकार किया।

किशनगढ़ नरेश मानसिंह को बदनोर व मांडल के परगनों की फौजदारी मिली।

१६८४ कोटा के राव जगतसिंह के अयोग्य शासक सिद्ध हो जाने पर वहां के सरदारों ने उसे वापिस अपनी जागीर कोयला भेज दिया तथा राव किशोरसिंह को कोटा की गद्दी पर बैठाया।

१६८५ (अप्रेल १४) राठौडों ने सिवाना का किला जीता।

हिदायतखां ने डग (झालावाड राज्य) का नाम हिदायतनगर रखा।

१६८६ (मई १) राजा राम के नेतृत्व में दूसरा जाट विद्रोह हुआ। राजाराम का सफदर जंग से मुकाबला हुआ।

बीकानेर का अनूपसिंह शख्खर का शासक बनाया गया।

मेवाड के महाराणा जयसिंह ने बांसवाडा पर सेना भेजी।

ई० सन	घटना
१६८२	(जून १७) अजमेर के सूबेदार ने राठौड़ दुर्गादास पर जब वह मेवाड़ राज्य के भडनियां गांव में था तब हमला किया।
	(सितम्बर) आमेर के विशनसिंह ने कामोट (सिनसिनी के पूर्व में ८ मील) गढ़ी पर कब्जा किया। बादशाह औरंगजेब ने शाहजादा अकबर की पुत्री को दुर्गादास से वापिस लेने की विफल चेष्टा की।
१६८३	(जनवरी) आमेर नरेश विसनसिंह का भटावलीगढ़ पर अधिकार हुआ।
	मुगल सेनापति सुजातखां ने जोधपुर जालौर व सिवाने पर कब्जा किया।
१६८४	(जनवरी १७) मुगल सेना ने जाटों को दबाने के लिए बयाना परगने में प्रवेश किया।
	(अप्रेल १४) मुगल सेना ने जाटों को दबाने के लिए खानवा तथा रूपावास परगनों में प्रवेश किया।
	(जून) रतनगढ़ (भरतपुर राज्य) पर मुगलों का कब्जा हुआ।
	(दिसम्बर) मुगल सेना ने नन्दा जाट विरोधी अभियान आरम्भ किया।
१६८५	(फरवरी २४) राजपूतों ने महावन से छावनी उठाई।
१६८६	(जनवरी) आमेर नरेश विशनसिंह ने मथुरा की फौजदारी से इस्तिफा।
	(अप्रेल) कोटा के रामसिंह और विशनसिंह के बीच युद्ध हुआ।
	(अक्टुबर) मुगल सेना ने सिनसिनी पर दुबारा कब्जा किया।
१६८८	(मई २०) दुर्गादास ने शाहजादा अकबर की पुत्री को बादशाह को सौंपा। बाद में दुर्गादास ने अकबर के पुत्र को बादशाह को सौंपा जिस पर बादशाह ने दुर्गादास को जड़ाऊ खिलअत, तीन हजारी जात और ढ़ाई हजार सवारों का मनसब दिया।
	महाराणा अमरसिंह द्वितीय ने डूंगरपुर व बांसवाड़ा पर आक्रमण किया।
	अजीतसिंह ने जालौर के गढ़ में प्रवेश किया।
	आमेर नरेश विशनसिंह को शाहजादा बेदारवख्त के साथ काबुल भेजा गया जहां उसने पठानों के उपद्रवों को दबाया।
१६८९	(मई) बादशाह के आदेश से दुर्गादास राठौड़ शाहजादा अकबर को लाने के लिए मेड़ता से कंधार रवाना हुआ।
	(नवम्बर २५) शाहपुरा के भारतसिंह को राजा की पदवी मिली।
	डूंगरपुर, बांसवाड़ा और देवलिया के नरेशों के उदयपुर के महाराणा के राजगद्दी पर बैठने के समय दस्तूर की तरह उपस्थित नहीं होने के कारण महाराणा उदयपुर ने उन पर आक्रमण किया।
	महाराणा द्वितीय अमरसिंह और महारावल खुमानसिंह के बीच संधि हुई।
	महारावत प्रतापसिंह ने प्रतापगढ़ का कस्बा बसाया।
	अजीतसिंह को जालौर या सांचोर व सिवाना के परगने बादशाह से जागीर में मिले।

ई० सन	घटना
१७०७	(अक्टूबर ६) मेहराबखां जोधपुर का फौजदार नियुक्त किया गया।
	(अक्टूबर २४) बहादुरशाह राजस्थान के लिए आगरा से चल पड़ा।
	(दिसम्बर) रिजा बहादुर ने सिनसिनी पर हमला किया।
	(२८ दिसम्बर) बादशाह आमेर के लिए रवाना हुआ।
	जोधपुर के महाराजा अजीतसिंह ने बीकानेर पर चढ़ाई की।
१७०८	(जनवरी ७) बादशाह आमेर पहुंचा और आमेर का नाम इस्लामबाद रख वहां तीन दिन रहा और उसे खालसा कर दिया गया।
	(जनवरी २६) बादशाह ने महाराजा अजीतसिंह से सन्धि करने के लिए दुर्गादास के नाम एक फरमान भेजा।
	(फरवरी १२) मुगल सेना ने जोधपुर की सेना को हराकर मेडता पर कब्जा किया।
	(फरवरी १५) महाराजा अजीतसिंह ने आनन्दपुर में (मेडता के निकट) बादशाह बहादुरशाह के सामने आत्म-समर्पण किया।
	(फरवरी २५) बादशाह ने जोधपुर नरेश अजीतसिंह व आमेर नरेश जयसिंह को अपने साथ दक्षिण चलने का आदेश दिया।
	(मार्च ११) बादशाह ने अजीतसिंह को "महाराजा" की पदवी दी।
	(अप्रेल २) महाराजा अजीतसिंह, जयसिंह और बहादुरशाह अजमेर से मन्दसौर के लिए रवाना हुए।
	(अप्रेल १२) गाजीउद्दीनखां फिरोजखां जंग अजमेर का सूबेदार नियुक्त हुआ।
	(अप्रेल २०) बादशाह ने आमेर राज्य विजयसिंह को देकर उसे "मिर्जा राजा" की पदवी दी तथा विजयसिंह की माता को एक लाख रुपये के जवाहरात दिये।
	(अप्रेल २०) अजीतसिंह और जयसिंह शाही शिविर (बडौद) छोड़कर उदयपुर के लिये रवाना हुए।
	(अप्रेल ३०) महाराणा अमरसिंह आमेर के जयसिंह व जोधपुर के अजीतसिंह से मिला।
	(मई २५) आमेर के जयसिंह ने उदयपुर महाराणा की भतीजी से विवाह किया।
	(जुलाई ४) महाराजा अजीतसिंह ने आमेर नरेश जयसिंह व मेवाड के राणा अमरसिंह की सहायता से जोधपुर के किले पर फिर से अधिकार किया।
	(अगस्त ६) अजीतसिंह आमेर जाता हुआ पुष्कर पहुंचा।
	(सितम्बर) आमेर व जोधपुर की सेनायें सांभर पहुंची व वहां से मुगल सेना को भगा दिया। जयसिंह ने महाराजा अजीतसिंह की सहायता से आमेर पर कब्जा किया।

ई० सन्	घटना
१७१३	(सितम्बर ७) चूड़ामन बादशाह द्वारा बुलाये जाने पर दिल्ली पहुंचा।
	(अक्टूबर १५) आमेर नरेश जयसिंह मालवा का सूबेदार नियुक्त किया गया।
	(अक्टूबर २०) बादशाह ने चूड़ामन जाट को "बहादुरखां" की पदवी से विभूषित किया, तथा "राव" का पद देकर उत्तर में दिल्ली से बाहर बारहमला से लेकर दक्षिण में चम्बल नदी तक पूर्व में आगरा से लेकर पश्चिम में आमेर नरेश जयसिंह की सीमा तक शाही मार्गों की राहदारी कर भार सौंपा।
	(दिसम्बर १२) बूंदी के बुद्धसिंह पर बादशाह की नाराजगी हुई तथा उसके (बादशाह के) आदेश से कोटा नरेश भीमसिंह ने बूंदी पर हमला किया।
	(दिसम्बर २६) सैयद हुसैनअली मारवाड़ पर हमला करने दिल्ली से चला।
	अथूगा (अजमेरमेरवाड़ा) पर बदनोर के ठाकुर जवाहरसिंह ने हमला किया
१७१४	(मार्च १६) सैयद हुसैनअली और नरेश अजीतसिंह के बीच सन्धि हुई जिसके अनुसार जोधपुर नरेश ने अपनी पुत्री इन्द्रकुंवर का डोला बादशाह को भेजना स्वीकार किया।
	(दिसम्बर १६) जोधपुर नरेश अजीतसिंह गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया गया।
	बादशाह की ओर से वरौदा मेव (नगर) कठुंमर, अखैगढ़ (नदबई) होल्लर और अऊ नामक पांच परगने स्थाई रूप से चूड़ामन को जागीर में दिये गये
	महाराजा अजीतसिंह ने मण्डोर में वीरों का दालान बनवाया।
	प्रतापगढ के महारावल ने साइल इलाके में लूटमार की।
	बादशाह ने प्रतापगढ़ के महारावल पृथ्वीसिंह को "रावतराव" की पदवी दी।
१७१५	(मई १३) आमेर नरेश जयसिंह ने मराठों को मालवा में हराया।
	(सितम्बर १३) जोधपुर नरेश अजीतसिंह की पुत्री इन्द्रकुंवर का डोला दिल्ली पहुंचा।
	(दिसम्बर १०) बादशाह ने जोधपुर नरेश अजीतसिंह को गुजरात का सूबेदार नियुक्त करने का फरमान भेजा।
	(दिसम्बर ११) अजीतसिंह की पत्री इन्द्रकुंवर का बादशाह फर्रुखसियर से विवाह हिन्दू व मुस्लिम मिश्रित रीति से हुआ।
	अजीतसिंह ने अहमदाबाद पहुंच कर गजनीखां जालौरी पठान को पालनपुर और जवामर्दखां बाम्बी को राधनपुर का फौजदार बनाया।
	दिलावरखां ने बूंदी राज्य में बुद्धसिंह की दुवाई फिरवाई।
	मल्लाहरखां पंवार ने डग (झालावाड़) पर कब्जा किया।
	बादशाह ने सोगरिया सरदार रुस्तम के पुत्र खेमकरन को भरतपुर, मलाह, अघापुर, वराह, इकरन तथा रूपवास जागीर में दिये।

ई० सन्	घटना
१७१६	(मार्च २०) बादशाह ने आमेर नरेश जयसिंह को फरमान भेजकर दिल्ली बुलवाया ।
	(मई २५) जयसिह जाट विरोधी अभियान की कमान सभालने के लिए दिल्ली पहुचा ।
	(जुलाई २०) जोधपुर नरेश अजीतसिंह ने इन्द्रसिंह को हराकर अपने राज्य में नागौर को मिलाया ।
	(सितम्बर १७) जयसिह जाट विरोधी अभियान के लिए नियुक्त किया गया ।
	(नवम्बर) जयसिंह ने थूनगढ़ी का घेरा डाला ।
	कोटा राज्य ने मराठों की अधीनता स्वीकार की पेशवा बाजीराव ने कोटा पर मुगलों की सहायता करने के कारण दड लगाया ।
१७१७	(फरवरी) जोधपुर नरेश अजीतसिह का नागौर पर अधिकार बादशाह ने मान लिया ।
	(अप्रेल) जजिया कर पुन. लागू किया गया ।
	(जून) अजमेर का सूबेदार थून के किले के घेरे में सहायता देने भेजा गया ।
	(जुलाई) जोधपुर नरेश अजीतसिह को गुजरात की सूबेदारी से हटाया गया ।
	(नवम्बर) जयसिंह को मालवा से हटाया गया ।
	वल्लभगढ़ भरतपुर में मिलाया गया ।
	बादशाह ने डूंगरपुर व बांसवाड़ा का फरमान महाराणा उदयपुर के नाम कर दिया । लेकिन दोनों राज्यों ने स्वीकार नही किया अतः मेवाड का मंत्री बिहारीदास सेना लेकर बांसवाड़ा भेजा गया तब वहां के राजाओं ने अधीनता स्वीकार करली ।
१७१८	(अप्रेल ६) चूड़ामन अपने भतीजे के साथ दिल्ली बादशाह से समझौता करने गया ।
	(अप्रेल ३०) चूड़ामन ने बादशाह फर्रुखसियर से समझौता किया ।
	(मई २१) मुगलसेना ने थून का घेरा उठाकर दिल्ली को प्रस्थान किया ।
	(जुलाई) फर्रुखसियर ने अजीतसिंह सरबुन्दलखां तथा निजाउलमुल्क को बुलाया ।
	(अगस्त २१) अजीतसिंह दिल्ली में बादशाह से मिला तब बादशाह ने उसे "राजराजेश्वर" की पदवी दी ।
	(नवम्बर २२) दुर्गादास राठोड़ की मृत्यु हुई ।
	(दिसम्बर १३) बादशाह स्वयं महाराजा अजीतसिंह के डेरे पर गया ।
	(दिसम्बर २८) बादशाह ने अजीतसिंह को दुबारा गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया मेवाड़ के महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय ने काछोला परगने के ३४ गांव शाहपुरा नरेश को दिये ।

ई० सन्	घटना
१७१८	प्रतापगढ़ के महारावत ने वर्षभर में चवालीस दिन तेल निकालने का निषेध किया तथा पर्यु षणों, अष्टमी, चतुर्दशी तथा रविवार को शराब की भट्टी बंद रखने की आज्ञा जारी की।
१७१६	(जनवरी) महात्मा रामचरणदास राम स्नेही सम्प्रदाय के संस्थापक का जन्म हुआ।
	(फरवरी १२) आमेर का सवाई जयसिंह तथा बूंदी के राव बुद्धसिंह को बादशाह ने सैयदों के दबाव से दिल्ली छोड़ने का आदेश दिया।
	(फरवरी १७) सैयदों व महाराजा अजीतसिंह ने दिल्ली के किले पर अधिकार किया तथा बादशाह फर्रुखसियर को दूसरे दिन (१८ जनवरी को) राजगद्दी से उतारा गया।
	(मार्च) जजिया कर बन्द किया गया तथा हिन्दुओं पर धार्मिक स्थानों की यात्रा करने के प्रतिबन्ध हटाये गये।
	मराठे दिल्ली से दक्षिण की तरफ रवाने हुए।
	(जून २७) आगरा के किले का घेरा डाला गया।
	अजीतसिंह को अपनी पुत्री (फर्रुखसियर की बेगम) को हिन्दू धर्म में शुद्ध करने व उसे जोधपुर ले जाने की अनुमति बादशाह ने दी।
	(अगस्त १) आगरे के किले का घेरा समाप्त हुआ।
	(अक्टूबर २२) अजीतसिंह को गुजरात के अलावा अजमेर का सूबेदार बनाया गया।
	(नवम्बर ५) जोधपुर नरेश अजीतसिंह व आमेर नरेश जयसिंह कालाडेरा (आमेर के निकट) में मिले।
	(नवम्बर १७) सैयदों ने बूंदी पर मुगल सेना भेजी।
	फतेहपुर के नवाब कायमखां ने झुंझुनूं पर कब्जा किया।
१७२०	(फरवरी १२) कोटा का महाराव भीमसिंह और दिलावरअलीखां ने बूंदी के राव बुद्धसिंह के साथ युद्ध किया।
	(मार्च २) महाराव भीमसिंह ने बूंदी पर अधिकार किया।
	(जून ८) भीमसिंह बुरहानपुर के पास कुरवाई के मैदान में मारा गया।
	महाराजा अजीतसिंह ने गुजरात व अजमेर सूबों में गोवध बन्द करा दिया।
	(सितम्बर २८) दिल्ली के सैयदों का पतन हुआ।
	बुद्धसिंह ने पुनः बून्दी पर कब्जा किया।
१७२१	(जनवरी) गुजरात की सूबेदारी से अजीतसिंह को हटाया गया।
	(अप्रैल २१) बादशाह ने आमेर नरेश जयसिंह को "सरमहाराजहाय" की पदवी दी।
	(अक्टूबर) जाट नरेश चूड़ामन की मृत्यु हुई।
	(मई) अजीतसिंह को गुजरात व अजमेर की सूबेदारी से हटाया गया।

ई० सन्	घटना
१७२१	(सितम्बर २६) जाटों ने आगरा के नायब सूबेदार नीलकण्ठ नागर को फतेहपुर सीकरी के निकट हराया व उसे मार डाला।
१७२२	(मई २१) महाराजा अजीतसिंह को अजमेर का सूबेदार रहने की प्रार्थना बादशाह ने स्वीकृत की। (अगस्त २२) आमेर का सवाई जयसिंह आगरा का सूबेदार नियुक्त किया गया। (सितम्बर) सवाई जयसिंह ने मोहकमसिंह के विरुद्ध सैनिक अभियान शुरू किया। (अक्टूबर २५) मुगल सेना थून की गढ़ी पर पहुंच गई। (नवम्बर १८) मुगल सेना ने थून के किले पर कब्जा किया। (दिसम्बर ८) बादशाह ने नाहरखां को अजमेर की दीवानी और सांभर की फौजदारी तथा उसके भाई रुहुल्लाखां को गढ़ बीटली की किलेदारी दी। (दिसम्बर २८) राठौड़ों ने अजमेर पहुंचकर नाहरखां तथा उसके भाई रुहुल्लाखां को मार डाला।
१७२३	(मार्च १८) सवाई जयसिंह ने डीग पहुचकर बदनसिंह को चूड़ामण की जागीर का स्वामी बना दिया तथा उसे ठाकुर की पदवी दी। (अप्रेल ४) बादशाह ने अजीतसिंह के विरुद्ध सेना भेजी। (जून ५) बादशाह ने नागौर का परगना राव इन्द्रसिंह को वापस दे दिया। (जून १७) महाराजा अजीतसिंह द्वारा गढ़ बीटली (अजमेर) में रखी सेना मुगलों द्वारा घेरली गयी और लगभग डेढ़ माह बाद मुगलों का उस पर कब्जा हो गया। (जून) हैदरकुलीखां ने सांभर पर कब्जा किया। (अगस्त) अजीतसिंह ने अजमेर पर मुगलों का अधिकार स्वीकार किया। जोधपुर नरेश अजीतसिंह को मुगल सेना द्वारा नागौर सांभर व डीडवाना ले लेने पर सन्धि करनी पड़ी। जिसके अनुसार अजीतसिंह को १४ परगनों पर से अधिकार छोड़ना पड़ा। उदयपुर के महाराणा संग्रामसिंह द्वितीय ने मेरवाड़ा पर हमला किया।
१७२४	(जून २३) जोधपुर का महाराजा अजीतसिंह अपने पुत्र बख्तसिंह द्वारा मारा गया। (जुलाई १७) अभयसिंह के जोधपुर की राजगद्दी पर बैठने के अवसर पर बादशाह ने उसे ई० सन् १७२३ में जब्त किए १४ परगने वापस लौटा दिए। (दिसम्बर) हैदरकुलीखां अजमेर की सूबेदारी से हटा। मेवाड़ पर मराठों का हमला हुआ। मराठों का राजस्थान में प्रथम बार प्रवेश हुआ।

ई० सन्	घटना
१७२५	(अप्रैल) भरतपुर नरेश बदनसिंह ने महाराजा सवाई जयसिंह को इकरार लिखकर दिया कि वह महाराजा के दरबार में उपस्थित रहा करेगा व ८३ हजार रुपये सालाना पेशकश के रूप में देगा लेकिन यह इकरार स्थाई नहीं रह सका।
	आमेर नरेश सवाई जयसिंह ने दिल्ली में जंतर मंतर बनवाये।
	(अक्टूबर) जोधपुर नरेश ने बख्तसिंह को "राजाधिराज" की पदवी अ. नागोर का परगना देकर अलग राज्य स्थापित किया।
	आमेर नरेश जयसिंह ने मारवाड़ पर हमला किया।
	(नवम्बर २२) जोधपुर नरेश अभयसिंह गुजरात के लिए रवाना हुआ।
१७२६	(फरवरी) मराठों ने मेवाड़ के कुछ गांवों (मालवा की सीमा) को लूटा।
	(मार्च १४) उदयपुर के महाराणा आमेर के जयसिंह को पत्र लिखकर मराठों के प्रति सावधान रहने को सचेत किया।
	जोधपुर नरेश अभयसिंह ने नागोर पर अधिकार कर अपने छोटे भाई बख्तसिंह को दे दिया।
	उदयपुर के महाराणा भीमसिंह ने शाहपुरा नरेश को राजाधिराज की पदवी दी।
१७२७	(नवम्बर २५) जयपुर नगर की नींव सवाई जयसिंह ने रखी।
	मेवाड़ के राणा अमरसिंह ने गुजरात के महीकाठा का ईडर प्रदेश मुगलों से वापिस ले लिया।
१७२८	(नवम्बर) मराठों ने बांसवाड़ा व डूंगरपुर राज्य को लूटा।
	सवाई जयसिंह ने डीग पर कब्जा किया।
	जोधपुर के महाराजा अभयसिंह के भाई आनन्दसिंह व रामसिंह ने ईडर पर अधिकार किया। ईडर महाराजा अभयसिंह की मनसब में था लेकिन उसने कोई आपत्ति नहीं की।
१७२९	(सितम्बर) करवड़ का दलेलसिंह बूंदी की राजगद्दी पर जयपुर नरेश की सहायता से बैठा।
	(मार्च २६) रामपुरा का परगना जयपुर के महाराजकुमार माधोसिंह को महाराणा द्वारा दिया गया।
	(अप्रैल) मराठा सरदारों ने डूंगरपुर व बांसवाड़ा को लूटा व चौथ वसूल की।
	(अक्टूबर) बादशाह ने सवाई जयसिंह को पुनः मालवा का सूबेदार बनाया।
	महाराजा अभयसिंह ने कोटा से गुसाईं जी को बुलाकर उसको चौपासनी गांव दिया तथा उसके लिए मारवाड़ के प्रत्येक गांव के पीछे एक रुपया लाग का नियत किया।
१७३०	(अप्रैल ६) कुसयल के युद्ध में बून्दी का राव बुद्धसिंह करवड़ के सालमसिंह से हारा।

ई० सन	घटना
१७३३	मराठों ने कोटा पर आक्रमण किया।
१७३४	(फरवरी) जोधपुर नरेश अभयसिंह ने अपने भाई नागौर के बख्तसिंह को बीकानेर नरेश सुजानसिंह के विरुद्ध सीमा सम्बन्धी विवाद में सहायता की। बीकानेर नरेश को विवश होकर संधि करनी पड़ी।
	(अप्रैल १०) मल्हारराव होल्कर और राणोजी सिंधिया ने बूंदी पर अधिकार कर बुद्धसिंह को पुनः राजगद्दी पर बैठाया।
	(जून १६) नागोर के बख्तसिंह ने बीकानेर पर फिर चढ़ाई की लेकिन विफल होकर लौटा।
	(जुलाई १७) मराठों का मुकाबला करने के लिये मेवाड़ की सीमा पर हुरड़ा स्थान पर राजस्थान के ५ नरेशों–जयपुर, उदयपुर, कोटा बीकानेर, और किशनगढ़ का सम्मेलन हुआ तथा एक अहदनामा लिखा गया।
	(नवम्बर) मुगल सेनापति खान-ए-दौरान और वजीर कमरूद्दीन ने मराठों को राजस्थान से निकालने के लिए हमला किया लेकिन हार कर लौट गये।
	जयपुर में गोविन्द देवजी के मन्दिर की स्थापना हुई।
	बूंदी की कछवाहा रानी ने प्रतापसिंह हाड़ा को पूना सहायता लेने के लिये भेजा।
१७३५	(फरवरी २८) मराठों ने सांभर को लूटा।
	(मार्च) सवाई जयसिंह ने मरहठों से मित्रता करली।
	(अप्रेल) मराठे राजस्थान से दक्षिण की ओर लौटे।
	(मई ६) पेशवा बाजीराव की माता राधाबाई उदयपुर पहुंची।
	(मई १८) राधाबाई नाथद्वारा पहुंची।
	(जून) राधाबाई जयपुर पहुची।
	(अगस्त) सवाई जयसिंह ने मराठों का साथ देने का निश्चय किया।
	(अक्टुबर) बाजीराव पेश्वा उत्तरी भारत के लिये रवाना हुवा।
	बाजीराव डूंगरपुर ठहरा तब महारावल ने उसे तीन लाख रुपये देकर विदा किया।
१७३६	सवाई जयसिंह ने बाजीराव पेशवा से धोलपुर में संधि कर पेशवा द्वारा बादशाही प्रदेश को न लूटने का वचन देने पर उसे मालवा की सूबेदारी दी।
	(फरवरी ८) पेशवा चौथ वसूल करने के उद्देश्य से उदयपुर पहुंचा।
	महाराणा उदयपुर ने सर्व प्रथम पेशवा (मरहठों) को ७ लाख रुपये चौथ के दिये।
	(मार्च ४) पेशवा सवाई जयसिंह से किशनगढ़ में मिला।
	(मई) पेशवा दक्षिण को लौटा।

ई० सन्	घटना
१७३६	(अक्टुबर) पेशवा दिल्ली पर धावा करने के निमित्त उत्तरी भारत के लिए रवाना हुआ।
	चूरू के ठाकुर संग्रामसिंह से बीकानेर नरेश ने जागीर छीनी।
	मल्हारराव होल्कर ने गुजरात से आगे बढ़कर मारवाड़ पर चढाई की।
	बीकानेर नरेश जोरावरसिंह ने अभयसिंह द्वारा बीकानेर राज्य में स्थापित थाने उठवा दिए।
१७३७	(जनवरी) मराठी सेना ने मालवा पर कब्जा किया।
	(मार्च ३०) बाजीराव दिल्ली पहुंचा।
	(अप्रेल ५) बाजीराव जयपुर वापस गया।
	(मई २६) जोधपुर नरेश अभयसिंह गुजरात की सूबेदारी के पद से हटाया गया।
	(अगस्त ३) पेशवा एवं जयसिंह को क्रमशः मालवा के नायब एवं सूबेदार के पद से मुक्त किया गया।
	(सितम्बर १३) उदयपुर के महाराणा ने बादशाह के पास अपना वकील भेजकर परगना फूलिया को अपने नाम लिखा लिया।
	नवलसिंह द्वारा नवलगढ़ (जयपुर राज्य) बसाया गया।
	मराठों के वकील कोटा नगर में रहने लगे।
	जोधपुर के महाराजा अभयसिंह ने भिनाय (अजमेर जिला) पर कब्जा किया।
	बदनसिंह जाट ने मुगलों को पेशवा बाजीराव के विरुद्ध सहायता दी।
१७३८	(जनवरी) बाजीराव पेशवा ने कोटा के महाराव दुर्जनशाल पर मुगलों को भोपाल के युद्ध में सहायता करने के कारण दस लाख रुपये का अर्थदण्ड लगाया।
	(दिसम्बर १) नादिरशाह ने सिंधु नदी पार की।
१७३९	(फरवरी २०) नादिरशाह दिल्ली पहुंचा।
	(अप्रेल २०) नादिरशाह ने दिल्ली छोड़ा।
	(अप्रेल २५) नादिरशाह ने भारतीय शासकों को आदेश जारी किया कि वे बादशाह मुहम्मदशाह की आज्ञाओं का पालन करें।
	(जून) बख्तसिंह ने मेड़ता पर अधिकार करने के लिए चढाई की। जोधपुर नरेश सेना लेकर गया लेकिन दोनों भाईयों में समझौता हो गया।
	(जुलाई २८) उम्मेदसिंह ने कोटा के महाराव दुर्जनशाल व गुजरात के सूबेदार की सहायता से बूंदी पर आक्रमण किया।
	जोधपुर नरेश अभयसिंह ने बीकानेर पर चढ़ाई की।
	बीकानेर नरेश जोरावरसिंह ने जोहियों को हराकर भटनेर पर कब्जा किया।

ई० सन	घटना
१७४०	(अप्रेल) जोधपुर नरेश अभयसिंह ने दूसरी बार बीकानेर पर चढ़ाई कर उसे लूटा।
	नागौर के बख्तसिंह ने अपने भाई अभयसिंह से विद्रोह कर मेड़ता पर अधिकार किया। जयपुर नरेश जयसिंह बीकानेर नरेश को अप्रत्यक्ष रूप से सहायता देने के लिए जोधपुर की ओर सेना लेकर बढ़ा। जोधपुर नरेश अभयसिंह बीकानेर का घेरा उठाकर जोधपुर लौट गया।
	(जुलाई) जयपुर नरेश सवाई जयसिंह और जोधपुर नरेश अभयसिंह के बीच संधि हुई। जयपुर नरेश जोधपुर नरेश से काफी धन वसूल कर लौट गया। उदयपुर के महाराणा जगतसिंह और कोटा के महाराव दुर्जनशाल से बीकानेर नरेश जोरावरसिंह ने वांधनवाड़े में मुलाकात की।
१७४१	(मई) जोधपुर नरेश अभयसिंह और उसके भाई बख्तसिंह के बीच समझौता हुआ।
	(मई १२) पेशवा जयपुर नरेश जयसिंह से धोलपुर में मिला।
	(मई १६) उपरोक्त के बीच बातचीत होती रही।
	(मई २८) जोधपुर नरेश अभयसिंह व उसके भाई बख्तसिंह द्वारा जयपुर नरेश जयसिंह के साथ गगवाणा के मैदान में युद्ध हुआ जिसमें जोधपुर की सेना ने जयपुर की सेना का काफी नुकसान पहुंचाया लेकिन अंत में विजयी जयपुर रहा।
	(जुलाई) जयपुर व जोधपुर के बीच संधि उदयपुर के महाराणा जगतसिंह ने बीच बचाव कर करवा दी।
	राजस्थान के प्रमुख नरेश नाथद्वारा में इकट्ठे हुवे।
	महाराव दुर्जनशाल ने शाही सेना प्राप्त करने के लिये अपना दूत दिल्ली भेजा।
	बीकानेर नरेश जोरावरसिंह ने चूरू पर अधिकार किया। मराठों ने उदयपुर तथा बांसवाड़ा राज्य पर आक्रमण किया। जयपुर की सेना ने खेतड़ी पर कब्जा किया।
१७४२	(मार्च) पेशवा ने मल्हारराव व राणोजी सिन्धिया को कर इकट्ठा करने मारवाड़ भेजा लेकिन वे कुछ भी कर इकट्ठा न कर सके।
१७४३	(सितम्बर २१) जयपुर नरेश सवाई जयसिंह की मृत्यु हुई।
	जोधपुर की सेना ने अजमेर के गढ़ बिठली पर कब्जा किया।
१७४४	उदयपुर के महाराणा जगतसिंह तथा कोटा के महाराव दुर्जनशाल ने जयपुर का राज्य माधोसिंह को और बूंदी उम्मेदसिंह को दिलाने के विचार से सेना सहित प्रस्थान किया तब बून्दी से दलेलसिंह और जयपुर से ईश्वरीसिंह भी सामना करने गये।
	(जुलाई १०) कोटा नरेश ने बूंदी का घेरा डाला।

ई० सन्	घटना
१७४४	(जुलाई २८) कोटा का वून्दी पर कब्जा हुआ ।
	(दिसम्वर १६) जामोली (जहाजपुर के निकट) की संधि जयपुर नरेश ईश्वरीसिंह व माधोसिंह के बीच हुई ।
	वूंदी को जीतने के बाद कोटा नरेश दुर्जनशाल मथुराधीश की प्रतिमा वूंदी से कोटा ले गया ।
	जोधपुर नरेश अभयसिंह अजमेर गया और जयपुर नरेश से संधि की ।
	वीकानेर नरेश जोरावरसिंह की माता ने कोलायत में चतुर्भुज के मंदिर की प्रतिष्ठा करवाई तव महाराजा ने चांदी का तुला दान किया ।
१७४५	(जुलाई २०) वूंदी नरेश उम्मेदसिंह ने जयपुर की सेना को विचोड (वूंदी) के युद्ध में हराया ।
१७४६	सूरजमल जाट माधोसिंह की सहायता के लिए जयपुर गया तथा मराठों को हराया ।
	धार का आनंदराव वांसवाड़ा पर आक्रमण कर धन माल ले गया ।
	कोटा व जयपुर की सेना के बीच डवलाना के युद्ध में कोटा नरेश हारा ।
	मल्हारराव होल्कर डूंगरपुर गया तव महारावल ने कुछ रुपये दे उसको वहां से विदा किया ।
	उदयपुर के महाराणा ने अपने सरदारों से मुचलके लिखवाय कि व अपराधियों को आश्रय नहीं देंगे ।
	(अक्टुवर ४) उदयपुर के महाराणा ने नाथद्वारा में कोटा व वूंदी के शासकों से संधि की ।
१७४७	(फरवरी ६) जयपुर के दीवान राजमल खत्री की मृत्यु हुई ।
	(मार्च १) जयपुर के ईश्वरीसिंह से कोटा व उदयपुर नरेशों का माधवसिंह के लिए राज महल के मैदान में युद्ध हुआ । ईश्वरीसिंह की विजय हुई ।
	उदयपुर के महाराणा ने पेशवा से सहायता प्राप्त करने के लिए अपना वकील पूना भेजा ।
	(जुलाई) जोधपुर नरेश ने वीकानेर पर सेना भेजी लेकिन वाद में संधि हो गई ।
	वीकानेर नरेश गजसिंह ने उपद्रवी विदावतों को मरवाया ।
	महाराजा गजसिंह ने वीकमपुर पर अधिकार किया ।
	डूंगरपुर का महारावल शिवसिंह साहूराजा से सतारा जाकर मिला ।
	जोधपुर की सेना की सहायता से वीकानेर के महाराजा गजसिंह के भाई अमरसिंह ने वीकानेर पर चढ़ाई की ।
	राजस्थान में भंयकर अकाल पड़ा ।
	मल्हारराव होल्कर महाराजा अभयसिंह से मिलने अजमेर गया ।
	वीकानेर नरेश गजसिंह नागोर के स्वामी वख्तसिंह के लिए सेना लेकर गया ।

ई० सन्	घटना
१७४८	(जनवरी) अहमदशाह दुर्रानी (अब्दाली) के पंजाब पर चढ़ाई करने पर जोधपुर नरेश ने अपने भाई बख्तसिंह को बादशाह की सहायता के लिए दिल्ली भेजा ।
	(फरवरी ८) बादशाह के आदेश से बख्तसिंह ने सरहिन्द के युद्ध में अफगानों को हरा कर लाहोर पर पुनः अधिकार किया ।
	(मार्च ३) जयपुर नरेश ईश्वरीसिंह व अहमदशाह अब्दाली के बीच मानपुर में युद्ध हुआ । अब्दाली हारा ।
	(मई) कोटा महाराव ने सिन्धिया को दो लाख देने का इकरार किया ।
	(मई २१) पेशवा दिल्ली से लौटते वक्त निवाई में ठहरा व ईश्वरीसिंह व माधोसिंह के बीच समझौता कराने का प्रयत्न किया ।
	(जुलाई) मराठों ने जयपुर पर हमला किया ।
	(जुलाई १५) बख्तसिंह गुजरात का सूबेदार नियुक्त किया गया ।
	(अगस्त) बगरू गांव के पास माधवसिंह कछवाहा, ने मल्हारराव होल्कर, उदयपुर के महाराणा तथा जोधपुर के अभयसिंह राठौड़ की सम्मिलित सेना के साथ जयपुर के ईश्वरीसिंह से युद्ध किया । ईश्वरीसिंह इस युद्ध में हारा व होल्कर की शर्तों को स्वीकार कर लिया ।
	(अक्टूबर २३) उम्मेदसिंह ने कोटा के दुर्जनशाल की सहायता से बूंदी पर कब्जा किया ।
	सूरजमल ने सआदत अलीखां को पलवल में हराया ।
	अजमेर के सूबेदार सआदतअलीखां ने मारवाड़ पर आक्रमण किया लेकिन हारकर लौट गया ।
१७४९	(जून २१) जोधपुर नरेश अभयसिंह की मृत्यु हो जाने पर अजमेर की सूबेदारी सलावतखां को दी गई ।
	जोधपुर के रामसिंह व नागोर के बख्तसिंह के बीच राजगद्दी के लिए झगड़ा हुआ ।
	(अगस्त १७) जयपुर नरेश ईश्वरीसिंह बूंदी गया ।
	जैसलमेर राज्य का बीकमपुर पर कब्जा हुआ ।
	बीकानेर नरेश राजसिंह ने अमरसिंह को रीणी से निकाल बाहर किया ।
१७५०	(जनवरी १) सूरजमल जाट ने मीर बख्सी सलावतखां को सोमापुर (नारनोल के निकट) के युद्ध में हराया जिसके कारण उसे जाटों से संधि करनी पड़ी ।
	(अप्रेल १४) बख्तसिंह व रामसिंह की सेना के बीच पीपाड़ (जोधपुर राज्य) के निकट युद्ध हुवा जिनमें रामसिंह जीता । इस युद्ध में रामसिंह की सहायता जयपुर नरेश ईश्वरीसिंह ने तथा बख्तसिंह की सहायता मीरबख्सी सलावत खां ने की ।

ई० सन्	घटना
१७५०	(अप्रेल १६) अजमेर के सूबेदार सलावत खां ने बख्तसिंह का साथ छोड़कर रामसिंह से संधि की ।
	(अगस्त) जयपुर नरेश ईश्वरींसिंह ने अपने दीवान केशवदास को विष दिला कर मरवा डाला ।
	बीकानेर नरेश गजसिंह बख्तसिंह की सहायता के लिये गया ।
	(सितम्बर १३) सूरजमल रामचतौनी के युद्ध में वजीर सफदरजंग की ओर से अहमद बंगश (अफगानों) से लड़ा । अफगान इस युद्ध में जीते ।
	(अक्टुबर २८) नागोर के बख्तसिंह ने मेड़ता पर चढ़ाई की लेकिन उस पर कब्जा नहीं कर सका ।
	(नवम्बर २६) बख्तसिंह व रामसिंह राठौड़ के बीच लूनियावास (मेड़ता) का युद्ध हुआ जिसमें रामसिंह हारा ।
	(दिसम्बर १) नेनवा (बूंदी राज्य) पर मल्हारराव होल्कर का कब्जा हो गया ।
	मराठों ने जयपुर पर हमला किया ।
	(दिसम्बर १२) जयपुर नरेश ईश्वरीसिंह ने आत्म हत्या की ।
	लोकेन्द्रसिंह गोहद का प्रशासक बना ।
१७५१	(जनवरी १०) जयपुर में मराठों के विरुद्ध दंगे हुए । लगभग १५०० मराठे मारे गए व १००० घायल हुवे ।
	(मार्च) सूरजमल जाट ने वजीर सफदरजंग को बंगश के विरुद्ध रुहेलखंड के युद्ध में सहायता की ।
	(अप्रेल) जोधपुर के महाराजा रामसिंह और बख्तसिंह के बीच सलावास में युद्ध हुआ । बख्तसिंह की जीत हुई ।
	(जून २६) बख्तसिंह ने जोधपुर पर अधिकार किया ।
	पालनपुर नगर की चार दीवारी बनाई गई ।
	क्यामखानियों ने सिन्धी और बलोचियों की सेना की सहायता से फतहपुर पर कब्जा किया ।
	जयपुर नरेश सवाई माधोसिंह ने सवाई माधोपुर बसाया ।
	केशरीसिंह ने बिसाऊ (जयपुर राज्य) बसाया ।
१७५२	(मई) जयअप्पा ने अजमेर पर कब्जा किया ।
	(मई १६) बीकानेर राज्य का हिसार पर कब्जा हुआ ।
	(जुलाई १८) जोधपुर नरेश बख्तसिंह ने अजमेर पर कब्जा किया ।
	(सितम्बर ३) ईस्वी सन् का पंचाग संशोधित किया जाकर इस तिथि को १४ सितम्बर माना गया अर्थात् पंचांग के ११ दिन घटाये गये ।

ई० सन	घटना
१७५२	(अक्टूबर २०) बादशाह ने भरतपुर के बदनसिंह को "महेन्द्र" की पदवी देकर उसे "राजा" बना दिया और सूरजमल को "राजेन्द्र" की पदवी देकर "कुंवर बहादुर" बना दिया।
१७५३	(अप्रेल २३) सूरजमल जाट ने घासहरे के जागीरदार को हराकर उस पर कब्जा किया।
	(मई) सूरजमल ने दिल्ली को लूटा।
	बीकानेर नरेश गजसिंह को बादशाह ने सात हजारी मनसब, महामरातीब का सम्मान एवं "राजराजेश्वर", "महाराजाधिराज" और "महाराज शिरोमणी" की पदवियां दी।
	जयपुर नरेश माधवसिंह ने मराठों को दस लाख रुपये खिराज के दिए।
१७५४	(जनवरी) मराठों ने डीग, भरतपुर व कुम्भेर के किले का घेरा डाला लेकिन विफल होकर लौटे।
	(मई) सूरजमल जाट से सन्धि के निमित्त जयअप्पा ने मध्यस्थता की।
	(मई १८) मरहटों ने कुम्भेर का घेरा उठा लिया।
	(जून २३) पेशवा ने जयअप्पा सिन्धिया को मारवाड़ की राजगद्दी रामसिंह को दिलाने के लिए भेजा।
	(सितम्बर १४) जोधपुर नरेश विजयसिंह, बीकानेर नरेश गजसिंह व किशनगढ़ नरेश बहादुरसिंह गांगरडा के युद्ध में जयअप्पा से हारे।
	(सितम्बर १७) जयअप्पा की सहायता से रामसिंह ने मेड़ता को लूटा।
	(अक्टूबर ३१) रामसिंह ने नागोर का घेरा डाला लेकिन सफलता प्राप्त न कर सका।
	विजयसिंह बीकानेर जाकर रहा।
१७५५	(फरवरी २१) सिन्धिया ने अजमेर पर कब्जा किया।
	(मार्च ६) उदयपुर के महाराणा राजसिंह द्वितीय ने मराठों से समझौता किया जिसके अनुसार महाराणा ने मराठों को २५ लाख रुपया वार्षिक देना तय किया।
	(जुलाई २५) जयअप्पा सिन्धिया को ताऊसर (नागोर) में महाराजा विजयसिंह के ईशारे पर मार डाला गया।
	(अक्टूबर १०) जयपुर व जोधपुर की सम्मिलित सेना को मराठों ने चंडोल के पास हराया।
	(अक्टूबर १६) डीडवाना के युद्ध में जयपुर व जोधपुर की सेना मरहठों से हारी। रामसिंह ने सिवाणा, मारोठ, मेड़ता, सोजत, परबतसर, सांभर व जालोर पर अधिकार कर लिया लेकिन १७५६ में महाराजा विजयसिंह ने वापिस छीन लिए।
	बीकानेर नरेश गजसिंह विजयसिंह को लेकर जयपुर गया।

ई० सन्	घटना
१७५५	गोपालसिंह द्वारा खेतड़ी कस्बा (जयपुर राज्य) बसाया गया।
१७५६	(फरवरी २) जयपुर व जोधपुर नरेशों ने विवश होकर मराठों से सन्धि कर उनको युद्धक्षति देना तय किया।
	(मार्च २३) जाटों ने अलवर के दुर्ग रक्षक को लालच देकर दुर्ग पर कब्जा किया।
	(नवम्बर २६) बांसवाड़ा के महारावल पृथ्वीसिंह का लूणावाड़ा के राणा वख्तसिंह से युद्ध हुआ।
	पेशवा ने मल्हारराव होल्कर व रघुनाथराव को राजस्थान के राजाओं से धन वसूल करने के लिए भेजा।
	बीकानेर के गजसिंह ने भाटियों की सहायता के लिए सेना भेजी।
	रामसिंह राठौड़ ने सिंधिया से सहायता लेकर अजमेर से चलकर मारवाड़ पर हमला किया लेकिन वह हारकर लौट गया।
	बीकानेर नरेश गजसिंह ने नारणोंतों व बीदावतों को अपने अधीन किया।
	जैसलमेर के रावल अखैसिंह ने जैलसमेर टकसाल खोली तथा अखेशाही रुपया चलाया।
१७५७	(२८ फरवरी) अहमदशाह दुर्रानी की सेना ने मथुरा लूटा।
	मराठा सरदार रघुनाथराव ने जयपुर राज्य पर आक्रमण किया।
	बीकानेर नरेश गजसिंह ने नोहर का गढ़ बनवाया।
	प्रतापगढ़ के महारावत ने दिल्ली जाकर बादशाह से राज्यचिन्ह, निशान रखने के सम्मान के साथ सालीम शाही सिक्का बनाने की अनुमति ली।
१७५८	(अगस्त १६) जनकोजी तथा मल्हारराव की कोटा के समीप भेंट हुई।
	मारवाड़ के कुछ सरदारों का पोकरण ठाकुर देवीसिंह की अध्यक्षता में महाराजा से मनमुटाव हुआ।
	जनकोजी सिंधिया ने राजस्थान पर आक्रमण किया।
	मराठों का अजमेर पर कब्जा हुआ।
	बादशाह ने माधवसिंह को रणथम्भोर का किला दिया। चौमू का जोधसिंह वहां का किलेदार नियुक्त किया गया।
१७५६	(नवम्बर १८) कांकोड़ के मैदान में जयपुर व होल्कर की सेना के बीच युद्ध हुआ। यह युद्ध होल्कर ने रणथम्भोर के किले पर कब्जा करने के लिए किया।
	(दिसम्बर) मल्हारराव होल्कर ने बरवाडा का दुर्ग रतनसिंह कछवाहा से छीनकर जगतसिंह राठौड़ को दे दिया।
	कोटा पर मराठों ने घोड़ी बराड़ नामक कर लगाया।
	बीकानेर नरेश गजसिंह ने महाजन का बटवारा किया।
१७६०	(फरवरी २) जोधपुर के महाराजा विजयसिंह का गुरु आत्माराम मारा गया।

ई० सन्	घटना
१७६०	(फरवरी ७) अहमदशाह अब्दाली ने डीग को घेरा डाला।
	(जून ७) सूरजमल जाट भाऊ साहब से मिला और उसे सहायता देने का इस शर्त पर वचन दिया, कि मराठा सेना के मार्ग में पड़ने वाले उसके प्रदेश को किस प्रकार की क्षति न होने दी जावेगी और न उससे कर ही मांगा जावेगा।
	महाराजा विजयसिंह ने पोकरन, रास, आसोप व निमाज के ठाकुरों को गिरफ्तार किया।
	महाराजा विजयसिंह का चांपावत सबलसिंह आदि विद्रोही सरदारों के साथ बिलाड़ा में युद्ध हुआ।
	महाराजा विजयसिंह ने जोधपुर नगर में गंगश्यामजी का मन्दिर बनवाया।
	जयपुर के सवाई माधोसिंह ने कोटा पर चढ़ाई की।
	मल्हारराव होल्कर कोटा राज्य में होकर गुजरा।
	शाहपुरा नरेश ने अपने सिक्के ढाले जो ग्यारह संदिया कहलाते हैं।
	बीकानेर नरेश गजसिंह ने भट्टी हुसैन पर सेना भेजी।
	गजसिंह ने अनूपगढ़ तथा मौजगढ़ पर चढ़ाई की।
१७६१	(जनवरी १४) पानीपत का तीसरा युद्ध हुआ। इसमें मरहठे हारे।
	(नवम्बर ३०) जयपुर व कोटा की सेनाओं के बीच युद्ध में मरहठा सरदार मल्हारराव होल्कर ने कोटा की सहायता की। जयपुर का माधवसिंह पूर्णतः परास्त हुआ।
	(जून २२) भरतपुर नरेश सूरजमल ने आगरा के किले पर कब्जा किया।
	लोकेन्द्रसिंह ने अपने आपको गोहद का शासक घोषित किया तथा ग्वालियर पर कब्जा किया।
	जोधपुर नरेश विजयसिंह ने विद्रोही सरदारों को दबाया।
	जोधपुर के महाराजा विजयसिंह ने अपने चांदी के सिक्के चलाये।
	जोधपुर की सेना ने अजमेर पर कब्जा करने का विफल प्रयत्न किया।
	होल्कर की सेना ने उणियारा पर कब्जा किया लेकिन जयपुर नरेश ने शीघ्र ही वापिस कब्जा कर लिया।
	कोटा के महाराव की सहायता के लिए जयपुर नरेश ने सेना भेजी।
१७६२	मल्हारराव होल्कर ने प्रतापगढ़ से धन वसूल किया।
	मल्हारराव होल्कर ने महाराणा के चम्बल के निकट के ५ परगनों पर अधिकार कर लिया।
	महाराजा विजयसिंह की सेना ने जालोर पर चढ़ाई की।
	भरतपुर नरेश सूरजमल ने डीग व भरतपुर में टकसालें खोलीं व अपने सिक्के चलाये।
	बीकानेर नरेश गजसिंह का जोहियों और दाऊद पुत्रों से नोहर में युद्ध हुआ।
	नोहर पर बीकानेर का पुनः कब्जा हो गया।

ई० सन्	घटना
१७६३	(दिसम्बर २५) सूरजमल जाट मुगल सेनापति नजीब से दिल्ली के निकट लड़ता मारा गया।
	मल्हारराव होल्कर ने उदयपुर के महाराणा से अपने बकाया ५१ लाख रुपये वसूल किये।
१७६४	(फरवरी १६) भरतपुर नरेश सूरजमल ने तीन मास तक दिल्ली का घेरा रखकर उठा लिया।
	भरतपुर नरेश सूरजमल मुगलों द्वारा मारा गया।
	बीकानेर नरेश महाराजा गजसिंह से वहां के सरदारों की अनबन हुई।
१७६५	(जुलाई) महादजी सिन्धिया ने कोटा नरेश से १६ लाख रुपये की खण्डनी तय कर ६ लाख वसूल किये।
	(अक्टुबर) उदयपुर के महाराणा ने शाहपुरा के उम्मेदसिंह को काछोला परगना दिया।
	(दिसम्बर) जवाहरसिंह ने अपनी सिक्ख सेना के द्वारा जयपुर राज्य में लूटमार की।
	जोधपुर नरेश विजयसिंह ने विद्रोही चांपावत सरदारों द्वारा बुलाये गये खानजी मरहठा के साथ युद्ध कर उन्हें हराया। मरहठे अजमेर की ओर तथा चांपावत सांभर की ओर चले गये।
	राघोजी ने गोहद का घेरा डाला।
	उदयपुर के महाराणा ने ५ लाख रुपये सिन्धिया के दीवान को दिये।
१७६६	(फरवरी १४) जवाहरसिंह जाट व नजफखां के बीच संधि हुई।
	(मार्च १३) जवाहरसिंह ने धोलपुर के निकट होलकर की सेना का सामना किया व धोलपुर जीता।
	(मई) जोधपुर नरेश विजयसिंह ने वैष्णव धर्म अपनाया तथा अपने राज्य में मांस व मदिरा का प्रचार बिल्कुल रोक दिया।
	(नवम्बर १) रघुनाथराव ने गोहद पर निष्फल हमला किया जिसमें उसके १००० सैनिक मारे गये।
	बीकानेर नरेश गजसिंह ने राजगढ़ (बीकानेर राज्य) बसाया।
	मेवाड़ के महाराणा ने २६ लाख रुपये खण्डनी के देने तय कर पेशवा से समझौता किया।
	जवाहरसिंह ने भरतपुर स्थित गुसाइयों की सम्पत्ति अपने अधिकार में करली जिससे उसे ३० लाख रुपये मिले।
१७६७	(अगस्त) जवाहरसिंह ने कालपी जिला (उत्तर प्रदेश) पर कब्जा कर लिया।
	(नवम्बर ६) भरतपुर नरेश जवाहरसिंह और जोधपुर नरेश विजयसिंह पुष्कर में मराठों के विरुद्ध पारस्परिक सहायता देने के लिये मिले।

ई० सन्	घटना
१७६७	(दिसम्बर १४) भरतपुर तथा जोधपुर की सेना माउन्डा स्थान पर जयपुर व मरहठों की सेना से हारी।
	रघुनाथराव पेशवा ने गोहद पर आक्रमण किया लेकिन गोहद नरेश ने ३ लाख देकर संधि करली।
	लोकेन्द्रसिंह गोहद का स्वतंत्रराजा मरहठों द्वारा मान लिया गया।
१७६८	(फरवरी २७) जयपुर नरेश माधोसिंह तथा जवाहरसिंह के बीच कामा के निकट युद्ध हुआ जिसमें जवाहरसिंह की हार हुई।
	(दिसम्बर) उदयपुर के सिन्धी और पठान सैनिक वेतन न मिलने पर महाराणा का विरोध करने लगे।
	प्रतापगढ़ का महारावत उदयपुर के महाराणा की सहायता के लिये गया।
	बीकानेर नरेश गजसिंह ने सिरसा और फतयाबाद पर सेना भेजी।
१७६९	(जनवरी १३) महाराणा अरिसिंह और महाराणा राजसिंह (द्वितीय) के पुत्र रतनसिंह की सेना के बीच उज्जैन में सिप्र नदी के किनारे युद्ध हुआ। माधवसिंह सिंधिया ने रतनसिंह का पक्ष लिया। इस युद्ध में मरहठों ने महाराणा अरिसिंह की सेना को हराया। झाला जालिमसिंह को मरहठों ने कैद कर लिया लेकिन बाद में ६०००० रुपये देकर छुड़वा लिया गया।
	(मई) महादजी सिंधिया ने उदयपुर घेर लिया।
	(जुलाई २२) माधवराव और महाराणा अरिसिंह के बीच संधि हुई।
	(जुलाई २१) माधवराव महाराणा से ६३॥ लाख रुपये लेकर मालवा लौट गया।
	मुगल सेनापति मिर्जा नजफखां ने भरतपुर जीता।
१७७०	(अप्रेल ६) सौख अडिग का युद्ध जाटों व मराठों के बीच हुवा। जिसमें जाट बुरी तरह हारे।
	(अप्रेल १७) मरहठा गोविन्दराव तथा जोधपुर नरेश की सेना ने गोड़वाड़ पर कब्जा कर लिया बाद में (अक्टुबर ७) मेवाड़ के महाराणा अरिसिंह ने मेवाड़ के आन्तरिक विद्रोह में उसको सहायता देने के फलस्वरूप गोड़वाड़ का परगना जोधपुर नरेश के कब्जे में ही रहना स्वीकार कर लिया।
	भीमसिंह ने बूंदी को जीतकर वहां का राजकोष, कपड़े, जेवर आदि कोटा पहुंचा दिये।
	महाराणा राजसिंह (द्वितीय) के पुत्र रतनसिंह ने कुम्भलगढ़ पर कब्जा कर लिया।
१७७१	(जनवरी) जालिमसिंह झाला कोटा के बालक महाराजा उम्मेदसिंह का संरक्षक नियुक्त किया गया।
	(अगस्त) देवगढ़ के जागीरदार जसवंतसिंह ने जयपुर से सेनापति समरू को मेवाड़ पर चढ़ाई करने भेजा। युद्ध हुआ लेकिन शीघ्र ही सुलह हो गई।

ई० सन्	घटना
१७७१	महाराणा ने सिन्धिया से संधि की जिसके अनुसार मेवाड़ के एक तिहाई भाग की आय मरहठों के कर्ज से मुक्त होने के लिये देना तय किया ।
	बूंदी नरेश उम्मेदसिंह ने सन्यास लिया तथा अपने राजकुमार अजीतसिंह को राज्य कार्य संभलाया ।
	बादशाह शाहआलम ने गोहद के लोकेन्द्रसिंह को महाराजाराणा की पदवी दी ।
१७७२	(फरवरी) महाराजा गजसिंह ने नाथद्वारे जाकर गोडवाड़ महाराणा अरिसिंह को लौटाने के संबंध में जोधपुर के महाराजा विजयसिंह को (अप्रेल) समझाया लेकिन वह नहीं माना ।
	अलवर राज्य ने राजगढ़ में टकसाल स्थापित की ।
	महाराणा अरिसिंह ने गोविन्दराव होल्कर से समझौता किया कि ३० वर्ष बाद जावर और अन्य क्षेत्र जो मराठों ने ले लिये थे वे पुन: लौटा दिये जावेगें लेकिन मराठो ने नहीं लौटाये ।
	बीकानेर नरेश गजसिंह ने विद्रोही जागीरदारों को दबाया ।
१७७३	(मार्च ६) उदयपुर का महाराणा अरिसिंह बूंदी के राव अजीतसिंह द्वारा मारा गया ।
	(मई) जयपुर नरेश पृथ्वीसिंह ने जाटों व मराठों की सहायता से मुगलों से युद्ध कर कामा दुर्ग वापिस ले लिया ।
	(अक्टुबर ३०) बरसाणा का युद्ध मिर्जा नजफखां और नवलसिंह के बीच हुआ । नजफ विजयी रहा ।
	कोटा राज्य के दक्षिणी भाग में पिंडारियों द्वारा लटमार की गई ।
	बीकानेर राज्य में मुहम्मद हुसेनखां का विद्रोह दबाया गया ।
	बीकानेर के महाराज कुमार राजसिंह ने विद्रोह किया ।
१७७४	(फरवरी १८) मिर्जा नजफ ने भरतपुर नरेश से आगरा खाली कराया ।
	(अप्रेल २४) मुगलसेना ने भरतपुर नरेश से वल्लभगढ़ दुर्ग ले लिया ।
	बादशाह ने माचेडी के प्रतापसिंह को स्वाधीन राजा बनाकर उसे "रावराजा" की पदवी दी ।
	मेडता की टकसाल चालू की गई ।
	कोटा का जालिमसिंह और बून्दी का दीवान सुखराम केशोराय पाटन में मिले और आपसी भाई चारे की शपथ ली ।
१७७५	(अप्रेल) नजफकुली खां ने कामा दुर्ग (जयपुर राज्य) जीता ।
	(जून १०) मुगल सेना ने नवलसिंह की सेना को गुहाना (डीग के निकट) के युद्ध में हराया । इस युद्ध के बाद राजपूतों व मरहठों ने नवलसिंह का साथ छोड़ दिया ।

ई० सन	घटना
१७७५	(अगस्त) रुहेला रहीमदाद ने डीग पर कब्जा किया लेकिन शीघ्र ही जाटों ने उसे मार भगाया।
	(अगस्त ७) शाही सनद से रायसिना गांव, जहां पर अब नई दिल्ली बसी है और जोधपुर नरेशों की परम्परागत जागीर में था, बीच में जब्त होकर वापस जोधपुर नरेश विजयसिंह को वापिस मिला।
	(नवम्बर २५) माचेडी नरेश प्रतापसिंह ने अलवर से भरतपुर के जाटों का कब्जा हटा कर उसे अपनी राजधानी बना अलवर राज्य की स्थापना की। बादशाह ने उसे जयपुर राज्य से स्वतंत्र मान लिया।
	मुगल सेना ने शेखावाटी पर आक्रमण किया।
१७७६	(जनवरी) मुगल सेना ने डीग दुर्ग पर आक्रमण किया लेकिन उस पर कब्जा नहीं कर सकी।
	(अप्रेल २९) रणजीतसिंह डीग छोड़कर कुम्भेर चला गया।
	(अप्रेल ३०) मिर्जा नजफ ने डीग दुर्ग में प्रवेश किया।
	मिर्जा नजफखां ने बरसाणा में भरतपुर के रणजीतसिंह को हराकर डीग पर कब्जा कर लिया तथा सिवाय भरतपुर परगने के समस्त जाट राज्य (मय धौलपुर) को अपने अधिकार में कर लिया। लेकिन सूरजमल की विधवा रानी की प्रार्थना पर वापस यह राज्य (भरतपुर परगने के १० परगने) दे दिया।
	अलवर नरेश प्रतापसिंह ने राजगढ़ टकसाम से चांदी के सिक्के जारी किये।
१७७७	अम्बाजी इंगलिया अपनी सेना सहित जयपुर राज्य की ओर आया।
१७७८	(जुलाई ७) अलवर नरेश प्रतापसिंह का मिर्जा नजफ से समझौता हुआ।
	(अगस्त ८) शाही सेना व जयपुर की सेना द्वारा प्रतापसिंह पर रसिया नामक स्थान पर हमला किया गया।
१७७९	(जनवरी) जयपुर के हल्दिया परिवार ने नजफ के डेरे में शरण ग्रहण की।
	(फरवरी १९) बादशाह ने जयपुर नरेश प्रतापसिंह का टीका किया तथा उसका सारा प्रदेश, जिसमें नारनौल शामिल था, लौटा दिया। प्रतापसिंह ने बादशाह को दो लाख रुपये दिये और आपसी समझौते से बीस लाख रुपये खिराज के देने तय किए।
	(मार्च) जयपुर के दीवान खुशालीराम बोहरा ने दौलतराम हल्दिया को अपना नायब व खुशालीराम हल्दिया को नजफ कुलीखां के पास वकील नियुक्त किया।
	(नवम्बर) नजफकुलीखां ने कालुण्ड पर हमला किया।
	(दिसम्बर २) गोहद के महाराज राणा लोकेन्द्र ने अंग्रेजों से मित्रता की संधि की।

ई० सन्	घटना
१७७६	जोधपुर की सेना ने कोट किराना (मेरवाड़ा) पर हमला किया लेकिन हारकर लौट गई ।
	भारत की प्राचीन दिग्विजय प्रथा के अनुसार जालमसिंह झाला ने कोटा के महाराव उम्मेदसिंह से टीक दौरा कराया ।
	कोटा नगर का शहर पनाह बनाया गया ।
	जालमसिंह ने शाहबाद को जीता ।
	जयपुर का दीवान खुशालीराम आमेर में गिरफ्तार कर बन्द कर दिया गया ।
१७८०	(मार्च ८) जयपुर के सवाई प्रतापसिंह ने खुशालीराम बोहरा को नजफ के पास भेजा कि वह वकील की हैसियत से नजफ से बातचीत कर खिराज का फैसला करे और अलवर के नरूकों के अतिक्रमण को रोके ।
	गोहद के महाराज राणा की सहायता के लिए अंग्रेजों ने २४०० सैनिक भेजे ।
	गोहद के महाराज राणा ने ग्वालियर का गढ़ जीता ।
	जोधपुर नरेश विजयसिंह ने बादशाह से अनुमति लेकर अपने नाम से विजय शाही चांदी के रुपए चलाए तब से ही जोधपुर व नागोर की टकसाल चालू हुई ।
	जयपुर पर मुगल सेना का आक्रमण हुआ ।
	जयपुर का दौलतराम हल्दिया दिल्ली में नजफखां की शरण में गया ।
	करौली नरेश मानकपाल ने अपने सिक्के चालू किये ।
१७८१	(फरवरी ४) लालसोट में जोधपुर व जयपुर की सम्मिलित सेना को मराठों ने हराया ।
	(मार्च) जयपुर के खुशालीराम बोहरा ने सेना अलवर के प्रतापसिंह को जयपुर राज्य से बाहर निकालने के लिए भेजी ।
	(जुलाई) खुशालीराम बोहरा पुनः जेल में डाल दिया गया ।
	(अक्टूबर) जोधपुर टकसाल में शुद्ध सोने की मोहर बनने लगी ।
	(अक्टूबर १३) ईस्ट इण्डिया कम्पनी व माधवराव सिन्धिया के बीच हुई सन्धि में सिन्धिया ने इकरार किया कि वह महाराणा लोकेन्द्रसिंह के राज्य तथा उसके कब्जे के ग्वालियर दुर्ग पर कोई आक्रमण नहीं करेगा जब तक कि राणा अंग्रेजों से हुई सन्धि का पालन करता रहेगा ।
१७८२	(मई १७) अंग्रेजों व सिन्धियों के बीच सालबाई की संधि हो जाने पर अंग्रेजों ने लोकेन्द्रसिंह का साथ छोड़ दिया अतः माधवराव सिंधिया ने गोहद व ग्वालियर लोकेन्द्र से छीन लिये ।
	रतनसिंह का समर्थक देवगढ़ का रावत राघवदास महाराणा के पक्ष में हुवा ।
	जयपुर नरेश प्रतापसिंह की कोटरियों पर अधिकार जमाने की कोशीश को रोकने के लिये जालिमसिंह ने एक बड़ी सेना भेजी ।

ई० सन्	घटना
१७८८	मराठों की सेना ने सिंगोली, निम्बाहेडा, जीरण और जावर पर पुनः कब्जा कर लिया ।
	(अगस्त) तुकोजी होल्कर उदयपुर रकम वसूल करने गया लेकिन कुछ भी वसूल न कर सका ।
	जोधपुर नरेश विजयसिंह ने किशनगढ़ का घेरा डाला । बाद में दोनों राज्यों के बीच मित्रता हो गई ।
	पाली (जोधपुर राज्य) में टकसाल चालू की गई ।
	मराठों ने पालनपुर पर आक्रमण किया ।
	(दिसम्बर २४) जोधपुर नरेश विजयसिंह का अजमेर दुर्ग पर कब्जा हुआ ।
१७८९	(मई २२) जयपुर व मराठों के बीच पाटण के पास साधारण युद्ध हुआ । इस युद्ध में मुसलमानों ने राजपूतों का साथ दिया ।
	(जून २०) जयपुर व मराठों के बीच घमासान युद्ध हुआ । राजपूत सेना हारी तथा पाटण के किले में जाकर शरण ली । राजपूतों की रजपूती इस युद्ध में समाप्त हो गई ।
	(अगस्त २१) मराठा सेना ने अजमेर का घेरा डाला ।
	(सितम्बर १०) मेड़ता में राठौडों व मराठों के बीच घमासान युद्ध हुआ ।
	(अक्टुबर २४) कुरावड के रावत अर्जुनसिंह ने उदयपुर राज्य के प्रधानमंत्री शोमचंद की हत्या कर दी ।
	अजमेर की टकसाल में चांदी का सिक्का बनना आरंभ हुवा ।
	महादजी सेना लेकर धोलपुर की ओर गया ।
१७९०	(मार्च) इस्माइल बेग ने राजपूतों के साथ मेल किया ।
	(जून २०) सिन्धिया की सेना ने जोधपुर नरेश, जयपुर नरेश व ईस्माइल बेग को पाटन के युद्ध में हराया ।
	(अगस्त २१) मराठों ने अजमेर शहर पर कब्जा कर तारागढ़ का घेरा डाला ।
	(सितम्बर १०) जोधपुर नरेश व मरहठों के बीच मेड़ता का युद्ध हुआ । जोधपुर नरेश विजयसिंह मरहठों से हारा ।
	जोधपुर नरेश विजयसिंह ने मराठों से संधि हो जाने पर, मराठों को अजमेर तथा ६० लाख रुपये देने तय किये । रुपयों के एवज में मारोठ, नांवा, मेड़ता, सोजत, सांभर व परवतसर की आमदनी सौंप दी ।
१७९१	(जनवरी ५) महादजी ने जोधपुर नरेश से सांभर में समझौता किया जिससे अजमेर व सांभर मरहठों को दे दिये
	(मार्च ७) अजमेर दुर्ग सिन्धिया के सुपुर्द कर दिया गया ।
	(अप्रेल १६) मेवाड़ के भावी प्रबंध हेतु महादजी व जालिमसिंह झाला के बीच समझौता हुआ ।

ई० सन्	घटना
१७६१	(अगस्त २२) मराठों ने अजमेर नगर पर कब्जा किया तथा शिवाजी नाना अजमेर का सूबेदार नियुक्त किया गया ।
	(सितम्बर ५) उदयपुर के महाराणा व महादजी नाहर मगरा में मिले । सलुम्बर के भीमसिंह ने चित्तौड़गढ़ पर अधिकार कर लिया ।
	(नवम्बर १७) महादजी की सेना ने चित्तौड़ पर कब्जा कर उदयपुर नरेश को दे दिया । रावत भीमसिंह ने चित्तौड़ का किला खाली किया ।
	जोधपुर नरेश विजयसिंह ने जालोर का पट्टा अपनी पासवान गुलाबराय के नाम कर दिया ।
	रामगढ़ सेठों का (शेखावाटी) कस्बा बसा ।
	जयपुर नरेश प्रतापसिंह की सलाह से बुद्धसिंह की कछवाहा राणी ने बूंदी में पुनः अपना राज्य जमाने के लिये मराठों को सहायतार्थ बुलवाया ।
१७६२	(जनवरी ५) महादजी ने महाराणा भीमसिंह से विदा ली । महादजी से जोधपुर तथा अन्य राज्यों के वकील भी मिले ।
	(जनवरी १८) जयपुर व अलवर नरेशों ने दौसा में तुकोजी होल्कर से समझौता किया ।
	(फरवरी) जोधपुर नरेश विजयसिंह ने अप्रसन्न सरदारो को बिसलपुर में मनाया ।
	(अप्रेल १३) महाराजा विजयसिंह के पौत्र भीमसिंह ने जोधपुर पर अधिकार किया ।
	(अप्रेल १६) जोधपुर नरेश विजयसिंह की पासवान गुलाबराय को हत्या की गई ।
	(अगस्त) अम्बाजी इंगले ने कुम्भलगढ़ पर आक्रमण किया ।
	(अक्टुबर ८) सुरोली का युद्ध सिन्धिया व होल्कर के बीच हुआ ।
	(दिसम्बर ६) महाराणा भीमसिंह का कुंभलगढ़ पर अधिकार हुवा ।
	महादजी प्रतापगढ़ से उज्जैन के लिये रवाना हुवा ।
	सिन्धिया के प्रमुख अधिकारी लकवा दादा की अध्यक्षता में मराठों ने मारवाड़ पर चढ़ाई की लेकिन जोधपुर नरेश ने सेना का खर्च देकर लौटा दिया ।
	जयपुर नरेश प्रतापसिंह ने हवा महल का निर्माण करवाया ।
१७६३	(मार्च २०) महाराजा विजयसिंह ने पुनः जोधपुर किले में प्रवेश किया ।
	(जून १) लाखेरी के युद्ध में होल्कर की सेना का सर्वनाश हो गया । इस युद्ध से उत्तर भारत में सिन्धिया व होल्कर की प्रतिद्वन्दता का निर्णय हो गया ।
	बदनोर के ठाकुर जयसिंह ने अटूण को जीता ।
	सीकर के राव ने जयपुर राज्य से स्वतंत्र होने का प्रयत्न किया लेकिन जयपुर राज्य ने उसको दबा दिया ।

ई० सन्	घटना
१७९३	आनंदराव पंवार ने डग पर पुन: कब्जा किया ।
	चौमू के रणजीतसिंह ने सीकर सेना को हराया ।
१७९४	लकवादादा ने मारवाड़ पर चढाई की ।
	उदयपुर के महाराणा भीमसिंह ने डूंगरपुर व बांसवाड़ा पर हमला कर तीन तीन लाख रुपये वसूल किये ।
	जोबनेर (जयपुर राज्य, खालसा किया गया ।
१७९५	(मई) जयपुर और कोटा नरेशों ने अंग्रेजों से संधि करने का असफल प्रयास किया ।
	(अगस्त) मरहठों ने करौली राज्य के सवलगढ़ व चम्बल नदी के दाहिने किनारे के क्षेत्र पर कब्जा किया ।
	सिंधिया ने भरतपुर नरेश रणजीतसिंह को ३ और परगने दिये । इस प्रकार उसके कुल १४ परगने हो गये ।
१७९६	झालरापाटन कस्बा की नींव रखी गई ।
	जोधपुर नरेश भीमसिंह ने अपने चाचा झालिमसिं से गोडवाड़ छीन लिया ।
	तिजारा (अलवर राज्य) पर जाटों का अधिकार हुवा ।
१७९७	दौलतराव ने लकवा दादा तथा जग्गू बापू को मेवाड़ तथा मारवाड़ पर आक्रमण करने की आज्ञा दी ।
	भीमसिंह ने जालोर पर सेना भेजी लेकिन विफल होकर लौटी ।
	लखीधरसिंह ने निवाई पर कब्जा कर लिया लेकिन जयपुर नरेश ने वापस कब्जा कर लिया ।
१७९८	(फरवरी) जार्ज टामस ने फतेहपुर (शेखावाटी) पर अधिकार किया ।
	जार्ज टामस की सेना से जयपुर की सेना का फतेहपुर के निकट युद्ध हुआ जिसमें जयपुर की सेना हारी ।
	सिरोही नरेश बैरीसाल ने विद्रोही सरदारों के मुखिया पाडीव ठाकुर तेजसिंह को मरवाया ।
	जसवंतराव होल्कर ने सिरोंज परगना अमीरखां को दे दिया ।
	मेवाड़ के महाराणा ने बांसवाड़ा पर दूसरी बार चढाई की ।
	(अप्रेल ५) महात्मा रामचरणदास की शाहपुरा में मृत्यु हुई ।
	बीकानेर नरेश सूरतसिंह तथा जयपुर नरेश प्रतापसिंह के बीच मेल हुआ ।
१७९९	(अप्रेल ९) लकवादादा राजस्थान में पेशवा का नायब नियुक्त किया जाने पर मेवाड़ पहुंचा ।
	(जून २३) अवध के पदच्युत नवाब वजीर अली ने जयपुर में शरण ली ।
	(अगस्त ९) लकवा दादा किशनगढ़ पहुंचा अत: वहां के राजा ने लकवादादा को २ लाख रुपये देकर अपना पीछा छड़ाया ।
	(नवम्बर २५) अम्बाजी का लकवादादा से समझौता हुवा ।

ई० सन् — **घटना**

१७९९ (दिसम्बर २) अवध का वजीर अली अंग्रेजों को वापस लौटाया गया।
वीकानेर नरेश सूरतसिंह ने सूरतगढ़ व फतेहगढ़ वसाया।
अम्वाजी इंगलिया के दो अधिकारी सदरलैण्ड व जार्ज टामस लकवादादा के विरुद्ध उदयपुर गये जहां उन्होंने कई गांव लूटे और चूण्डावत सरदारों से लाखों रुपये वसूल किये।
खानजादा जुल्फीकारखां द्वारा घोसावली नामक दुर्ग में उपद्रव किया गया।

१८०० (जनवरी ३१) उनीयारा के भीमसिंह ने करौली नरेश को हराया।
(मार्च १३) लकवादादा ने रामपूर डड्ंस को दे दिया।
(अप्रेल १६) लकवादादा ने जयपुर व जोधपुर की सम्मिलित सेना को मालपुरा के निकट हराया। वीकानेर नरेश सूरतसिंह ने जयपुर की सहायता के लिये सेना भेजी थी।
(मई ५) लकवा, जग्गू आदि कई मरहठा सरदार जयपुर के मरहठा शिविर से अजमेर और मेवाड़ की ओर भाग गये।
(मई १०) सेनापति पेरोन ने जयपुर सरकार से समझौता किया।
(अक्टुवर २९) लकवादादा ने राजस्थान छोड़ा।
(नवम्वर) अम्वाजी इंगलिया मेवाड़ पहुंचा।
(नवम्वर) लकवादादा राजस्थान से मालवा वलवा लिया गया।
जार्ज टामस ने वीकानेर पर चढ़ाई की।
धार के आनंदराव (दूसरा) ने वांसवाड़ा पर चढ़ाई की लेकिन हार कर लौट गया।
जार्ज टामस ने सवसे पहले राजस्थान के लिये "राजपूताना" शब्द का प्रयोग किया।

१८०१ (मई) सिंधिया के सेनापति मेजर वोरगुई ने अजमेर पर कब्जा किया और पैरो को अजमेर का सूवेदार नियुक्त किया।
जालोर के मानसिंह ने पाली नगर को लूटा।
जोधपुर नरेश व जालोर के मानसिंह की सेना के वीच युद्ध साकदड़े में हुआ। मानसिंह इस युद्ध में हार कर वच निकला।
कोटा नरेश ने डग पर कब्जा किया।
वीकानेर के सूरतसिंह ने भाटियों से फतहगढ़ छीना और उसके आसपास टीवी, मैराजका, आभोर आदि में थाने स्थापित किये।

१८०२ भीण्डर और लावा (उदयपुर राज्य) के शक्तावत सरदारों की सहायता लेकर जालिमसिंह झाला उदयपुर के महाराणा से चेजा घाटी में लड़ा। वाद में समझौता हो गया तव महाराणा ने सेना खर्च के एवजाने में जालिमसिंह को जहाजपुरा का परगना व किला दे दिया।
जसवंतराव होल्कर उदयपुर राज्य के सरदारों से लाखों रुपये वसूल कर

ई० सन्	घटना
१८०२	अजमेर होता हुआ जयपुर चला गया। बाद में होल्कर का पीछा करते आए हुए सिन्धिया के सैनिकों ने भी महाराणा तथा उसके सरदारो से तीन लाख रुपये वसूल किये।
	जोधपुर नरेश भीमसिंह ने अजमेर पर कब्जा करने को सेना भेजी लेकिन असफल होकर लौटी।
	बीकानेर नरेश सूरतसिंह ने रतनगढ़ पर अधिकार किया।
	राजस्थान में बाल हत्या को गैर कानूनी घोषित किया गया।
१८०३	(जून २७) गवर्नर जनरल वेलेजली ने तय किया कि राजस्थान के नरेश भारत के उत्तर पश्चिम में सुरक्षा के लिये ठीक रहेंगे अतः उनको स्वतंत्रता की गारण्टी दे दी जावे।
	(जुलाई २२) गवर्नर जनरल वेलेजली ने जयपुर नरेश को प्रस्तावित संधि की शर्तें भेजीं।
	(जुलाई २६) जोधपुर की सेना ने जालोर नगर पर अधिकार कर लिया लेकिन किले पर अधिकार न कर सकी।
	(अगस्त १) दौलतराव सिन्धिया ने अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध घोषित किया।
	(सितम्बर २९) भरतपुर नरेश रणजीतसिंह ने अंग्रेजों से स्थाई मित्रता की संधि का जिसके अनुसार कृष्णगढ़, कठुम्वर, रेवाड़ी, गोकुल और सेहड़ के पांच परगने भरतपुर राज्य में माने गये।
	(नवम्बर १) लासवाडी के युद्ध में अंग्रेज सेनापति लेक ने दौलतराव सिन्धिया को हराया जिससे चम्वल के उत्तर में सिन्धिया के कब्जे का क्षेत्र अंग्रेजों के अधिकार में आ गया। भरतपुर नरेश ने इस युद्ध में अंग्रेजों को सहायता दी।
	(नवम्बर ५) मानसिंह राठौड़ ने जोधपुर के गढ़ में प्रवेश किया।
	(नवम्बर १४) अलवर नरेश ने अंग्रेज सरकार से मित्रता की सन्धि की।
	(नवम्बर १८) जसवंतराव होल्कर ने अपने वकील खांडेराव को जयपुर नरेश जगतसिंह के पास यह समझाने को भेजा कि अंग्रेजों से सन्धि करने में हिन्दू धर्म व जाति की हानि है।
	(नवम्बर २८) अलवर नरेश बख्तावरसिंह को जनरल लेक से ईस्माईलपुर, मुंडावर, दरवारपुर, रताई, नीमराणा, मुंडण, गलोर, वीजवार, सुराई, दादरी, लोहारू, बूढाणा और भुडचलनहर के तालुके मिले।
	(दिसम्वर २) अंग्रेज सरकार ने खेतड़ी के अभयसिंह को कोटपूतली का परगना इस्तमरारी टेन्योर पर दिया।
	(दिसम्वर १२) अंग्रेजों से जयपुर महाराजा की मित्रता व पारस्परिक सहायता के लिए संधि हुई।
	(दिसम्वर १६) अम्बाजीराव इंगले व अंग्रेज सरकार के वीच सन्धि हुई

ई० सन्	घटना
१८०३	जिसके द्वारा ग्वालियर, गोहद आदि के दुर्ग तथा कुछ परगने अंग्रेजों को न तरवर दुर्ग व कुछ परगने अम्बाजी को दिये गये ।
	(दिसम्बर २२) जोधपुर नरेश मानसिंह और अंग्रेज सरकार के बीच मित्रता व पारस्परिक मित्रता की सन्धि हुई ।
	(दिसम्बर ३०) गवर्नर जनरल वेलेजली ने बादशाह शाह आलम के उनकी शरण में आने पर उसके निर्वाह का स्थाई प्रबन्ध कर दिया । अतः यह बादशाह अंग्रेजों की प्रजा बन गया जो मुगल साम्राज्य के अंत का द्योतक था ।
	(दिसम्बर ३०) ईस्ट इण्डीया कम्पनी की सिन्धिया से अंजनगांव में सन्धि हुई जिसके अनुसार यह तय किया गया कि धोलपुर, बाड़ी तथा राजाखेड़ा की जागीरें सिन्धिया के कब्जे में रहेगी । गोहद व ग्वालियर सिन्धिया से ले लिये गये तथा सिन्धिया के अधीनस्थ राजाओं को जिन्होंने अब ईस्ट इण्डीया कम्पनी से सन्धि कर ली थी को सिन्धिया के नियंत्रण से हटाया गया ।
	जोधपुर नरेश अजीतसिंह द्वारा चालू कराये गये मण्डोर में देवल बनकर पूर्ण हुवे ।
	जोधपुर की सेना ने शाहपुरा राज्य पर आक्रमण किया ।
	जोधपुर नरेश मानसिंह ने अजमेर के कुछ हिस्से पर अधिकार किया ।
	जसवंतराव होल्कर ने दुबारा उदयपुर के महाराणा से १२ लाख रुपये तथा राज्य के विभिन्न जागीरदारों से लाखों रुपये वसूल किये ।
	सिरोही नरेश बेरीशाल ने औदिच्य ब्राह्मणों को गोलगांव दान में दिया जिसके कारण वहां के ब्राह्मण गोलवाल ब्राह्मण कहलाते हैं ।
	बीकानेर नरेश ने चूरू के ठाकुर से पेशकशी के २१ हजार रुपये वसूल किये ।
१८०४	(जनवरी १७) जसवंतराव होल्कर व जोधपुर नरेश मानसिंह के बीच अंग्रेजों के विरुद्ध कौलनामा लिखा गया ।
	(जनवरी २९) गोहद के किरतसिंह का अंग्रेजों से आपसी मित्रता व सहायता का समझौता हुआ । किरतसिंह का गोहद के अलावा ग्वालियर खास आदि पर कब्जा माना गया ।
	(मार्च) जसवंतराव होल्कर ने अजमेर, पुष्कर तथा जयपुर राज्य को लूटा ।
	(अप्रेल १६) गवर्नर जनरल ने होल्कर के विरुद्ध युद्ध घोषणा की ।
	(अप्रेल २१) अंग्रेजों ने जयपुर राज्य की होल्कर के विरुद्ध सहायता करते हुए टोंक व रामपुरा पर कब्जा कर लिया ।
	(जून) जोधपुर नरेश ने मारोठ पर सेना भेजी ।
	(जून १३) लार्डलेक ने डीग में होल्कर और भरतपुर नरेश रणजीतसिंह को हराकर भरतपुर का घेरा डाला ।
	(जुलाई) भाटी छत्रसाल ने धोकलसिंह का पक्ष लेकर खेतड़ी, झूंझनू,

ई० सन्	घटना
१८०४	नवलगढ़, सीकर आदि के शेखावतों की सहायता से डीडवाना पर कब्जा किया।
	(जुलाई १) जसवंतराव होल्कर ने अंग्रेज सेनापति कर्नल मानसन को चम्बल के काण्ठे में घेर लिया।
	(जुलाई १६) कर्नल मानसन प्राण बचा कर चम्बल पार कर भाग गया।
	(अगस्त २४) जसवंतराव होल्कर व कर्नल मानसन के बीच बनास नदी पर घोर युद्ध हुआ जिसमें कर्नल मानसन के बहुत से सैनिक मारे गये।
	(नवम्बर) भरतपुर नरेश ने होल्कर को अंग्रेजों के विरुद्ध सहायता दी।
	(नवम्बर २५) प्रतापगढ़ के महारावत ने अंग्रेज सरकार से मित्रता व सहायता की संधि की।
	(दिसम्बर १) लार्ड लेक ने डीग के गढ़ घेरा डाला।
	(दिसम्बर १३) लार्ड लेक ने डीग का किला जसवंतराव होल्कर व भरतपुर नरेश को हराकर जीता।
	(दिसम्बर १९) लार्ड लेक भरतपर के गढ़ के सम्मुख पहुंचा।
	उदयपुर के महाराणा ने अंग्रेजों से सन्धि करना चाहा लेकिन उन्होंने स्वीकार नहीं किया।
	गोहद में टकसाल स्थापित कर किरतसिंह ने अपने सिक्के चालू किये।
	सलूम्बर (उदयपुर राज्य) के रावल पदमसिंह ने अपना सिक्का ढाला।
१८०५	(जनवरी २) जोधपुर नरेश मानसिंह ने जोधपुर के किले में हस्तलिखित पुस्तकों का एक पुस्तकालय "पुस्तक प्रकाश" स्थापित किया।
	(जनवरी ७) लार्ड लेक ने भरतपुर का घेरा डाला लेकिन उसका हमला असफल रहा।
	(फरवरी ४) जोधपुर के महामन्दिर की प्रतिष्ठा हुई।
	(अप्रेल २) लार्ड लेक ने होल्कर, सिन्धिया तथा अमीरखां की सम्मिलित सेना को लेकर वेयर (भरतपुर राज्य) में हराया।
	(अप्रेल १०) अंग्रेजों ने भरतपुर का घेरा उठा लिया।
	भरतपुर नरेश ने होल्कर का साथ छोड़ दिया व अंग्रेजों से संधि कर ली।
	(अप्रेल १६) बीकानेर राज्य में भटनेर भाटियों को हराकर मिलाया गया और उसका नाम हनुमानगढ़ रखा गया।
	(अप्रेल १७) भरतपुर नरेश ने अंग्रेजों से दुबारा मित्रता व आपसी सहायता की सन्धि की। इस सन्धि से ई० सन् १८०३ में अंग्रेजों द्वारा दिये गये ५ परगने भरतपुर से ले लिये गये तथा भरतपुर नरेश ने अंग्रेजों को २० लाख रुपये युद्ध क्षति के देना तय किया।
	(सितम्बर) जसवन्तराव होल्कर सांभर की ओर बढ़ा।

ई० सन्	घटना
१८०५	(अक्टुबर) जयपुर नरेश जगतसिंह ने अंग्रेजों द्वारा सहायता मांगे जाने पर नहीं दी।
	(अक्टूवर १५) अलवर नरेश को अंग्रेज सरकार से एक लाख रुपये में किशनगढ़ दुर्ग मिला तथा दादरी, बुड़वानोर तथा भावना कब्जे के बदले तीजारा, टपूकड़ा तथा कुलटमान परगने मिले। इसके अलावा सामगांवी नदी का बांध भरतपुर राज्य के लिये खोल दिया गया।
	(नवम्बर २२) ईस्ट इण्डीया कम्पनी व सिन्धिया के बीच हुई संधि के अनुसार कम्पनी ने इकरार किया कि वह जोधपुर, उदयपुर, कोटा तथा अन्य नरेशों से, जो सिन्धिया के सामन्त हैं, कोई सन्धि नहीं करेगी तथा उन नरेशों से जो भी सिन्धिया समझौता करेगा उसमें हस्तक्षेप नहीं करेगी। इसके अलावा पश्चिम में कोटा नगर से पूर्व में गोहद की सीमा तक चम्वल नदी सिन्धिया के राज्य की उत्तरी सीमा मान ली गई। सिन्धिया ने धोलपुर, राजाखेड़ा व बाड़ी कम्पनी के कब्जे में रहना स्वीकार कर लिया।
	(दिसम्वर ३) उपरोक्त संधि के वाद कुछ शर्तों का प्रतिस्थापन कर, धोलपुर, बाड़ी तथा राजाखेड़ा ईस्ट इण्डीया कम्पनी को दिये गये तथा गोहद व ग्वालियर के दुर्ग सिन्धिया को दिये गये।
	(दिसम्वर २४) ईस्ट इण्डीया कम्पनी व जसवन्तराव होल्कर के बीच हुई संधि के अनुसार होल्कर ने टोंक, रामपुरा, बूंदी, लाखेरी आदि पर अंग्रेजों का अधिकार मान लिया तथा अंग्रेजों ने होल्कर, मेवाड़, मालवा व हाड़ौती के पुराने कब्जे के क्षेत्रों पर उसका कब्जा मान लिया।
	दौलतराव सिन्धिया ने उदयपुर राज्य से १६ लाख रुपये वसूल किये।
	मराठा सरदार सदाशिवराव ने वागड़ में प्रवेश किया।
	डूंगरपुर नरेश ने दो लाख रुपये दे कर मराठों को विदा किया। ये रुपये डूंगरपुर के महारावल ने नागर ब्राह्मणों से कठोरतापूर्वक वसूल किये अतः नागर ब्राह्मण डूंगरपुर छोड़ गये।
	गोविन्दगढ़ के किले का निर्माण हुआ।
१८०६	(जनवरी ३) अंग्रेजों ने जयपुर से १८०३ में की गई आपसी मित्रता की सन्धि तोड़ दी।
	(फरवरी २) ई० सन् १८०५ की ईस्ट इण्डीया कम्पनी व होल्कर के वीच हुई सन्धि के वाद नई शर्तें जोड़ी, जाकर अंग्रेजों ने टोंक, रामपुरा तथा उनके आसपास के क्षेत्रों पर जो पहले होल्कर के कब्जे में थे, को वापस होल्कर के कब्जे में मान लिया।
	(जनवरी १५) जसवंतराव होल्कर की अंग्रेजों के साथ राजघाट की संधि हुई।

ई० सन्	घटना
१८०६	(अप्रेल ६) अंग्रेजों द्वारा खेतड़ी के अभयसिंह को कोटपुतली परगना ईनाम में दिया गया।
	(अप्रेल २५) देवारी घाटी में मेवाड़ की सेना मरहठों से हारी।
	(मई ५) जसवंतराव होल्कर पंजाब से सांभर मानसिंह को सहायता मराराजा देने के लिये पहुंचा।
	(मई ७) मेवाड़ का महाराणा दौलतराव से मिला।
	(जून) दौलतराव ने उदयपुर छोड़ा।
	(जुलाई १८) अजमेर के पास नांद गांव में जोधपुर नरेश मानसिंह व जयपुर नरेश जगतसिंह के बीच समझौता हुआ।
	(अक्टुवर) महाराजा मानसिंह नांद गांव से (मेड़ता) पहुंचा।
	(अक्टुवर) जसवतराव होल्कर ने पुष्कर छोड़ा।
	(नवम्बर) अमीरखां ने जयपुर नरेश जगतसिंह की सेवा में प्रवेश किया लेकिन बाद में जोधपुर वालों ने उसे अपना लिया।
	अमीरखां ने टोंक शहर पर कब्जा किया। जसवंतराव होल्कर ने जयपुर से टोंक लेकर अमीरखां को दे दिया।
	अमीरखां को पीड़ावा मिला।
	(जनवरी १०) अंग्रेज सरकार व गोहद के राणा किरतसिंह के बीच संधि हुई जिसके अनुसार गोहद वापस सिन्धिया को दे दिया गया लेकिन धोलपुर, राजाखेड़ा और वाड़ी के परगने राणा कीर्तिसिंह को दे दिये गये जो सरमथुरा से मिला दिये गये। तब से वह धोलपुर का राणा कहलाने लगा। मराठों ने अजमेर का वह हिस्सा जिस पर जोधपुर के महाराजा ने कब्जा कर लिया था, वापिस ले लिया। उदयपुर के महाराणा ने अंग्रेजों से सैनिक सहायता के लिये दिल्ली के अंग्रेज रेजीडेन्ट के पास अपना प्रतिनिधि भेजा लेकिन अंग्रेजों ने मरहठों से नवम्बर १८०५ की सन्धियों का हवाला देते सहायता देने से इन्कार कर दिया।
१८०७	(फरवरी २५) बीकानेर की सेना ने फलोधी पर कब्जा किया।
	(मार्च ११) जयपुर व जोधपर की सेना के बीच पर्वतसर की घाटी में (गींगोली) युद्ध हुआ। जोधपुर की सेना हारी।
	(मार्च २३) सवाईसिंह की सेना ने नागोर पर चढ़ाई कर उस पर कब्जा कर लिया।
	(मार्च ३०) सवाईसिंह ने जोधपुर का घेरा डाला। बाद में जयपुर व बीकानेर नरेश भी सवाईसिंह की सहायतार्थ आ गये।
	(अप्रेल १८) भीमसिंह के पुत्र धोकलसिंह ने जोधपुर पर कब्जा कर लिया।
	(अगस्त ३) जयपुर की सेना ने अमीरखां तथा उसके सहायक मानसिंह की सेना को हराया।

ई० सन् — घटना

१८०७ (अगस्त १८) अमीरखां ने जयपुर पर हमला कर उस पर कब्जा किया ।
(अगस्त ८) सवाईसिंह ने पुनः जोधपुर पहुंच कर वहां के घेरे को और ज्यादा बढ़ाया ।
(सितम्बर) जोधपुर की सेना ने जयपुर पर चढ़ाई की ।
(सितम्बर १४) जोधपुर के घेरे का अनायास अन्त हो गया । उदयपुर नरेश जगतसिंह जयपुर गया ।
(अक्टुबर) अम्बाजी इंगले जोधपुर पहुंचा ।
(अक्टुबर) जयपुर नरेश जगतसिंह ने अमीरखां के द्वारा मानसिंह से संधि कर ली ।
(दिसम्बर २९) अमीरखां जोधपुर से नागोर बांकलसिंह के विरुद्ध गया ।
जोधपुर के महाराजा मानसिंह ने बीकानेर नरेश के सवाईसिंह का पक्ष लेने के कारण उसके विरुद्ध सेना भेजी । उदासर (बीकानेर राज्य) में युद्ध हुआ । बीकानेर की सेना हार गई लेकिन बाद में दोनों के बीच संधि हो गई ।
सोजत की टकसाल खोली गई ।
लक्ष्मणगढ़ (सीकर) बसाया गया ।
सिन्धिया ने जयपुर पर अधिकार किया ।
जालमसिंह ने कोटा राज्य के गांवों की पैमाइश करवाई और बीघोड़ी लगाई ।
(अगस्त १८) अमीरखां ने जयपुर पर हमला कर उस पर कब्जा किया ।
जोधपुर राज्य में राज्य के विशेष खर्च के लिये हर पांचवें वर्ष प्रति हजार दो सौ से तीन सौ रुपये तक रेख वसूल करना आरम्भ किया ।
जसवंतराव होल्कर राजस्थान से मालवा चला गया ।

१८०८ (मार्च ३०) सवाईसिंह अमीरखां द्वारा धोखे से मरवा दिया गया ।
(मार्च ३१) अमीरखां ने नागोर पर कब्जा कर महाराजा मानसिंह का प्रभुत्व कायम कर दिया ।
(जून) बापूजी सिंधिया ने जयपुर पर आक्रमण किया ।
जोधपुर की सेना ने बीकानेर पर चढ़ाई कर फलोधी का परगना वापस लिया ।

१८०९ (जनवरी) दौलतराव सिन्धिया हाडोती पहुंचा ।
(मई) बापूजी सिंधिया धन लेकर माचेडी व शेखावाटी की ओर गया ।
(मई १४) दौलतराव जयपुर राज्य से मेवाड़ की ओर गया ।
(जून) अमीरखां ने जयपुर पहुंच कर वहां उपद्रव शुरू किया ।
अमीरखां ने महाराणा उदयपुर को हराकर मगर तथा आसपास के गांवों को लूटा । अमीरखां को निम्बहेडा जसवंतराव होल्कर से मिला ।
अजमेर के ब्रह्माजी के मंदिर का पुनर्निर्माण हुआ ।
पालनपुर राज्य की अंग्रेजों से संधि हुई ।

ई० सन्	घटना
१८१०	(जनवरी) दौलतराव अजमेर पहुंचा ।
	(जनवरी २७) दौलतराव ने बापूजी सिंधिया को अजमेर का मरहठा सूबेदार नियुक्त किया ।
	(मार्च) अमीरखां राजस्थान में लौटा ।
	(अप्रेल) जयपुर व जोधपुर के बीच समझौता हुआ ।
	(जुलाई २१) उदयपुर के महाराणा ने कृष्णाकुमारी को ज़हर देकर मार डाला ।
	दौलतराव सिन्धिया ने उदयपुर राज्य में सख्ती से बकाया कर वसूल किया तथा वांछित कर न मिलने पर वहां के सरदारों, महाजनों व किसानों को कैद कर अजमेर ले गया । वहां वे १८१८ तक कैद रहे ।
	बूंदी के महाराव विष्णुसिंह के चचेरे भाई बलवंतसिंह (जागीरदार गोठड़ा) ने विद्रोह कर नैनवा के किले पर कब्जा कर लिया ।
१८११	(फरवरी) जोधपुर नरेश मानसिंह ने घाणेराव अमीरखां को जागीर में दिया ।
	(मई ११) अमीरखां व जयपुर नरेश जगतसिंह के बीच संधि हुई ।
	(जुलाई) खुसालीराम बोहरा वापस जयपुर का मुख्यमंत्री बना ।
	(जुलाई १६) अंग्रेज सरकार व अलवर राज्य के बीच इकरारनामा हुआ कि अलवर नरेश किसी राज्य से बिना अंग्रेज सरकार की जानकारी व सहमति के कोई संधि या समझौता नहीं करेंगे ।
	झालमसिंह झाला ने मांडलगढ़ पर कब्जा करने की कोशीश की लेकिन विफल रहा ।
	मेवों द्वारा तिजारा में उपद्रव किया गया ।
	जयपुर के महाराजा पृथ्वीसिंह द्वितीय के पुत्र मानसिंह ने अपने को जयपुर का राजा घोषित किया ।
१८१२	(जून) अलवर नरेश ने डावी तथा सिकवाड़ा (जयपुर राज्य) के किलों पर कब्जा किया ।
	(जुलाई १६) अंग्रेजों व अलवर नरेश के बीच समझौता हुआ जिससे ई० सन् १८०३ के नवम्बर १४ की सन्धि का खुलासा किया गया ।
	सीकर के लक्ष्मणसिंह द्वारा खंडेला पर कब्जा किया गया ।
	जोधपुर राज्य में भयकर अकाल पड़ा ।
	जोधपुर के अधिकार से उमरकोट (सिन्ध) हटा ।
	जोधपुर के महाराजा मानसिंह ने अपनी सेना सिरोही में लूटमार करने भेजी ।
	जयपुर नरेश जगतसिंह ने जोबनेर की जागीर भैरूसिंह को वापिस दी ।
	जयपुर के चांदसिंह ने मोहम्मदखां को टोंक के पास हराकर अमीरगढ़ के किले का घेरा डाला ।

ई० सन्	घटना
१८१२	समरू वेगम ने चौमू पर हमला किया ।
	जावर खान (उदयपुर राज्य) से धातु निकाला जाना बंद हुआ ।
	वांसवाड़ा के रावल विजयसिंह ने अंग्रेज सरकार की संरक्षणता में जाने का प्रस्ताव रखा ताकि वह सिंधिया व होल्कर की सेना को राज्य से निकाल सके लेकिन अंग्रेजों ने यह प्रस्ताव टाल दिया ।
१८१३	वांसवाड़े का खुदादखां सिंधी से युद्ध हुआ ।
	खुदादखां सिंधी ने डूंगरपर पर कब्जा किया जो तीन वर्ष तक रहा ।
	जयपुर नरेश ने अमीरखां को वहुतसा धन दे कर अपने पक्ष में किया ।
	सिरोही का महाराव उदयभान तीर्थ यात्रा से लौटते समय पाली मे जोधपुर नरेश द्वारा कैद किया गया ।
	बीकानेर नरेश सूरतसिंह ने चूरू पर चढ़ाई की ।
	जोधपुर व बीकानेर नरेशों के वीच में युद्ध हुआ ।
	अमीरखां द्वारा मेवाड़ लूटा गया ।
१८१४	अमीरखां के नायव मोहम्मखां ने सिपाहियों का वेतन वसूल करने के लिये मारवाड़ के गांवों को लूटा ।
	वापूजी सिंधिया जयपुर रकम वसूली के लिए पहुंचा ।
	(नवम्वर २८) वीकानेर का चूरू पर कब्जा हुआ ।
१८१५	(अगस्त२०) अमीरखां १५००० सैनिक लेकर जोधपुर पहुंचा और (२२अगस्त को) किले पर कब्जा कर लिया ।
	(सितम्बर १०) जोधपुर नरेश मानसिंह का पुत्र छत्रसिंह अमीरखां से उसके शिविर में मिला ।
	(अक्टुवर९) अमीरखां के आदेश से जोधपुर का सिंधी इन्द्रराज, देवनाथ तथा ५ अन्य व्यक्ति मारे गये ।
	(दिसम्बर) अमीरखां ने जोधपुर छोड़ा ।
	उदयपुर के महाराणा ने वापूजी सिंधिया के विरुद्ध दौलतराव से सहायता मांगी ।
	होल्कर के सेनापति ने गलियाकोट में सिंधी मुसलमानों को हराया व महारावल जसवंतसिंह द्वितीय को वापस राज्य दिलाया ।
	जयपुर के मानजीदास द्वारा अंग्रेजों से संधि की वार्ता प्रारम्भ हुई ।
१८१६	अमीरखां को छवड़ा का परगना मिला ।
	जोधपुर नरेश मानसिंह ने सिरोही पर सेना भेजी ।
	अमीरखां ने वीकानेर पर चढ़ाई की ।
	मराठों ने रणथम्भोर के किले का घेरा डाला ।
	नवाव दिलेरखां चित्तोड़ के आसपास के गांवों को लूटता हुआ उदयपुर

ई० सन्	घटना
१८१६	पहुंचा लेकिन वहां से महाराणा ने उसे भगा दिया ।
१८१७	(अप्रेल १६) जोधपुर के सरदारों ने जोधपुर नरेश मानसिंह को राजगद्दी से हटा कर उसके पुत्र छत्रसिंह को शासक बनाया ।
	(अक्टुबर २) लार्ड मेयो ने अजमेर में राजस्थान के नरेशों का एक दरबार किया ।
	(अक्टुबर १०) अंग्रेजों ने पालनपुर पर आक्रमण किया ।
	(नवम्बर ५) दौलतराव सिन्धिया व ईस्ट इण्डीया कम्पनी के बीच हुई सन्धि द्वारा यह तय किया गया कि कम्पनी उदयपुर, जोधपुर, कोटा, बूंदी तथा चम्बल नदी के बायें किनारे पर स्थित राज्यों के राजाओं से कोई भी सन्धि करने को स्वतन्त्र होगी और उसकी सहमति के बिना सिन्धिया किसी भी कारण से इन राज्यों के आंतरिक मामलों में कतई हस्तक्षेप नहीं करेगा लेकिन अंग्रेज सरकार इन राज्यों के राजाओं द्वारा सिन्धिया को दिया जाने वाला खिराज दिलाने को बाध्य होगी ।
	(नवम्बर ६) अमीरखां की ओर से लाला निरंजनलाल ने दिल्ली में मेटकाफ से मिलकर सुरक्षा की संधि की ।
	(नवम्बर ६) करौली राज्य ने अंग्रेजों से मित्रता व सहायता की सन्धि की ।
	(नवम्बर २३) चूरू के ठाकुर पृथ्वीसिंह ने पुनः चूरू पर कब्जा किया ।
	(नवम्बर) उदयपुर के महाराणा की ओर से अजीतसिंह संधि वार्ता के लिये दिल्ली पहुंचा ।
	(दिसम्बर २६) कोटा राज्य ने अंग्रेजों से मित्रता व सहायता की संधि की ।
	सिरोही के महाराव अभयमाण को नजर कैद कर सिरोही राज्य का प्रबंध उसके छोटे भाई नान्दिया के स्वामी शिवसिंह ने अपने हाथ में ले लिया ।
	लार्ड हैस्टींग्ज ने पिंडारियों का दमन करने के लिये राजस्थान के नरेशों से सहायता मांगी ।
	कोटा व भरतपुर राज्यों ने अंग्रेजों की सहायता पिन्डारियों के विरुद्ध की ।
	पिन्डारी करीमखां ने बांसवाड़ा राज्य में लूटमार की ।
	होल्कर डीग की लड़ाई में हारा ।
१८१८	(जनवरी ६) जोधपुर राज्य ने अंग्रेजों से मित्रता व सहायता की संधि की ।
	(जनवरी १३) उदयपुर राज्य ने अंग्रेजों से मित्रता व सहायता की संधि की ।
	(फरवरी) जोधपुर की सेना ने सिरोही में लूटमार की ।
	(फरवरी) कर्नल जेम्स टॉड अंग्रेजी सरकार का एजेण्ट बनकर उदयपुर आया ।
	(फरवरी १०) बूंदी राज्य ने अंग्रेजों से सहायता व मित्रता की सन्धि की ।

ई० सन्	घटना
१८१८	(फरवरी २०) कोटा राज्य द्वारा अंग्रेजो से २६ दिसम्बर १८१७ को की गई सन्धि में दो शर्तें और बढ़ाई गई कि कोटा नरेश महाराव उम्मेदसिंह की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारी महाराजकुमार किशोरसिंह व उसके वंशज होंगे तथा कोटा राज्य का प्रशासन झाला जालिमसिंह की मृत्यु के बाद उसका उत्तराधिकारी कुंवर माधोसिंह अर्थात् उसके वंशज ही चलायेंगे और वे मंत्री बने रहेंगे।
	(मार्च ९) बीकानेर राज्य की अंग्रेजों से मित्रता व सहायता की सन्धि हुई।
	(मार्च २६) किशनगढ़ राज्य ने अंग्रेजों से मित्रता व सहायता की सन्धि की।
	(अप्रेल २) जयपुर राज्य ने अंग्रेजों से मित्रता व सहायता की सन्धि की।
	(मई ४) उदयपुर के महाराणा और वहां के ३३ सरदारों का पारस्परिक सम्बन्ध सुधारने के लिये राजीनामा लिखा गया। तब सरदारों ने महाराणा से जो भूमि उसके संकटकाल में ले ली थी वह वापस लौटा दी।
	(जून २५) अंग्रेजों व मरहठों के बीच सन्धि हुई जिसके अनुसार अजमेर अंग्रेजों को देना तय किया गया।
	(जुलाई २८) अजमेर पर अंग्रेजों का कब्जा हुआ।
	(सितम्बर १६) बांसवाड़ा राज्य की अंग्रेजों से मित्रता व सहायता की सन्धि हुई।
	(अक्टुबर ५) प्रतापगढ़ राज्य से अंग्रेजों ने संरक्षण में लेने की सन्धि की।
	(अक्टुबर ३१) सिरोही राज्य की अंग्रेजों से मित्रता व सहायता की सन्धि हुई।
	(नवम्बर २०) नसीराबाद में अंग्रेजी सेना की छावनी स्थापित हुई।
	(दिसम्बर ११) डूंगरपुर राज्य ने अंग्रेजों से मित्रता व सहायता की सन्धि की।
	(दिसम्बर १२) जैसलमेर राज्य ने अंग्रेजों से मित्रता व सहायता की सन्धि की।
	(दिसम्बर २५) बांसवाड़ा राज्य ने अंग्रेजों से खिराज के भुगतान के सम्बन्ध में पुनः सन्धि की।
	बीकानेर नरेश सूरतसिंह ने अंग्रेजों की सहायता से अपने विद्रोही सरदारों का दमन किया।
	मन्दसौर में ईस्ट इण्डीया कम्पनी व इन्दौर नरेश के बीच सन्धि हुई जिसके अनुसार टोंक के नवाब के कब्जे के सब प्रदेशों पर उसके कब्जे की पुष्टि की गई।
१८१९	(फरवरी) जहाजपुर का परगना महाराणा उदयपुर को लौटाया गया।
	(मार्च) उदयपुर व अंग्रेजों की सेना ने मेरवाड़ा के मेरों के मुख्य स्थान बोरवा, झाक और लुलुवा पर अधिकार कर लिया।

ई० सन्	घटना
१८१९	(मई १२) जयपुर नरेश और उसके सरदारों के बीच उनके कर्तव्यों व अधिकारों के विषय में राजीनामा लिखा गया ।
	(सितम्बर २५) डीग, पंचपहाड़, अवड व गंगधार के परगने कोटा के महाराव माधोसिंह को अंग्रेजों ने दिये ।
	(नवम्बर ३) कर्नल टाड् अंग्रेजों का राजनैतिक एजेन्ट नियुक्त होकर जोधपुर पहुंचा तब उसने मेरवाड़ा के मेरों का दमन कराया ।
	अंग्रेजों ने होल्कर से जीते ४ परगने कोटा राज्य को दिए ।
१८२०	(जनवरी २६) डूंगरपुर नरेश व अंग्रेज सरकार के बीच खिराज के भुगतान के विषय में समझौता हुआ ।
	(फरवरी १५) बांसवाड़ा के महारावल भवानीसिंह का अंग्रेज सरकार से बकाया खिराज के संबंध में ३ वर्ष के लिए समझौता हुआ ।
	(अप्रेल २७) जोधपुर नरेश मानसिंह ने अपने विरोधियों को निर्दयतापूर्वक मरवाया ।
	(नवम्बर) मेरों ने विद्रोह किया व पुलिस थानों को लूटा ।
	(दिसम्बर २२) कोटा का महाराव किशोरसिंह द्वितीय झालिमसिंह से लड़ कर बूंदी चला गया ।
	(दिसम्बर) जयपुर राजमाता के गुरू हनुवंत और फौजोराम के आदमियों के बीच झगड़ा हुआ ।
	अंग्रेजों ने डीसा (पालनपुर राज्य) में अपनी छावनी स्थापित की ।
	अजमेर में पहली बार भूमि का बन्दोबस्त हुआ ।
१८२१	(अक्टुबर १) मांगरोल के युद्ध में कोटा नरेश महाराव किशोरसिंह कर्नल टॉड व झालिमसिंह की फौज से हारा । महाराव हारकर नाथद्वारा चला गया और वहां कोटा राज्य को श्रीनाथजी के नाम अर्पण कर दिया ।
	(नवम्बर २२) नाथद्वारे में महाराव किशोरसिंह और जालिमसिंह तथा ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रतिनिधि कर्नल टॉड के बीच इकरार हुआ कि महाराव के निजि मामलों में दीवान (जालिमसिंह) और दीवान के रियासती मामलों में महाराव का कोई हस्तक्षेप नहीं होगा ।
	(दिसम्बर ३१) किशोरसिंह कोटा पहुंचा ।
	जोधपुर के महाराजा ने अंग्रेज सरकार की सहायतार्थ संधि के अनुसार १५,०० सवार दिल्ली भेजे ।
१८२२	(मार्च ३१) अजमेर और अहमदाबाद के बीच रेलवे लाइन बनकर तैयार हुई । अंग्रेजी ने "मेरवाड़ा सेना" तैयार की ।
	जोधपुर राज्य में गांवों की सीमा तय करने के लिए अलग विभाग स्थापित किया गया ।

ई० सन्	घटना
१८२२	जोधपुर राज्य में जागीरदारों के लिए अलग अदालत स्थापित की गई।
	जोधपुर राज्य में लोयाणा (भीनमाल परगना) का ज्ञानसिंह विद्रोही हो गया।
१८२३	(फरवरी ११) बांसवाड़ा के महारावल भवानीसिंह का अंग्रेज सरकार से बकाया खिराज के भुगतान के सम्बन्ध में १० वर्षों के लिए एक अहदनामा लिखा गया।
	(मई) जे०स्टवर्ट द्वारा अंग्रेजी सेना भेजकर लांबा गांव (जयपुर राज्य) को घेरा गया व जयपुर राज्य में मिलाया गया।
	(मई) अंग्रेज सरकार व उदयपुर नरेश के बीच इकरार हुआ जिसके अनुसार मेरवाड़ा के ७६ गांव दस (१०) वर्षों के लिए अंग्रेजों ने ले लिए।
	(जून) जयपुर के प्रशासन की ठीक देखरेख के लिए अंग्रेज एजेन्ट जे० स्टवर्ट नियुक्त किया गया।
	(सितम्बर ११) सिरोही राज्य द्वारा अंग्रेजों से मित्रता व संरक्षण के लिए संधि की गई।
	(दिसम्बर ६) प्रतापगढ के महारावत ने अंग्रेज सरकार से सेना रखने के एवज में नकद देने का इकरार किया।
	बूंदी की अधिनस्थ ८ कोटरियें कोटा राज्य के अधीन की गई।
	उदयपुर का राज प्रबंध अंग्रेजों ने अपने हाथों में लिया जो १८२६ तक रहा।
१८२४	(जनवरी १३) डूंगरपुर व बांसवाडा राज्यों ने स्थानीय सेना रखने के बारे में अंग्रेजों से संधि की।
	(फरवरी २५) जोधपुर नरेश मानसिंह तथा वहां के जागीरदारों के बीच मध्यस्थता कर अंग्रेजी सरकार ने इकरारनामा लिखवाया।
	(मार्च ५) जोधपुर राज्य के चांग और कोट किराणा के परगनों के २१ गांव ८ वर्षों के लिए अंग्रेजों ने अपने अधिकार में ले लिए।
	(अप्रेल) जयपुर व जोधपुर के बीच समझौता हुआ कि वे क्रमशः कछवाहाजी व राठौड़जी रानियों की जागीरों की देखरेख करेंगे।
	(मई ४) नीमज के ठाकुर रामसिंह ने सिरोही नरेश की अधीनता स्वीकार की।
	(जून १५) झाला झालमसिंह का देहान्त हुआ।
	(सितम्बर १६) गलियाकोट (डूंगरपुर) के पीर फकरूद्दीन की कब्र पर मेला भरने लगा।
	(अक्टुबर) जयपुर सेना ने विद्रोह किया।
	(नवम्बर १६) बचून के ठाकुर बैरीशाल को जयपुर का सेनाध्यक्ष बनाने पर रिपन ने कड़ा विरोध किया।
	(दिसम्बर १४) जयपुर की राजमाता व रेजीडेंट के बीच समझौता हुआ।

ई० सन्	घटना
१८२४	मूलशंकर (आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द) का जन्म हुआ।
	बीकानेर नरेश सूरतसिंह ने ददरेवा के विद्रोही ठाकुर का दमन किया।
१८२५	(मई २) डूंगरपुर का महारावल जसवन्तसिंह राजगद्दी से हटाया गया।
	(मई १२) डूंगरपुर के सरदारों व भीलों के विरुद्ध सेना भेजी गई अतः उन्होंने अधीनता स्वीकार कर एक इकरारनामा लिख दिया कि वे कोई उपद्रव आदि नहीं करेंगे।
	(दिसम्बर १०) उत्तराधिकार के मामले को लेकर अंग्रेजों ने भरतपुर पर आक्रमण किया।
१८२६	(जनवरी १८) भरतपुर के गढ़ पर अंग्रेजों का कब्जा हुआ।
	(फरवरी) भोमट (उदयपुर राज्य) के भीलों ने विद्रोह किया जो दबाया गया तथा वहां का प्रशासन अंग्रेज अधिकारी को सौंपा गया।
	(फरवरी १७) गवर्नर जनरल ने झूथाराम को जयपुर लौटने की अनुमति दी।
	(जनवरी २१) बलवन्तसिंह व उसके उत्तराधिकारियों को तिजारा, टपूकड़ा, मुंडावर व बराई पर अधिकार देने के सम्बन्ध में इकरारनामा अलवर नरेश द्वारा लिखा गया। इसकी गवर्नर जनरल ने १४ अप्रेल १८२६ को पुष्टि की।
	(अक्टुबर २) अंग्रेज एजेंट लो ने जयपुर के सरदारों की एक बैठक राजमाता को संरक्षक पद से हटाने के लिए बुलाई।
	चार्ल्स मेटकाफ ने उदयपुर राज्य द्वारा दिया जाने वाला खिराज तीन लाख रुपए वार्षिक तय किया।
	महाराव बन्नेसिंह ने कालानी (अलवर राज्य) के मेवों के उपद्रवों को दबाया।
	महाराव बन्नेसिंह को राज्य शासन के पूर्ण अधिकार मिले।
१८२७	(अप्रेल) उदयपुर के महाराणा सरदारसिंह और उसके सरदारों के बीच एक नया कौलनामा, जिसमें सरदारों के अधिकार व कर्तव्य निर्धारित किए गए थे, तथा जो महाराणा भीमसिंह के समय ई० सन् १८१८ में तैयार किया गया था, अपर्याप्त होने से पुन: अंग्रेज सरकार की स्वीकृति के लिए भेजा गया।
	(अगस्त) अंग्रेज एजेण्ट लो ने जयपुर राजमाता से खिराज की मांग की।
	(अगस्त) राव चांदसिंह ने जयपुर राज्य की सेना लेकर झिलाय के गांव पिपलदा को लूटा।
	महामन्दिर (जोधपुर) के महन्त की सलाह से आउवा पर जोधपुर की सेना भेजी गई।
	अंग्रेज सरकार के निर्णय के अनुसार टीबी और बेनींवाला के ४० गांव बीकानेर राज्य से अलग कर पंजाब में मिला दिए गए।

ई० सन् — घटना

१८२८ (मई १६) दिल्ली के रेजीडेंट द्वारा बीकानेर आदि राज्यों को इस आशय का खरीता भेजा गया कि वे जोधपुर राज्य में उत्पात करने वाले धोकलसिंह से किसी प्रकार का सम्पर्क न रखें।

(जुलाई) मुखतार भूथाराम के द्वारा जयपुर राज्य के किसी व्यापारी को नहीं लूटने की घोषणा की गई। किशनगढ़ में जागीरदारों का विद्रोह हुआ। महाराजा कल्याणसिंह ने किशनगढ़ नगर एवं सरवाड़ के किले पर अधिकार किया।

शाहपुरा का फूलिया परगना अंग्रेज सरकार ने जब्त कर लिया जो ४ वर्ष तक जब्त रहा।

लांबा को जयपुर राज्य की सेना ने घेरा।

अंग्रेज एजेण्ट की सलाह से जयपुर नरेश ने खेतड़ी के विरुद्ध सेना भेजी।

मारवाड़ में अव्यवस्था बतलाकर लार्ड विलियम बेंटीक ने महाराजा मानसिंह को राजगद्दी से हटाया।

आउवा का ठाकुर तथा धोकलसिंह खेतड़ी में आ रहे और जोधपुर के इलाके में लूटमार करने लगे। अतः जयपुर की सेना ने इन विद्रोहियों को बीकानेर राज्य में भगा दिया।

बीकानेर नरेश रतनसिंह ने अंग्रेज सरकार के आदेशानुसार जोधपुर के दावेदार धोकलसिंह को अपने राज्य में प्रवेश करने से मना कर दिया।

१८२९ (अक्टूबर १३) बीकानेर की सेना ने महाजन पर कब्जा किया।

(नवम्बर ९) आप्पा साहब ने जोधपुर नरेश मानसिंह की शरण ली।

(दिसम्बर ४) कानून से सती प्रथा बन्द की गई।

बीकानेर नरेश रतनसिंह ने जैसलमेर पर आक्रमण किया लेकिन बीकानेर की सेना हारी। बाद में अंग्रेज सरकार ने हस्तक्षेप कर दोनों राज्यों के बीच सुलह करादी।

बीकानेर नरेश रतनसिंह ने मारोठ तथा मौजगढ़ के सम्बन्ध में अंग्रेज सरकार के पास दावा पेश किया।

बूंदी में डायन कहकर औरतों को मारने की मनाई की गई।

बेगूं (उदयपुर राज्य) के जागीरदार ने होल्कर के राज्य (इन्दौर) में लूटमार की।

बांसवाड़ा के शासन कार्यों में अंग्रेज पोलिटिकल एजेण्ट ने हस्तक्षेप किया।

कर्नल टॉड ने वर्तमान राजस्थान प्रांत के लिए अपने इतिहास में पहली बार "राजस्थान" शब्द का प्रयोग किया।

१८३० बीकानेर नरेश ने विद्रोही सरदारों का दमन किया।

लार्ड विलियम बेंटीक अजमेर आया।

(नवम्बर ३) भादरा के ठाकुर ने पूगल पर आक्रमण किया।

ई० सन्	घटना
१८३१	जैसलमेर नगर का परकोटा बना ।
	नाथद्वारा के गुंसाई ने मेवाड़ राज्य से स्वतन्त्र होने की कोशीश की लेकिन अंग्रेज सरकार ने अस्वीकार कर दिया ।
१८३२	(जनवरी १८) लार्ड विलियम बैंटीक ने अजमेर में राजस्थान के राजाओं—किशनगढ़, कोटा, उदयपुर, बूंदी व टोंक–ने भाग लिया ।
	तारागढ़ का किला अंग्रेजों द्वारा तुड़वाया जाकर अंग्रेजी सेना हेतु स्वास्थ्य स्थल में परिणित किया गया ।
	अंग्रेज सरकार द्वारा फारसी के स्थान पर अंग्रेजी को राजनयिक भाषा बनाया गया ।
	अजमेर उत्तर-पश्चिमी प्रांत (वर्तमान उत्तर प्रदेश) के प्रशासन के अन्तर्गत गया ।
	किशनगढ़ नरेश कल्याणसिंह राजगद्दी से हटाया गया ।
१८३३	(मार्च ७) उदयपर नरेश ने मारवाड़ क्षेत्र के अपने गांवों को अंग्रेजी सरकार के प्रशासन के अन्तर्गत रखने का इकरार किया । राज्य ने यह इकरार ८ वर्षों के लिए किया तथा मेरवाड़ा की अपने हिस्से की आय में से २० हजार चित्तौड़ी (सोलह हजार कलदार) रुपये मेर बटालियन के लिए देना स्वीकार किया । मेड़ता की टकसाल बन्द की गई ।
१८३४	(अप्रेल ६) जैसलमेर व बीकानेर की सेनाओं के बीच वासणी की लड़ाई हुई । राजस्थान के दो राज्यों के बीच की यह अन्तिम लड़ाई थी ।
	प्रतापगढ़ के महारावत सांवतसिंह ने दलपतसिंह को राज्य कार्य सौंपा ।
	जयपुर राज्य के शेखावाटी क्षेत्र में अलग सेना तैयार की गई जिसका सेनाध्यक्ष एक अंग्रेज अधिकारी रखा गया ।
	बीकानेर व शेखावाटी में विद्रोह हो जाने के कारण अंग्रेजी सेना भेजी गई ।
१८३५	(जनवरी २७) अंग्रेज सेना ने सांभर नगर व झील पर कब्जा किया ।
	(फरवरी २) गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी के शिक्षा सदस्य लार्ड मेकाले भारत में शिक्षा का माध्यम पूर्वी भाषाओं के स्थान पर अंग्रेजी स्वीकार कराया ।
	(फरवरी ६) जयपुर नरेश तृतीय जयसिंह विष से मार डाला गया ।
	(फरवरी) जयपुर का मंत्री झूथाराम पदच्युत किया गया ।
	(मई १२) बीकानेर व जैसलमेर नरेशों के बीच सुलह हुई ।
	(अक्टुबर २३) अंग्रेजों ने मारवाड़ और मेरवाड़ा की सीमा पर के २८ गांवों को ९ वर्षों के लिये अपने प्रबंध में लिया ।
	(दिसम्बर ७) जोधपुर नरेश मानसिंह और अंग्रेज सरकार के बीच जोधपुर राज्य द्वारा १५०० घोड़ों को रखने के विषय में एक नई संधि की गई ।
	भरतपुर नरेश बलवंतसिंह को पूर्ण शासनाधिकार दिये गये ।

ई० सन्	घटना
१८३५	अंग्रेजों ने शेखावाटी व तंवरावाटी (जयपुर राज्य) पर कब्जा किया तथा वहाँ रखी गई अंग्रेजी सेना की टुकड़ी का नाम शेखावाटी बिग्रेड रखा।
१८३६	(जून ६) बांसवाड़ा के महारावल भवानीसिंह ने शासनकार्य सुव्यवस्थित रूप से चलाने व बकाया खिराज का भुगतान करने तथा विशेष कर भीलों पर होने वाले अत्याचारों को रोकने के लिये अंग्रेज सरकार से इकरार किया।
	अंग्रेजों ने मालानी परगने (बाड़मेर, जसोल नागर, सिंदरी आदि) को अपने नियत्रण में लिया तथा वहां अंग्रेजी सेना रखी गई।
	उदयपुर के महाराणा जवानसिंह ने आबू पहाड़ की यात्रा की। इसके बाद से विभिन्न राज्यों के नरेश आबू पहाड़ पर जाने लगे।
	अजमेर में पहली अंग्रेजी सरकारी पाठशाला खुली।
१८३७	शेखावाटी ब्रिग्रेड जयपुर राज्य के अधीन किया गया।
	अंग्रेजों ने एरनपुरा छावनी (सिरोही राज्य) स्थापित की।
	बीकानेर नरेश रतनसिंह ने गया में राजपूतों से अपनी पुत्रियों को न मारने की प्रतिज्ञा करवाई।
१८३८	(अप्रेल ८) राजराणा मदनसिंह के कोटा राज्य का प्रशासन छोड़ने पर अंग्रेज सरकार से मित्रता, सहायता व संरक्षण की संधि हुई और उसे अलग राज्य देने का तय हुआ।
	(अप्रेल १०) अंग्रेज सरकार की कोटा के महाराव रामसिंह से झालिमसिंह के वशजों के निर्वाह के लिये इकरार हुआ जिसके अनुसार कोटा राज्य के परगने देकर एक अलग राज्य झालावाड़ स्थापित किया गया।
	(मई ३१) उदयपुर के महाराणा ने मेवाड़ की आय में से भोमट में रखी हुई भील सेना के खर्च में पैंतीस हजार रुपये कलदार देना स्वीकार किया।
	(सितम्बर २६) जयपुर में अंग्रेज एजेन्ट मेजर रोस ने मंत्री का कार्य संभाला।
	जैसलमेर नरेश द्वारा अंग्रेजों को प्रथम अफगान युद्ध में सहायता दी गई।
	जोधपुर नरेश की अनुमति लेकर कुचामन के ठाकुर ने चांदी के सिक्के जारी किये।
	अलवर राज्य में निर्धारित लगान पर निर्धारित समय के लिये काश्त की भूमि दी जाने लगी।
१८३९	(अप्रेल १८) जयपुर राज्य में अंग्रेजी सरकार की एजेन्सी स्थापित की गई।
	(सितम्बर २४) अंग्रेज सरकार तथा जोधपुर नरेश द्वारा राज्य के प्रशासन के लिये समझौता होकर जोधपुर राज्य में अंग्रेज एजेन्सी स्थापित की गई।
	(सितम्बर१६) अजमेर के कमिश्नर सदरलैंड ने अंग्रेजी सेना लेकर जोधपुर पर कब्जा किया।
	(अक्टुबर) जोधपुर राज्य में राजपूतों की पुत्रियों के विवाह में चारण,

ई० सन्	घटना
१८३९	भाटों व ढोलियों के नेग की रकम निश्चित की गई ताकि राजपूत परेशान होकर अपनी बेटियों को नहीं मारे।
	जयपुर नरेश ने अपने राज्य में पहली बार दीवानी व फौजदारी न्यायालय स्थापित किये।
	जोधपुर राज्य में अंग्रेज एजेन्ट की सलाह से एक हजार की जागीर पर ८० रुपया वार्षिक रेख के लेना निश्चय किया गया।
	जोधपुर नगर में न्यायालय स्थापित हुये।
	भामट के भीलों व गिरासियों ने उत्पात किये।
१८४०	(फरवरी १) उदयपुर के महाराणा तथा उसके सरदारों के बीच कौलनामा, जो मई १८१८ में तैयार किया गया था, पर हस्ताक्षर हुए।
	(फरवरी २८) गवर्नर जनरल के आदेश से जोधपुर वापस महाराजा मानसिंह का लौटाया गया।
	(नवम्बर १५) खंगारोत किशनसिंह ने जयपुर व सांभर के बीच कालख के किले पर कब्जा किया।
१८४१	(जनवरी) जोधपुर नरेश मानसिंह करनल सदरलेंड से मिलने आमेर पहुंचा।
	बीकानेर नरेश रतनसिंह ने कावुल युद्ध के समय अंग्रेज सरकार को ऊंटों की सहायता दी।
	आबू पहाड़, उदयपुर, जयपुर, जोधपुर व देवली में वकीलों के न्यायालय पोलिटिकल अफसरों की निगरानी में खोले गये। इनका काम यात्रियों के लिये न्याय व्यवस्था करना था।
	खेरवाड़ा में भीलों की सेना "भील कौर" संगठित की गई।
१८४२	अलवर राज्य में प्रथम आधुनिक स्कूल की स्थापना हुई।
	अजमेर व मेरवाडा के प्रशासन का एकीकरण किया गया।
१८४३	जयपुर नगर में अफगानों ने दंगा किया जिसमें राजमाता व उसके भाई का हाथ बताया गया।
	गुलामी प्रथा भारत में अवैध घोषित की गई।
	अंग्रेजों ने सिंध पर कब्जा कर लिया तब जोधपुर की ओर से अमरकोट पर अपना दावा पेश किया गया।
	जैसलमेर ने अंग्रेजों को सिंध के मीरों पर आक्रमण के वक्त सहायता दी जिसके फलस्वरूप अंग्रेजों ने सिंध के टालपुरों के मीरों से जीते शाहगढ़, घड़सिया व गोटरू के किले दिये।
	जोधपुर राज्य के गोडवाड के हाकिम (अधिकारियों) ने सिरोही के सीमावर्ती गांवों में लूटमार की तब एक अंग्रेज अधिकारी मध्यस्थता के लिये नियुक्त किया गया। उसने दोनों राज्यों का सीमान्कन किया।

ई० सन्	घटना
१८४३	बीकानेर नरेश रतनसिंह को उपद्रवियों के दमन और गिरफ्तारी के लिये अंग्रेज सरकार की ओर से आदेश दिया गया।
१८४४	बीकानेर नरेश रतनसिंह ने राजपूतों में कन्याओं को नहीं मारने की आज्ञा जारी की। अंग्रेज सरकार की ओर से प्रतापगढ़ के महारावत को गद्दीनसीनी की खिलाअत मिली।
	जयपुर के जनाना महलों की रूपा बडारण ने जूथाराम द्वारा छिपाई गई लाखों की धनराशि बताई।
	जयपुर में महाराजा कॉलेज स्थापित किया गया।
	अलवर नरेश बन्नेसिंह ने शिलीसेढ़ बांध का निर्माण कराया।
	सिंधिया ने पाटण का दो तिहाई हिस्सा अंग्रेजों को दिया।
	बाड़मेर से अंग्रेजी सेना हटा कर जोधपुर की सेना रखी जाने लगी।
१८४५	(फरवरी ८) उदयपुर राज्य के सरदारों की चाकरी का झगड़ा निबटाने के लिये एक नया इकरारनामा लिखा गया।
	अलवर नरेश बन्नेसिंह ने अपने सिक्के चालू किये।
	तीजारा के बलवंतसिंह के निस्संतान मरने पर तीजारा की जागीर पुनः अलवर राज्य में मिलाई गई।
	सिरोही नरेश ने आबू पहाड़ पर अंग्रेजों को सेनीटोरियम बनाने की सुविधा दी।
	बीकानेर नरेश रतनसिंह ने अंग्रेजों को सिक्खों के विरुद्ध युद्ध में सहायता दी।
१८४६	(फरवरी ८) उदयपुर के महाराणा और उसके सरदारों के बीच अपने अपने दायित्वों को निभाने के लिये कौलनामा लिखा गया।
	(जून) उदयपुर राज्य का खिराज अंग्रेज सरकार ने ३ लाख के बदले २ लाख कर दिया।
	(दिसम्बर) शेखावत डूंगरसिंह और जवाहरसिंह आगरा के किले का जेलखाना तोड़ कर निकल भागे।
	सांवली का ठाकुर उदयसिंह डूंगरपुर का स्वामी बना लेकिन प्रतापगढ़ के महारावत दलपतसिंह की सलाह से शासन चलाना स्वीकार किया।
	मेजर फारेस्टर ने सीकर किले पर कब्जा किया।
१८४७	(फरवरी १५) जयपुर राज्य में बच्चों को बेचने की प्रथा अवैध घोषित की गई।
	(मई १५) अमरकोट जिला तथा किले के हस्तान्तरण के लिये जोधपुर नरेश तथा अंग्रेजी सरकार के बीच समझौता हुआ।
	(जून १८) नसीराबाद के अंग्रेजी खजाने के ५२,००० रु० लूटे गये।

ई० सन्	घटना
१८४७	(अक्टुबर) अजमेर मेरवाड़ा की पैमाइश की गई।
	ईस्ट इंडीया कम्पनी ने अजमेर में प्राथमिक पाठशाला को हाईस्कूल तक वढ़ा दिया।
	(नवम्बर ७) जोधपुर सेना द्वारा डूंगरसिंह पकड़ा गया।
	(नवम्बर २६) ग्वालियर राज्य द्वारा केशोरायपाटन परगने का दो तिहाई हिस्सा अंग्रेजों ो १८४४ की जनवरी १३ की संधि के अनुसार दिया गया उसको वूंदी नरेश ने ८०,००० वार्षिक पर लिया। इसका एक तिहाई हिस्सा पहले से ही वूंदी के पास था।
	अंग्रेजी सरकार ने उदयपुर के हिस्से के गांव सदा के लिये अपने अधिकार में कर लिये।
	अजमेर से इस्तमरारी का परगना फूलिया अलग किया गया।
१८४८	(जून २७) अंग्रेजों ने शाहपुरा नरेश को फूलिया परगने के वारे में सनद दी।
	वीकानेर नरेश रतनसिंह ने मुलतान के दीवान मूलराज के वागी होने पर उसके दमन में अंग्रेजों की सहायता की।
	अजमेर नगर की पहली वार जनगणना की गई।
	वीकानेर नरेश ने द्वितीय सिक्ख युद्ध में अंग्रेजों की सहायता की।
१८४९	वीकानेर, भावलपुर (सिंध) तथा जैसलमेर राज्यों की सीमायें निर्धारित की गई।
	वाड़मेर, जोधपुर के अंग्रेज पोलिटिकल एजेण्ट की देख रेख में रखा गया।
	जोधपुर नरेश तख्तसिंह की आज्ञानुसार वहां के जागीरदार प्रति हजार ८० रुपये सालाना रेख के देने लगे।
	जयपुर राज्य में न्यायालयों के लिये लिखित में कानून जारी किये गये।
१८५०	(जून १०) जोधपुर नरेश तख्तसिंह ने चांदी का तुलादान किया।
	झालावाड़ में दीवानी व फौजदारी न्यायालय स्थापित हुये।
१८५१	जयपुर नरेश रामसिंह को शासन करने के पूर्ण अधिकार मिले।
	(मार्च ४) वीकानेर के राजरतन बिहारी के मन्दिर की प्रतिष्ठा हुई।
१८५२	(जुलाई) करौली राज्य में उत्तराधिकारी के विषय में जन आन्दोलन हुवा।
	प्रतापगढ़ के महारावत दलपतसिंह ने डूंगरपुर का शासन अधिकार छोड़ा।
	जयपुर नगर में संस्कृत कॉलेज की स्थापना की गई।
१८५३	भारत के अंग्रेज शासित प्रान्तों में डाक की व्यवस्था की गई।
	शीतला का टीका अजमेर में पहली बार लगाया जाना आरम्भ हुआ।
१८५४	(मई) सिरोही के राव शिवसिंह ने अपने राज्य का प्रबंध और अच्छी तरह चलाने के लिये अंग्रेजी सरकार को सौंपा।
	सम्पूर्ण भारत के लिए डाक टिकट जारी किया गया।

ई० सन्	घटना
१८५४	अंग्रेजों का मालानी से नियन्त्रण हटा तथा जोधपुर राज्य की सेना के नियन्त्रण में आया।
	सिरोही नरेश शिवसिंह ने शिवगंज कस्बा बसाया।
	उदयपुर के महाराणा तथा उसके सरदारों के बीच आपसी विवादों को तय करने का इकरारनामा लिखा गया।
	बीकानेर नरेश सरदारसिंह ने सती प्रथा और जीवित समाधि लेने पर रोक लगाई।
१८५५	(जुलाई ५) करौली राज्य के उत्तराधिकारी के लिए पार्लियामेंट ने आदेश जारी किये जिससे महाराजा मदनपाल को राज्य करने के पूर्ण अधिकार मिले।
	कुशलगढ़ को बांसवाड़ा राज्य के अधीन माना गया।
	बीकानेर नरेश सरदारसिंह ने ईश्वरीसिंह पर सेना भेज कर चूरू खाली करवाया।
	भरतपुर में दीवानी व फौजदारी न्यायालय स्थापित किए गए।
१८५६	(जनवरी १४) जयपुर में रामनिवास बाग की नींव रखी गई। इसका नामकरण २६ दिसम्बर १८७१ को किया गया।
	(जुलाई २५) हिन्दू विधवाओं के पुनर्विवाह का कानून बनाया गया।
१८५७	(जनवरी २२) दमदम (बंगाल) के सिपाहियों में नई कारतूसों को लेकर असन्तोष फैला।
	(मार्च १) खेतड़ी के प्रशासन में सुधार लाने व शांति स्थापित करने के लिए जयपुर से सेना भेजी गई।
	(मई १०) भारत में सिपाही विद्रोह आरम्भ हुआ।
	(मई १५) बीकानेर की सरहद के निकट हांसी की दो पलटनों ने विद्रोह किया तथा २६ मई को हरियाना की पलटन ने विद्रोह किया तब बीकानेर से सेना विद्रोह दबाने भेजी गई।
	(मई १६) अंग्रेजों ने राजस्थान के राजाओं को आदेश दिया कि वे विद्रोहियों के विरुद्ध अंग्रेज सरकार की सहायता के लिए अपनी सेनायें तैयार रखें।
	(मई १६) करौली नरेश ने कोटा नरेश की रक्षा के लिए सेना भेजी।
	(मई २८) नसेराबाद छावनी में सेना की दो टुकड़ियों ने सशस्त्र विद्रोह किया।
	(मई २६) मेवाड़ का अंग्रेज एजेन्ट आबू से मेवाड़ लौटा।
	(मई ३१) भरतपुर की सेना ने होडुल में विद्रोह किया।
	(जून २) नीमच छावनी के सैनिकों ने विद्रोह किया।
	(जून ४) नीमच छावनी को नष्ट कर विद्रोही सैनिक निम्बाहेड़ा पहुंचे व उस पर कब्जा कर लिया।

ई० सन्	घटना
१८५७	(जून ६) मेवाड नरेश ने नीमच के विद्रोहियों के विरुद्ध सेना भेजी ।
	(जून ८) कोटा, प्रतापगढ़ तथा बूंदी की सहायता से नीमच पर पुनः कब्जा किया गया ।
	(जून १६) नसीराबाद की कुछ सेना ने दिल्ली पहुंचने की कोशिश की लेकिन रास्ते में ही रोकदी गई ।
	(जुलाई ४) कोटा की सेना ने विद्रोह कर शहर को लूट लिया ।
	(जुलाई २१) हांसी में विद्रोहियों का जोर बढ़ जाने पर बीकानेर से २००० सैनिक व दो तोपें अंग्रेजी सेना की सहायतार्थ भेजी गई ।
	(अगस्त १०) डीसा से आई सेना के हिन्दुस्तानी सिपाहियों ने नसीराबाद में विद्रोह किया ।
	(अगस्त २१) जोधपुर लीजन की एक टुकड़ी ने, जो अनादरा में तैनात थी, ने आबू पहाड़ पर पहुच कर वहां की विद्रोही सेना का साथ दिया और अंग्रेज सैनिकों पर आक्रमण किया ।
	(सितम्बर ८) बिठुड़ा (आऊवा के निकट) में जोधपुर की सेना तथा आऊवा की सेना के बीच युद्ध हुआ । जोधपुर की सेना हारी ।
	(सितम्बर १०) आगरा से विद्रोही सैनिक भाग कर हिण्डौन पहुंचे ।
	(सितम्बर १८) अंग्रेजी सेना ने निम्बाहेड़ा पर आक्रमण कर किले को २ दिन तक घेरने के बाद कब्जा किया । बाद में निम्बाहेड़ा परगना उदयपुर नरेश को दे दिया गया ।
	(सितम्बर १८) लारेन्स ने आऊवा स्थित विद्रोहियों का दमन करने के लिये स्वयं एक अंग्रेज सेना के साथ आक्रमण किया ।
	(अक्टुबर १२) हाड़ौती का अंग्रेज एजेन्ट मेजर ब्रिटेन निमच के विद्रोह को दबा कर कोटा लौटा ।
	(अक्टुबर १३) दिल्ली से लिखे गये पत्र, जो अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने के सम्बन्ध में थे, जयपुर में एजेन्ट एडन ने पकड़े ।
	(अक्टुबर १५) कोटा राज्य की सेना ने अंग्रेजी रेजीडेन्सी पर आक्रमण कर दिया अतः डा० सेडलर, मेजर बटलर आदि मारे गये ।
	प्रतापगढ़ के महारावत की सेना ने कासिमखां विलायती आदि विद्रोहियों को मारा । अलवर के मेवों ने अंग्रेजों की रसद लूटा ।
	तांतिया टोपे लालसोट, हिन्डोन, सवाई माधोपुर आदि स्थानों पर फिरता रहा ।
	शाहपुरा नरेश लक्ष्मणसिंह ने विद्रोह के समय उदयपुर ने पोलीटिकल एजेंट को कोई सहायता नहीं दी ।
	एरनपुरा की हिन्दुस्तानी सेना ने आबू पहाड़ के अंग्रेजों पर आक्रमण किया ।
	जोधपुर के किले पर चामुन्डा के मन्दिर का पुनः निर्माण हुआ ।

ई० सन्	घटना
१८५८	(जनवरी २०) अंग्रेजी सेना के कर्नल होम्स ने ६ दिन तक लगातार युद्ध कर विद्रोहियों को दबाया ।
	(जनवरी २१) तांतिया टोपे की सेना सीकर में अंग्रेजी सेना से हारी ।
	(जनवरी २६) कर्नल होम्स ने आऊआ पर कब्जा किया व कत्लेआम कराया । कई मन्दिरों तक को नष्ट कर दिया गया ।
	(मार्च १२) तांतिया टोपे नाथद्वारा पहुंचा ।
	(मार्च १३) अंग्रेजी सेना लेकर रॉबर्ट कोटा पहुंचा ।
	(मार्च ३०) अंग्रेजी सेना ने विद्रोहियों को हराकर कोटा पर कब्जा कर लिया ।
	(मई २४) राजस्थान की रियासतों के सिक्कों पर बादशाह के नाम के स्थान पर महारानी विक्टोरिया का नाम लिखा जाने लगा ।
	(जून १५) अंग्रेज सेना जोधपुर से कोठारिया (मेवाड़ राज्य) के जागीरदार को दबाने भेजी गई क्योंकि उसके विरुद्ध यह आरोप लगाया था कि वह आऊवा के कुशलसिंह को शरण दे चुका है । बाद में यह आरोप गलत निकला ।
	(जुलाई १) तांतिया टोपे ने टोंक पर हमला किया ।
	(जुलाई २१) विद्रोहियों की सेना बूंदी आई लेकिन बूंदी नरेश ने भगा दिया ।
	(अगस्त ८) तांतिया टोपे भीलवाड़ा पहुंचा ।
	(अगस्त १४) तांतिया टोपे व अंग्रेजों के बीच कोठारिया (उदयपुर) स्थान पर युद्ध हुआ ।
	(नवम्बर १) इलाहाबाद के दरबार में लार्ड कैनिंग द्वारा राजकीय घोषणा की गई कि अब भारत का अंग्रेजी शासन महारानी को हस्तांतरित कर दिया गया है । लार्ड कैनिंग पहला वाइसराय बना ।
	(दिसम्बर ११) तांतिया टोपे के साथियों ने बांसवाड़ा पर कब्जा कर लिया तब महारावत ने अपने राज्य के उत्तर की ओर जंगल में जाकर आश्रय लिया लेकिन बाद में अंग्रेजी सेना आ जाने पर विद्रोही मेवाड़ की ओर चले गये ।
	(दिसम्बर २३) तांतियां टोपे के सैनिकों का प्रतापगढ़ में अंग्रेजी सेना से सामना हुआ ।
	करौली के सिक्के पर महारानी विक्टोरिया का नाम लिखा जाने लगा
	अलवर में अंग्रेज एजेण्ट रहने लगा ।
१८५९	(जनवरी) तांतिया टोपे सीकर में अंग्रेजी सेना से हारा ।
	(फरवरी १७) तांतिया टोपे मारवाड़ की ओर से मेवाड़ में घसकर कांकरोली पहुंचा लेकिन अंग्रेजी सेना तितर बितर करदी गई ।

ई० सन्	घटना
१८५९	(जुलाई ८) सैनिक विद्रोह के वाद भारत भर में शान्ति होने की घोषणा की गई।
	(अगस्त २०) मेजर टेलर ने निम्बाहेडा उदयपुर नरेश से वापस लेकर टोंक को दे दिया।
	(जुलाई २८) सैनिक विद्रोह के वाद भारत में धन्यवाद दिवस मनाया गया।
	(नवम्बर २९) आयकर लागू किया गया तथा सरकारी कागजी सिक्का (नोट) चालू किया गया।
	जोधपुर के सिक्के पर एक ओर, मुगल वादशाह के नाम के स्थान पर महारानी विक्टोरिया का और दूसरी ओर महाराजा तख्तसिंह का नाम लिखा जाने लगा।
	अलवर राज्य में भूमि का बन्दोबस्त चालू किया गया।
	जहाजपुर (उदयपुर राज्य) के मीणो का विद्रोह दवाया गया।
	किसनगढ़ के महाराजा प्रतापसिंह की पासवान के वेटे जोरावरसिंह के पुत्र मोतीसिंह ने सरदारों से मिलकर विद्रोह किया।
	वीकानेर के सिक्कों के लेख में परिवर्तन किया गया।
१८६०	(सितम्बर) आऊआ के ठाकुर ने अपने को अंग्रेजों के हवाले किया।
	वूंदी राज्य से पाक्षिक पत्र "सर्वहित" प्रकाशित होने लगा।
	(दिसम्बर १२) अंग्रेजों को केसोराय पाटन (वूंदी राज्य) के दो तिहाई हिस्से का स्वत्वाधिकार सिन्धिया ने दे दिया।
	जैसलमेर में सोने की मोहर ढलने लगी।
	जैसलमेर में महारानी विक्टोरिया के नाम से चांदी के सिक्के ढाले गये लेकिन चालू १८६३ से किए गए।
	बांसवाड़ा राज्य ने प्रतापगढ़ के आजंदा गांव पर वलपूर्वक कब्जा कर लिया अत: मुकदमा अंग्रेजी सरकार के पास चला।
१८६१	(फरवरी) प्रतापगढ़ के सगतुली, बोरी, रामपुर, अम्बेरारा, तथा मोरिया के ठाकुरों तथा रतलाम, जावड़ा, मन्दसौर व वासवाड़ा के कुछ जागीरदारों ने मेवाड़ के पोलिटिकल एजेण्ट की उपस्थित में यह इकरार किया कि वे भीलों को अपने क्षेत्र में लूटमार नहीं करने देंगे और न एक दूसरे के क्षेत्र में घुसने देंगे।
	(मार्च ११) वूंदी नरेश को गोद लेने की सनद मिली।
	(अप्रेल ११) वीकानेर नरेश को सिपाही विद्रोह के वक्त की सेवा के उपलक्ष में सिरसा जिले के टीवी परगने के ४१ गांव मिले।
	(मई ७) रविन्द्रनाथ टैगोर का जन्म हुआ।
	(अगस्त १५) मेवाड़ में सति प्रथा व जीतेजी समाधि लेना गैर कानूनी घोषित किया गया। साथ ही स्त्रियों को डायन कहा जाकर मारा जाना बन्द किया गया।

ई० सन्	घटना
१८६१	(सितम्बर ७) जयपुर में मेडिकल कालिज खोला गया।
	(अक्टूबर २) निम्बाहेड़ा परगना उदयपुर से वापस लिया जाकर टोंक के नवाब को दिया गया।
	धोलपुर नरेश के विरुद्ध विद्रोह हुआ लेकिन शीघ्र दबा दिया गया।
१८६२	(जनवरी) अजमेर में ५४८ सिपाहियों का एक स्थायी पुलिस दल बनाया गया।
	(मार्च ११) राजस्थान के समस्त नरेशों को सिवाय टोंक के नवाब के गोद लेने का अधिकार अंग्रेज सरकार से मिला। टोंक नवाब को यह अधिकार २८ मई को मिला।
	(सितम्बर १५) प्रसिद्ध इतिहासज्ञ गौरीशंकर हीराचंद ओझा का जन्म हुआ।
१८६३	(जून) उदयपुर में प्रथम सरकारी पाठशाला शम्भु रत्न पाठशाला खुली।
	(अगस्त) उदयपुर में "अहलीयान श्री दरबार राज्य मेवाड़" नामक कचहरी स्थापित की गई।
	(सितम्बर १४) जयपुर की रीजेन्सी कोन्सिल भंग हुई।
	नया कुचामनी सिक्का ढाला गया।
१८६४	(जनवरी १) उदयपुर में सरकारी अधिकारी निजामुद्दीन से असन्तुष्ट होकर जनता ने हड़ताल की।
	(मई ६) करौली में पहला अंग्रेजी स्कूल खुला।
	(जून) आगरा से अजमेर तक तार की लाईन चालू की गई।
	मेड़ता की टकसाल पुनः चालू की गई।
	वेणेश्वर के मन्दिर के अधिकार के लिए डूंगरपुर और बांसवाड़ा के बीच विवाद उठने पर अंग्रेज सरकार ने डूंगरपुर के पक्ष में निर्णय दिया।
१८६५	(जुलाई) लावा के ठाकुर ने टोंक के नवाब द्वारा की जाने वाली ज्यादतियों के विरुद्ध अंग्रेजी सरकार को शिकायत की जो बाद में दूर कर दी गई।
	(अक्टूबर २) महात्मा गांधी का जन्म हुआ।
	बांसवाड़ा राज्य ने अंग्रेजी सरकार को उस राज्य में होकर रेल की लाईन निकालने के लिए बिना मूल्य भूमि देना तय किया।
	जयपुर राज्य में पैमाइश पहली बार होकर नक्शे तैयार किये गए।
	अलवर राज्य ने अंग्रेज सरकार से इकरार किया कि वह अपने राज्य की सीमा में रेल लाईन के लिए भूमि मुफ्त में देगा।
	प्रतापगढ़ राज्य की सीमा में होकर रेलवे लाईन लाने के विषय में अंग्रेज सरकार से बातचीत हुई।
	उदयपुर में अंग्रेजी शिक्षा आरम्भ हुई।

ई० सन्	घटना
१८६५	भरतपुर राज्य की कौंसिल ने रेल्वे लाईन के प्रयोजनार्थ अंग्रेज सरकार को मुफ्त भूमि देने, भूमि पर पूर्ण क्षेत्राधिकार देने तथा रेल्वे द्वारा जाने वाले माल पर कोई राहदारी न लेने का इकरार किया लेकिन यह इकरार लिखा न जा सका।
१८६६	(मार्च २७) कोटा के महाराव रामसिंह का स्वर्गवास होने पर उसकी रानियों को सति होने से अंग्रेज एजेन्ट ने रोका।
	(जुलाई १६) जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह और अंग्रेज सरकार के बीच रेल्वे के लिए मुफ्त भूमि देने के लिए एक अहदनामा लिखा गया।
	(अगस्त २३) सिरोही के राव ने आबू पहाड़ पर कुछ कानूनों को लागू करने को सहमति दी।
	जोधपुर से "मारवाड़ गजट" प्रकाशित होने लगा।
	(सितम्बर २२) सिरोही के राव ने आबू के अनादरा में नगरपालिका कानन लागू करने की सहमति दी।
	(अक्टुबर १६) केन्द्रीय नगरपालिका कानून अजमेर में लागू किया गया।
	जयपुर, उदयपुर व भरतपुर में कन्या पाठशालायें खोली गईं।
	झालावाड़ नरेश ने अंग्रेज सरकार को रेल्वे लाईन के लिए मुफ्त भूमि देने का इकरार किया।
	बीजवाड़ के लखोधरसिंह ने अलवर राज्य के लालपुरा गाँव पर कब्जा किया।
	बांसवाड़ा के महारावल ने कुशलगढ़ के राव पर झूठा आरोप लगाया कि राव का कुंवर कलिंजरा के थाने से एक कैदी को भगा ले गया। अतः अंग्रेज सरकार ने कुशलगढ़ की जागीर खेड़ा के गांव जो रतलाम राज्य में थे, जब्त कर लिये। यह आरोप बाद में झूठा निकला।
१८६७	(मई १) ब्यावर में नगरपालिका स्थापित हुई।
	(जून) राजस्थान के राजाओं के लिए तोपों की सलामी तय की गई।
	(जून ४) जयपुर में शिल्पकला का स्कूल खोला गया।
	(जून २६) उदयपुर नरेश के लिए १६ तोपों की सलामी स्वीकृत की गई।
	(जुलाई ८) किशनगढ़ नरेश ने रेल्वे निकलने पर राहदारी शुल्क का मुआवजा २०,००० रुपया वार्षिक लेना स्वीकार किया।
	(अगस्त १) लावा के ठाकुर के चाचा खेतसिंह की १३ राजपूतों के साथ टोंक के नवाब द्वारा हत्या की गई।
	(अक्टुबर ३१) सिरोही राज्य ने अंग्रेजी सरकार को अपराधियों के लेन-देन के लिए संधि की।
	(अक्टुबर २७) अलवर राज्यों ने अंग्रेजी सरकार से अपराधियों के लेन-देन के विषय में समझौता किया।

ई० सन्	घटना
१८६७	(नवम्बर १४) टोंक का नवाब राजगद्दी से हटाया गया तथा लावा ठिकाना टोंक से स्वतन्त्र किया गया।
	(दिसम्बर २४) भरतपुर राज्य ने अंग्रेजों से अपराधियों के लेन-देन के लिए सन्धि की।
	डूंगरपुर के देवल की पाल के भीलों ने राज्य के विरुद्ध विद्रोह किया जो बाद में दबा दिया गया।
	प्रतापगढ़ के महारावत को अंग्रेज सरकार की ओर से १५ तोपों की सलामी नियत की गई।
	प्रतापगढ़ को राजधानी बनाया गया।
	टोंक के नवाब की तोपों की सलामी घटाई गई।
	अंग्रेज सरकार ने बांसवाड़ा नरेश की स्थायी रूप से १५ तोपों की सलामी तय की।
	सुजानगढ़ (बीकानेर राज्य) में डकैती व ठगी रोकने का विभाग समाप्त किया गया।
	जयपुर राज्य में पहली बार राजकीय परिषद् की स्थापना की गई।
१८६८	(फरवरी ५) जयपुर नरेश ने रेलवे के प्रयोजन के लिए मुफ्त भूमि अंग्रेज सरकार को देना स्वीकार किया।
	(फरवरी १७) अजमेर के सरकारी कालेज की नींव रखी गई।
	(मार्च १) जयपुर का मेडिकल कालेज बन्द हुआ।
	(मार्च ११) भरतपुर राज्य ने अंग्रेज सरकार से अपराधियों के विनिमय के बारे में समझौता किया।
	(अप्रेल २८) झालावाड़ राज्य ने अंग्रेज सरकार से अपराधियों के विनिमय के बारे में समझौता किया।
	(अगस्त ७) जयपुर राज्य ने अंग्रेज सरकार से अपराधियों के विनिमय के लिए समझौता किया।
	(अगस्त २६) जोधपुर राज्य ने अंग्रेज सरकार से अपराधियों के विनिमय के बारे में समझौता किया।
	(दिसम्बर) अलवर नरेश तथा नीमराणा ठाकुर के बीच इकरारनामा लिखा गया जिसके अनुसार नीमराणा को अलवर राज्य के अधीन माना जाकर उसके द्वारा दिया जाने वाला खिराज व नजराना तय किया गया।
	(दिसम्बर १२) किशनगढ़ राज्य ने अंग्रेज सरकार से अपराधियों के विनिमय के बारे में समझौता किया।
	(दिसम्बर २०) करौली राज्य ने अंग्रेज सरकार से अपराधियों के विनिमय के बारे में समझौता किया।
	(दिसम्बर २३) उदयपुर में महकमा खास स्थापित हुआ।

ई० सन्	घटना
१८६८	(दिसम्बर ३) जोधपुर नरेश ने अंग्रेज सरकार के निर्देशानुसार मन्त्रिमण्डल बनाया।
	जयपुर में नगरपालिका स्थापित हुई।
	डूंगरपर राज्य ने अपने जागीरदारों के न्याय सम्बन्धी अधिकार वापस ले लिये।
१८६९	(जनवरी १७) डूंगरपुर राज्य में राजपूतों द्वारा लड़कियों को मारने की प्रथा बन्द की गई।
	(जनवरी २२) उदयपुर राज्य ने अंग्रेज सरकार से अपराधियों के विनिमय के बारे में समझौता हुआ।
	(फरवरी १५) धौलपुर राज्य ने अंग्रेज सरकार से अपराधियों के विनिमय के बारे में समझौता किया।
	(फरवरी १९) प्रतापगढ़ राज्य ने अंग्रेज सरकार से अपराधियों के विनिमय के बारे में समझौता किया।
	(मार्च ५) टोंक, कोटा व बांसवाड़ा राज्यों ने अंग्रेज सरकार से अपराधियों के विनिमय के बारे में अलग-अलग समझौते किये।
	(अप्रैल २१) डूंगरपुर राज्य ने अंग्रेज सरकार से अपराधियों के विनियम के बारे में समझौता किया।
	(जून १५) बीकानेर राज्य ने अंग्रेज सरकार से अपराधियों के विनियम के बारे में समझौता किया।
	(अगस्त १) बांसवाड़ा नरेश की चार तोपों की सलामी घटाई गई जो १८७९ तक न बढ़ी। कुशलगढ़ को बांसवाड़ा से स्वतन्त्र माना गया।
	(अगस्त ६) बूंदी राज्य ने अंग्रेज सरकार से अपराधियों के बारे में समझौता किया।
	(अगस्त ७) जयपुर राज्य का अंग्रेज से सांभर झील के नमक बनाने व बेचने के विषय में समझौता हुआ।
	जयपुर नगर के विभिन्न बाजारों व गलियों में रात के समय मिट्टी के तेल के चिराग राज्य की ओर से जलाये जाने लगे।
	जयपुर में सार्वजनिक पुस्तकालय खोला गया।
	भरतपुर नरेश जसवंतसिंह को कुछ शर्तों पर राज्याधिकार मिले।
	अजमेर में ईसाईयों ने पहला अंग्रेजी स्कूल स्थापित किया।
	जोधपुर में अंग्रेज एजेंट की सलाह से हुक्मनामे के नियम बनाए गए और साधारणतौर पर इसकी रकम जागीर की एक साल की आमदनी का पौन हिस्सा तय किया गया।
	जोधपुर राज्य के सिक्कों पर "श्रीमाताजी" शब्द लिखा जाने लगा।
	अजमेर में नगरपालिका स्थापित की गई।

ई० सन्	घटना
१८७०	(जनवरी २७) जोधपुर राज्य का अंग्रेजी सरकार से सांभर के नमक के लिए समझौता हुआ।
	(फरवरी १) जयपुर व जोधपुर नरेशों ने सांभर झील अंग्रेजों को सौंपी।
	(अप्रेल १८) अंग्रेजी सरकार से जोधपुर नरेश ने नांवा व गुढा के नमक के लिये इकरार किया।
	(जुलाई २९) जैसलमेर राज्य ने अंग्रेज सरकार से अपराधियों के लेनदेन के बारे में समझौता किया।
	(अगस्त) बांसवाड़ा राज्य में अंग्रेजी चिकित्सा प्रणाली का अस्पताल खुला।
	(अक्टुबर १५) जयपुर के मेयो अस्पताल की नींव रखी गई।
	(अक्टुबर २०) वायसराय लार्ड मेयो अजमेर आया।
	(अक्टुर २२) लार्ड मेयो ने अजमेर में राजस्थान के राजाओं का एक दरबार किया।
	(अक्टुबर २५) वायसराय लार्ड मेयो अजमेर से गया।
	बाल हत्या विरोधी कानून लागू हुवा।
	शाहपुरा राज्य में अंग्रेजी सिक्के का प्रचलन हुवा तब वहां की टकसाल बंद करदी गई।
	सलुम्बर (उदयपुर राज्य) की टकसाल बंद की गई।
	बांसवाड़ा राज्य में सरकारी डाकखाना खोला गया।
	बांसवाड़ा के महारावल लक्ष्मणसिंह ने "लक्ष्मण शाही" सिक्के जारी किये।
	जयपुर में प्रचलित कानूनों में सुधार करने के लिए एक कमेटी बनाई गई।
	अंग्रेज सरकार ने अलवर नरेश शिवदानसिंह के शासन अधिकार छीने।
१८७१	(अगस्त २१) जयपुर नरेश व अंग्रेज सरकार के बीच ४ लाख रुपये वार्षिक खिराज देने का एक नया संधि पत्र लिखा गया।
	मेड़ता की टकसाल वापस बंद की गई।
	अजमेर उत्तर पश्चिमी प्रान्त (वर्तमान उत्तर प्रदेश) के प्रशासन से हटा व भारत सरकार की प्रत्यक्ष देखरेख में आया।
	बांसवाड़ा में हिन्दी की शिक्षा के लिए पाठशाला खोली गई।
	अलवर राज्य के तीन नगरों अलवर, राजगढ़ व तीजारा में नगरपालिकाएँ स्थापित की गईं।
	अलवर राज्य में जागीरदारों के लड़कों के लिए अलग स्कूल खोला गया
	बीकानेर नरेश ने बहतर राज्य शासन के लिए कौन्सिल स्थापित की।
१८७२	(अप्रेल १०) अलवर राज्य की प्रथम जनगणना हुई।
	(नवम्बर ५) लार्ड मेयो ने अजमेर में दरबार किया।
	जयपुर नरेश ने राजपूतों के अलावा अन्य जातियों के विवाह, मौसर आदि पर खर्च की सीमा बांधी।

ई० सन्	घटना
१८७२	बीकानेर में पहला सरकारी स्कूल खोला गया।
१८७३	(अप्रेल) जोधपुर में महकमा खास स्थापित हुआ।
	(जून १) जोधपुर नगर में चोरों पर नियंत्रण रखने के लिए रात को एक के बदले दो तोपें दागी जाने की आज्ञा जारी हुई।
	(नवम्बर) सिपाही विद्रोह का एक नेता शाहदतखां बांसवाड़ा में पकड़ा गया।
	कोटा में अंग्रेजी अस्पताल खोला गया।
	कोटा राज्य की राज्यभाषा फारसी की गई।
	कोटा राज्य में सरकारी डाकखाना खोला गया।
	बांसवाड़ा व कुशलगढ़ के भीलों ने उपद्रव कर सैलाना और झाबुआ में जाकर वारदातें की अतः अंग्रेजी सरकार ने उन्हें दबाया।
	फतहगढ़ (किशनगढ़ राज्य) के जागीरदार ने राज्य के विरुद्ध विद्रोह किया जिस पर अंग्रेजी सरकार की ओर से उसे धमकी दी गई।
	अलवर राज्य में अंग्रेजी तांवे के सिक्के जारी किए गये।
	भरतपुर महाराजा ने अपनी नाबालगी में कौंसिल द्वारा १८६५ में किये गये इकरार को विवादस्पद बतलाया लेकिन अंग्रेज सरकार ने बतलाया कि अंग्रेज सरकार का देशी राज्यों पर सामान्य नियंत्रण रहता है तथा राजा की नाबालगी में विशेष नियंत्रण रहता है अतः नाबालगी की कौंसिल के इकरार सही माने जावेंगे।
	जयपुर में आर्टस कालिज स्थापित हुआ।
१८७४	(अप्रेल) जयपुर राज्य में सबसे पहली रेल लाईन आगरा फोर्ट से बांदीकुई तक खुली।
	दिल्ली से अलवर तक रेल लाईन चालू हुई।
	(मई) बीकानेर नरेश ने जागीरदारों के मुकदमों की जांच और निर्णय देने के लिए एक कमेटी बनाई जिसने ८० मुकदमों में निर्णय दिये।
	(सितम्बर) बांसवाडा व प्रतापगढ़ राज्यों के बीच सीमा संबंधी झगड़ा हुवा।
	(दिसम्बर ६) अलवर से बांदीकुई तक रेल लाईन चालू हुई।
	(दिसम्बर १४) बांसवाडा में अंग्रेज सरकार से तय कर डाकखाना खोला गया।
	(सितम्बर २५) सांभर झील के लिये अंग्रेजी सरकार का न्यायालय स्थापित हुआ तकि कोई अवैध रूप से न तो नमक बना सके व न बेच सके।
	कोटा में लड़कियों का स्कूल चालू किया गया।
१८७५	(अप्रेल १०) दयानंद सरस्वती ने बंबई में आर्य समाज की स्थापना की।
	(अक्टुबर २१) अजमेर में मेयो कालिज चालू हुवा।
	(अक्टुबर २१) महाराजा बीकानेर ने बीदासर के महाजनों की शिकायत की जांच करवाई।

ई० सन्	घटना
१८७५	जयपुर में नल योजना चालू हुई ।
	धोलपुर व अजमेर में प्रथम भूमि बन्दोबस्त किया गया ।
	अंग्रेज सरकार ने कोटा राज्य का शासन स्थानीय अंग्रेज ऐजेंट के सुपुर्द किया ।
१८७६	(मार्च १) शाहपुरा नरेश नाहरसिंह को राज्य करने के पूर्ण अधिकार मिले ।
	(अप्रेल ८) मेवाड़ स्थित अंग्रेज ऐजेन्ट मेवाड़ की सेना लेकर नाथद्वारा गया । वहां के गुसाई गिरधारीलाल को गिरफ्तार किया तथा नाथद्वारा मन्दिर के प्रबन्ध को ५ वर्ष तक अपने नियंत्रण में रखा ।
	(अप्रेल २८) इंग्लेण्ड में घोषणा की गई कि अब महारानी विक्टोरिया भारत की सम्राज्ञी कहलायेगी ।
	(मई ८) नाथद्वारा का गुसाई गिरधारीलाल उदयपुर राज्य द्वार नाथद्वारा से हटाया जाकर मथुरा भेजा गया और उसका पुत्र गोरधनलाल वहां की गद्दी पर बैठाया गया ।
	(जुलाई ३) जोधपुर का राजकीय स्कूल हाईस्कूल बना दिया गया ।
	(दिसम्बर २८) दिल्ली दरबार में अंग्रेज सरकार द्वारा उदयपुर राज्य को राज्य चिन्ह का झंडा भेंट किया गया जिसमें हनुमान के बदले सूर्य का चिन्ह था ।
	कोटा में लड़कियों का स्कूल बंद कर दिया गया ।
	बीकानेर नरेश डूंगरसिंह पर विष प्रयोग किया गया ।
	महाराणा सज्जनसिंह को शासन अधिकार सौंपे गये ।
	झालावाड़ राज्य में नई डाक प्रणाली आरंभ की गई ।
	अलवर राज्य के राज्य चिन्ह में परिवर्तन किया गया ।
	जयपुर नगर में बिजली लगाई गई ।
	जयपुर के रामनिवास बाग में संग्रहालय भवन की नींव रखी गई ।
१८७७	(जनवरी १) दिल्ली के दरबार में ७५ भारतीय नरेशों की उपस्थिति में महारानी विक्टोरिया को भारत की सम्राज्ञी घोषित किया गया । इस दरबार में महाराणा उदयपुर भी सम्मिलित हुआ था ।
	(मार्च १०) उदयपुर में इजलासे खास (सर्वोच्च न्यायालय) स्थापित हुआ ।
	(मई १०) अलवर राज्य के राजगढ़ की टकसाल बंद हुई ।
	(जुलाई २३) अलवर नरेश ने अंग्रेज सरकार से अपने राज्य में अंग्रेजी सिक्के के प्रचलन करने तथा अपने यहां सिक्के न ढालने का इकरारनामा लिखा ।
	भारत में वी० पी० (मूल्यांकित वस्तु) डाक प्रणाली चालू की गई ।
	टोंक के नवाब की तोपों को सलामी जो १८६७ में १० से ११ कर दी गयी थी अंग्रेज सरकार ने वापस १७ कर दी ।

ई० सन्	घटना
	कलकत्ते की अंग्रेजी टकसाल में अलवर राज चिन्ह के चांदी के सिक्के ढाले जाने लगे ।
	भारत सरकार ने बांसवाड़ा राज्य की सलामी की तोपें सदैव के लिए १५ के स्थान में ११ नियत करदी लेकिन १८७८ में वापस १५ कर दी लेकिन महारावल लक्ष्मणसिंह की ११ ही रखी गई जो १८८० की जनवरी में १५ कर दी गई।
	जयपुर में आर्टस कालेज स्थापित हुआ ।
१८७८	उदयपुर राज्य में भूमि का पहला बन्दोबस्त हुआ ।
	जोधपुर नरेश ने मारवाड़ की सरहद में से रेलवे लाईन निकालने के लिए मुफ्त में भूमि दी ।
	पालनपुर नवाब ने रेलवे लाईन बनाने के लिए मुफ्त भूमि दी ।
	डीग (भरतपुर राज्य) में टकसाल बंद की गई ।
१८७९	(अगस्त ११) भारतीय रेल्वे गारंटी एक्ट पास हुवा ।
	(सितम्बर ३०) अलवर नरेश ने भारत सरकार से अलवर राज्य के लिए विशेष तांबे का सिक्का जारी करने का निवेदन किया ।
	धोलपुर, उदयपुर, किशनगढ, सिरोही, बीकानेर, अलवर, लावा, जोधपुर, जैसलमेर व भरतपुर राज्यों का अंग्रेज सरकार से नमक के लिये समझौता हुआ ।
	अजमेर में रेल्वे का कारखाना खोला गया ।
	अजमेर व जयपुर में आर्य समाजें स्थापित हुई ।
	उदयपुर में "सज्जन कीर्ति सुधाकर' पत्र का प्रकाशन प्रारंभ हुआ ।
१८८०	(मार्च २१) महाराणा उदयपुर जोधपुर आया और इस प्रकार १२६ वर्षों से जो दोनों राजाओं के बीच नाराजगी चल रही थी वह दूर हुई ।
	(अगस्त २०) उदयपुर में इजलासे खास के स्थान पर महेन्द्रराज सभा १७ सदस्यों की स्थापित की गई ।
	कोटा राज्य की भाषा फारसी से हिन्दी की गई ।
	(दिसम्बर ७) सिरोही राज्य को अजमेर से अहमदाबाद के बीच रेल लाईन खुलने पर राहदारी का मुआवजा दस हजार रुपया वार्षिक दिया जाने का इकरार अंग्रेज सरकार द्वारा किया गया ।
	भारत में मनीआर्डर भेजने का कार्य प्रारम्भ हुआ ।
१८८१	(जनवरी १) अहमदाबाद से अजमेर तक रेल्वे लाईन चालू हुई ।
	(फरवरी १७) जोधपुर में जनगणना की गई ।
	(सितम्बर १४) झालावाड़ राज्य का अंग्रेजों से नमक के लिए समझौता हुआ ।
	(दिसम्बर १) अजमेर से खण्डवा तक रेलवे लाईन चालू की गई ।

ई० सन्	घटना
१८८१	करौली में अच्छे शासन लिए अंग्रेज सरकार ने एक कौन्सिल पोलिटिकल एजेन्ट की अध्यक्षता में बनाई ।
	बूंदी राज्य में पहला भूमि का बन्दोबस्त हुआ ।
	कोटा राज्य ने काश्त की भूमि का लगान नगदी में लेना तय किया ।
	उदयपुर के महाराणा सज्जनसिंह को "भारतीय साम्राज्य के राजाओं का सितारा" की पदवी अंग्रेज सरकार द्वारा दी गई । यों उदयपुर के महाराणा अब तक "हिन्दुआ सूर्य" कहलाते थे ।
	उदयपुर में जनगणना के विरोध में भीलों ने उपद्रव किया ।
१८८२	अंग्रेज सरकार ने बूंदी, टोंक, शाहपुरा करौली व कोटा राज्यों से नमक के लिए समझौता किया ।
	बीकानेर में उर्दू की पढ़ाई प्रारम्भ हुई ।
	हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक हरिश्चन्द्र को उदयपुर राज्य ने खिलाअत दी ।
	राजस्थान के कुछ हिस्सों में भूकम्प आया ।
	जोधपुर में जागीरदारों के लिए सरदारों का न्यायालय स्थापित हुआ ।
	उदयपुर के महाराणा ने दयानन्द सरस्वती ।
	अलवर राज्य में नील का कारखाना खुला ।
१८८३	(मार्च ९) दयानन्द सरस्वती शाहपुरा गया जहां वह २७ मई तक रहा ।
	(मार्च १५) बांसवाड़ा राज्य का अपने सरदारों से समझौता होकर राजीनामा लिखा गया ।
	(मई ३१) दयानन्द सरस्वती जोधपुर गया ।
	(अगस्त १२) जोधपुर राज्य ने फारसी लिपि के स्थान पर नागरी लिपि में हिन्दी लिखी जाने का आदेश जारी किया ।
	(अक्टुबर १६) अंग्रेज सरकार ने मेरवाड़ा के मेवाड़ी भाग की आय से (६६००० रुपए) मेवाड़ भील सेना का खर्चा चलाना तय किया ।
	(अक्टुबर ३०) दयानन्द सरस्वती की अजमेर में मृत्यु हुई ।
	(नवम्बर १३) अंग्रेजी सरकार का उदयपुर नरेश से मेरवाड़ा क्षेत्र के गांवों के प्रबन्ध के लिए पुन: समझौता हुआ ।
	(दिसम्बर २८) कलकत्ता में प्रथम राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन हुआ ।
	अजमेर में स्वामी दयानन्द की वसीयत के अनुसार परोपकारिणी सभा स्थापित हुई ।
	बीकानेर नरेश ने सरदारों की रेख में वृद्धि की ।
	जोधपुर राज्य में खालसा गांवों का प्रथम भूमि बन्दोबस्त हुवा ।
	आर्य समाज का धार्मिक ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशित हुवा ।
	जयपुर राज्य में राज्य की कला कौशल की वस्तुओं की प्रदर्शनी हुई ।

ई० सन् घटना

१८८४ (मई १) जोधपुर रेल्वे तथा राजपूताना मालवा रेल्वे के बीच जोधपुर जंकशन (मारवाड़ जंकशन) पर यात्रियों के विनिमय के लिए समझौता हुआ।
(मई ३) जोधपुर नगर में सफाई के लिए नगरपालिका स्थापित की गई।
(मई १४) जोधपुर राज्य में यह आदेश जारी किया गया कि फारसी व उर्दू के शब्द सरकारी काम-काज में नहीं लाये जावें।
अंग्रेज सरकार ने यह आदेश जारी किया कि किसी देशी रियासत का उत्तराधिकार अवैध होगा जब तक वह अंग्रेज सरकार से किसी न किसी रूप में स्वीकृत न हो जावे।
राज समुद्र बांध (उदयपुर राज्य) से सिंचाई होने लगी।
जयपुर राज्य में अफीम तथा नशे वाली वस्तुओं से राहदारी शुल्क हटाया गया।
भरतपुर नरेश ने, सिवाय मादक वस्तुओं के अन्य, सब वस्तुओं पर से चुंगी उठा दी।

१८८५ (जनवरी ३१) लूणी से जोधपुर तक रेलवे लाईन बनी।
(अप्रेल ११) जोधपुर राज्य में २६ जागीरदारों को न्यायिक अधिकार दिये जाकर वहां के न्यायालयों ने काम शुरू किया।
(अप्रेल १०) जोधपुर राज्य ने आदेश जारी किया कि राज्य के आदेश आदि नागरी लिपि में ही जारी किए जावे।
(अगस्त १) अलवर व भरतपुर राज्यों ने भारत सरकार की अनुमति से पांच-पांच गांव अदल-बदल किए।
(अगस्त २) जोधपुर राज्य के मेरवाड़ा के गांवों पर अंग्रेजी सरकार को स्थाई कब्जा देने व पूर्ण प्रशासनिक नियन्त्रण देने का समझौता हुआ।
(अगस्त २२) उदयपुर के महाराणा फतहसिंह को शासन के पूर्ण अधिकार मिले।
(दिसम्बर २८) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस स्थापित हुई।
बीकानेर राज्य के खालसा गांवों का भूमि बन्दोबस्त हुआ।
अजमेर से मुंशी समर्थदास ने राजस्थान का प्रथम साप्ताहिक पत्र "राजस्थान समाचार" प्रकाशित किया।
उदयपुर में प्रथम हाईस्कूल खुली।
भारत सरकार ने मेरवाड़ा के ३१ गांवों पर जोधपुर का अधिकार मानते हुवे भी उनका प्रबन्ध सदैव के लिए अपने अधिकार में कर लिया।
जोधपुर राज्य ने भारतीय डाक पद्धति अपनाई।
डाकखानों में बचत खाते खोले जाने आरम्भ हुए।

ई० सन्	घटना
१८८६	(जनवरी २९) भारतीय आयकर कानून पास हुआ ।
	विक्टोरिया के नाम से बूंदी में रामशाही सिक्का चला ।
	भारत सरकार द्वारा धौलपुर नरेश निहालसिंह को शासन सुधारने के लिए चेतावनी दी गई ।
	भारत सरकार ने दांता नरेश जसवंतसिंह को "महाराणा श्री" की पदवी दी ।
	(जून ७) जोधपुर राज्य ने आदेश दिया कि सरकारी कर्मचारियों के लिए टुकड़ी (खादी) पहनना अनिवार्य है ।
१८८७	(मार्च २३) लणी जंकशन से पचपदरा तक रेलवे लाईन खोली गई ।
	(सितम्बर २४) झालावाड़ के महाराज राणा जालिमसिंह से भारत सरकार ने शासन अधिकार वापिस ले लिए कि वे शासन करने में कुशल नहीं है ।
	उदयपुर नरेश ने अफीम के अलावा सब वस्तुओं पर चुंगी माफ कर दी ।
	बीकानेर में अपीलकोर्ट की स्थापना की गई ।
	बूंदी राज्य के अलावा अन्य सब रियासतों से अंग्रेजी सरकार का अपराधियों के विनिमय क बारे में किये इकरारनामे में संशोधन किया गया ।
१८८८	(जनवरी १) अपराधियों के विनिमय के बारे में बूंदी राज्य का भारत सरकार से इकरार में संशोधन हुआ ।
	(जनवरी २०) जोधपुर राज्य में मारवाड़ राज्य का इतिहास तैयार करने के लिए इतिहास विभाग खोला गया ।
	सोजत व नागोर की टकसालें बन्द की गईं ।
	राजपूताने के ए० जी० जी० कर्नल वाल्टर की अध्यक्षता में वाल्टर राजपूत हितकारिणी सभा अजमेर में स्थापित की गई ।
	बूंदी राज्य में विभिन्न कानूनों का संग्रह किया गया ।
	जयपुर, जोधपुर, बीकानेर व अलवर राज्यों में सेनायें नये ढंग से संगठित की गईं ।
१८८९	(जनवरी १) भारत सरकार ने अलवर नरेश को "महाराजा" की वंश परंपरागत पदवी दी ।
	(जून ७) करौली नरेश भंवरपाल को शासन के पूर्ण अधिकार मिले ।
	(जुलाई १) सिरोही के राव को वंशानुगत पदवी "महाराजा" की देने की सनद अंग्रेज सरकार ने दी ।
	(जुलाई १३) भारत सरकार से जोधपुर व बीकानेर राज्यों के सम्मिलित व्यय से रेल निकालने का इकरार हुआ ।
	(नवम्बर ४) जमनालाल बजाज का जन्म हुआ ।
	(नवम्बर १४) जवाहरलाल नेहरू का जन्म हुआ ।
	भरतपुर राज्य ने सेना का नये ढंग से गठन किया ।

ई० सन्	घटना
१८८९	जोधपुर व बीकानेर राज्यों के बीच अपराधियों के लेन देन का इकरार हुआ।
	जोधपुर राज्य अधुनिक ढग पर सरदार रिसाला (घुड़सवार सेना) संगठित किया गया।
	वाल्टर कृत राजपूत हितकारिणी सभा की एक शाखा उदयपुर में स्थापित हुई।
	जयपुर स्टेट ट्रांस्पोर्ट कोर संगठित किया गया।
१८९०	भरतपुर की ओर से दो रेजीमेण्ट सवार व एक रेजीमेन्ट पैदल सेना शाही सेवा के लिए संगठिन की गई।
	कोटा राज्य ने राज्य कर्मचारियों के पेंशन के संबंध में नियम बनाये।
	भरतपुर नरेश जसवंतसिंह को व्यक्तिगत रूप से १९ तोपों की सलामी अंग्रेज सरकार द्वारा स्वीकृत की गई।
	अजमेर में रोमन कैथोलिक मिशन काम करने लगा।
	शाहपुरा नरेश ने उदयपुर नरेश की सेवा में जाने से आनाकानी की।
	जयपुर में स्टाम्प ड्यूटी और दावों की समय अवधि का कानून बना।
१८९१	(जनवरी ३) रूस का शाहजादा जोधपुर आया।
	(अप्रेल) खेतड़ी का अजीतसिह आबू में विवेकानंद से मिला।
	(जुलाई २४) अंग्रेज सरकार ने यह निर्णय किया कि भारत सरकार का यह अधिकार तथा कर्तव्य है कि देशी राज्य का उत्तराधिकार तय करें।
	(अगस्त १) भारत सरकार ने मालानी परगने का प्रबंध कुछ शर्तों पर जोधपुर सरकार को लौटा दिया।
	(दिसम्वर) बीकानेर में रेलगाड़ी व तार का सिलसिला प्रारम्भ हुआ।
	ब्यावर में कृष्णा मिल में कपड़े का उत्पादन आरम्भ हुवा।
	जैसलमेर राज्य का भारत सरकार से अपराधियों के लेन देन के बारे में इकरार हुआ।
	नया नगर (ब्यावर) में पहली कपड़े की मिल (कृष्णा मिल) खुली।
१८९२	(जनवरी १) डूंगरपुर में पहला अस्पताल खुला।
	(मई २१) देवली से कोटा तक की तार लाइन चालू की गई।
	(नवम्बर १४) झालावाड़ नरेश जालिमसिंह को पुनः शासन के अधिकार कुछ शर्तों पर दिये गये।
	(दिसम्वर २१) श्यामजी कृष्ण वर्मा को उदयपुर राज्य परिषद् का सदस्य नियुक्त किया गया।
	कोटा में प्रथम प्रदर्शनी हुई।
१८९३	(फरवरी १९) बीकानेर में पुराने सिक्के बंद दिये जाकर नये कलदार सिक्के जारी करने का इकरार लिखा गया।

ई० सन् — घटना

जोधपुर में कालिज स्थापित हुआ ।
कोटा राज्य की टकसाल बंद की गई ।
डूंगरपुर में पहली प्राथमिक पाठशाला खुली ।
बीकानेर राज्य के सरदारों के लड़कों की पढ़ाई के लिये वाल्टर नोबल्स स्कूल खोला गया ।

१८९४ (अप्रेल १८) डूंगरपुर के सरदारों ने महारावल के विरुद्ध ७३ बातों की शिकायत मेवाड़ के रेजिडेन्ट के पास पेश की । जांच पर ये शिकायतें अनुचित निकलीं ।
बीकानेर नरेश ने भूमि का बन्दोबस्त करके लगान स्थिर किया ।
प्रतापगढ़ के महारावल ने प्रथम श्रेणी के सरदारों को मुकदमे सुनने का अधिकार दिया ।

१८९५ (फरवरी ६) श्यामजी कृष्ण वर्मा जूनागढ़ राज्य का दीवान नियुक्त किया गया ।
(फरवरी २२) उदयपुर में प्रथम तारघर खुला ।
(फरवरी २७) भरतपुर नरेश रामसिंह से राज्य शासन के अधिकार छीने गये ।
(मार्च ४) अजमेर में शीतला टीका लगाना अनिवार्य किया गया ।
(मार्च ६) जोधपुर में मवेशियों का मेला चालू किया गया ।
(जून) जोधपुर रेलवे तथा बी० बी० एण्ड सी० आई० रेलवे के बीच कुचामण रोड स्टेशन पर रेल्वे का सामान व यात्रियों के विनिमय के संबंध में समझौता हुआ ।
(अगस्त १) चित्तौड़गढ़ से देवारी तक रेल्वे लाईन खुली ।
(अगस्त ८) अजमेर में पहला अंग्रेजी साप्ताहिक "राजपूताना टाइम्स" चालू किया गया ।
(सितम्बर) श्यामजी कृष्ण वर्मा पुनः उदयपुर की "महद्राय सभा" का सदस्य नियुक्त किया गया ।
(नवम्बर १५) जोधपुर राज्य के चाणोद गुरां व चारण गणेशपुरी को देशनिकाला दिया गया । क्योंकि इन्होंने सर प्रतापसिंह के विरुद्ध ए० जी० जी० को शिकायत की थी ।

१८९६ झालावाड़ के द्वितीय झालिमसिंह को राजगद्दी से हटाया गया ।
(अप्रेल २०) जोधपुर नगर में बैलों से चलने वाली ट्रामगाड़ी चालू की गई ।
(नवम्बर ७) जोधपुर शहर में सर्वेनिक जलयोजना चालू की गई ।
(नवम्बर १०) अजमेर में अजमेर की गवर्नमेन्ट कालिज में बी० ए० तक की शिक्षा चालू की गई ।
(नवम्बर २१) वायसराय लार्ड एल्गिन बीकानेर आया ।

ई० सन्	घटना
१८९६	अजमेर रेल्वे कारखाने में पहला रेल्वे इंजन बना।
	अजमेर में पहली कन्या पाठशाला खुली।
	बूंदी में प्रथम हाईस्कूल खुला।
	झालरापाटन राज्य का कुछ हिस्सा कोटा राज्य में मिलाया गया। केवल चौमहला झालरापाटन व सुकेत तहसील का दक्षिणी भाग झालावाड़ में रहा।
	भारत सरकार ने कोटा से गुणा तक रेल्वे लाईन बनाने की स्वीकृति दी।
	बीकानेर राज्य के पलाना गांव के पास कुंवा खोदते समय कोयले की खान का पता लगा।
१८९७	(जनवरी २३) सुभाषचन्द्र बोस का जन्म हुआ।
	(अगस्त ८) डूंगरपुर में नगरपालिका स्थापित की गई।
	(दिसम्बर ३१) उदयपुर रेल्वे अलग से स्थापित हुई।
	बूंदी में कानून माल बनाया गया।
	किशनगढ़ में कपड़ा मिल महाराजा किशनगढ़ मिल स्थापित हुआ।
	झालरापाटन नगर में बसने के लिए लोगों को विशेष सुविधायें दी गईं।
१८९८	(अप्रेल १४) अलवर नरेश ने भारत सरकार से इकरार किया कि अलवर की शाही सेना जब राज्य की सीमा के बाहर रहेगी तब उन पर नियन्त्रण व अनुशासन अंग्रेज अधिकारियों द्वारा रखा जावेगा।
	(दिसम्बर १६) बीकानेर नरेश गंगासिंह को शासन के पूर्ण अधिकार मिले।
	जयनारायण व्यास का जन्म हुआ।
	पलाना (बीकानेर राज्य) में कोयला निकालने का काम आरम्भ हुआ।
१८९९	(जनवरी २५) बीकानेर नरेश व भारत सरकार के बीच शाही सेना के राज्य के बाहर रहते वक्त उन पर नियन्त्रण व अनुशासन के विषय में समझौता हुआ।
	(जनवरी ३०) भारत सरकार ने झालावाड़ राज्य के १७ परगनों में से १५ परगने पुनः कोटा राज्य में शामिल कर दिए।
	महाराज राणा भवानीसिंह का झालावाड़ की राजगद्दी पर बैठने पर सनद भारत सरकार द्वारा दी गई।
	(फरवरी २०) कोटा नरेश तथा इण्डियन मिडलेण्ड रेल्वे कम्पनी के बीच गुणा से बारां रेल्वे के बीच कोटा शाखा के चलाने के लिए इकरार हुआ।
	(फरवरी २७) टोंक नवाब तथा इण्डियन मिडलेण्ड रेल्वे कम्पनी के बीच गुणा से बारां रेल्वे लाईन जो टोंक राज्य में पड़ती थी, के कार्य संचालन के बारे में इकरार हुआ।
	(अप्रेल) जोधपुर नरेश सरदारसिंह ने "जसवन्त जसोभषण" नामक ग्रन्थ

ई० सन्	घटना
१८९०	रखने के उपलक्ष में कविराज मुरारीदान को ५००० रुपए की रेख के चार गाँव दिए।
	(अगस्त २५) देबारी से उदयपुर तक रेल्वे लाईन चालू की गई।
	(दिसम्बर १५) बीकानेर नरेश ने जोधपुर बीकानेर रेल्वे तथा बीकानेर भटिण्डा रेल्वे के नीचे अपने राज्य की सीमा में आने वाली भूमि के कुल अधिकार भारत सरकार को सौंपने का इकरार किया।
	बांसवाड़ा के महारावल लक्ष्मणसिंह से शासन कार्य छीना गया।
	राजस्थान में घोर अकाल पड़ा।
१९००	(जनवरी १४) बीकानेर के महाराजा ने भारत सरकार को दक्षिणी पंजाब रेल्वे के नीचे बीकानेर राज्य की आने वाली भूमि के कुल अधिकार सौंपे।
	(जून) भरतपुर नरेश रामसिंह को अपने नौकर की हत्या करने के कारण राजगद्दी से हटाया गया।
	(जुलाई) अलवर राज्य में आर्य समाज की स्थापना की गई।
	सर प्रतापसिंह जोधपुर रिसाला लेकर चीन युद्ध के लिए रवाना हुआ।
	(अक्टुबर १) झालावाड़ में अंग्रेजी डाक पद्धति चालू की गई।
	(नवम्बर १) जोधपुर राज्य की टकसाल बन्द की गई।
	(दिसम्बर २२) बालोतरा से सादीपाली (सिन्ध) तक की रेल्वे लाईन खोलने के लिए जोधपुर नरेश तथा बीकानेर नरेश ने अंग्रेज सरकार से समझौता किया।
	जोधपुर राज्य को टकसालों में विजयशाही रुपया बनना बन्द हो गया और अंग्रेजी कलदार रुपया चलने लगा।
	जोधपुर नरेश ने जोधपुर बीकानेर रेल्वे की लाईन पर आने वाली भूमि का पूर्ण अधिकार अंग्रेज सरकार को सौंपा।
	कोटा का हाली रुपया बन्द किया जाकर अंग्रेजी कलदार रुपया चालू किया गया।
	कोटा राज्य में अंग्रेजी ढंग से डाक विभाग चालू किया गया।
१९०१	(जुलाई ३१) जोधपुर का सरदार रिसाला चीन से लौटा।
	(अक्टुबर १७) बी० बी० एण्ड सी० आई० रेल्वे व उदयपुर चित्तौड़ रेल्वे के बीच गाड़ियें चलाने का समझौता हुआ।
	(अक्टुबर १७) जोधपुर नगर में ढिंढोरा पीटा गया कि जोधपुर नरेश जिस दिन इंगलैंड से लौटे तब दीपावली की जावे वरना १०० रु० जुर्माना किया जावेगा।
	कोटा में नई डाक पद्धति जारी की गई तथा नए कलदार रुपए जारी किए गए।

ई० सन्	घटना
१६०१	झालावाड़ राज्य में पुराने सिक्के वन्द कर नए अंग्रेजी कलदार सिक्के चालू किए गए।
१६०२	(जनवरी ७) वाइसराय ने तार द्वारा जोधपुर के महाराजा प्रतापसिंह को ईडर की राजगद्दी का अधिकारी मान लिए जाने की सूचना भेजी।
	(फरवरी १) महाराजा सर प्रतापसिंह ईडर की राजगद्दी पर बैठा।
	(जुलाई २६) जोधपुर नगर में पत्थर की पहली सड़क फतहपोल से जालोरी दरवाजे तक बननी आरंभ हुई।
	(अगस्त १०) लाग बाग की जांच के लिए जोधपुर राज्य ने छः व्यक्तियों की एक कमेटी नियुक्त की।
	जयपुर से पाक्षिक 'समालोचक' प्रकाशित होने लगा।
	बीकानेर से भटिण्डा तक (लगभग २०२ मील) की रेल्वे लाईन चालू हुई।
	लार्ड कर्जन कोटा, बीकानेर व उदयपुर गया।
	अलवर राज्य में भारत सरकार द्वारा तार डाक विभाग की स्थापना की गई।
	वांसवाड़ा में अंग्रेजी पढ़ाई का स्कूल खुला।
१६०३	(जनवरी १) दिल्ली दरबार में राजस्थान के कई नरेश सम्मिलित हुए।
	उदयपुर का महाराजा दिल्ली जाकर भी दरबार में उपस्थित नहीं हुआ।
	जयपुर में नई डाक पद्धति चालू की गई।
१६०४	(मार्च २१) भारतीय विश्वविद्यालयों का कानून बना।
	(अप्रेल १३) जोधपुर रेल्वे तथा बी० बी० एण्ड सी० आई० रेल्वे के बीच मारवाड़ जंकशन पर रेलवे सामान के विनिमय तथा स्टेशन पर काम करने के बारे में समझौता हुआ।
	(जुलाई १) बांसवाड़ा राज्य में शालमशाही और लक्ष्मणशाही सिक्कों को बंद कर अंग्रेजी कलदार सिक्का जारी किया गया।
	नागदा मथुरा रेल्वे के लिए झालावाड़ राज्य ने मुफ्त भूमि देने का इकरार किया।
	अजमेर में सहकारी समिति कानून लागू किया।
	भारत सरकार ने बारां में अफीम का गोदाम खोला।
	(जुलाई १०) अलवर नरेश ने रेवाड़ी से फुलेरा तक रेल लाईन के लिए भूमि पर पूर्ण क्षेत्राधिकार अंग्रेज सरकार को देने का इकरार किया।
	प्रतापगढ़ डूंगरपुर व सिरोही राज्यों में अंग्रेजी कलदार सिक्का जारी किया गया।
	(जुलाई २०) भरतपुर नरेश ने अंग्रेज सरकारसे आगरा से दिल्ली रेल्वे लाईन के लिए भूमि पर उसका पूर्ण क्षेत्राधिकार देने के लिए इकरार किया।

ई० सन्	घटना
१९०५	(मार्च १६) टोंक के नवाब द्वारा ग्वालियर नरेश को गुणा से बारां रेल्वे लाईन, जो टोंक राज्य में पड़ती थी, के बेचान के बारे में शर्तनामा लिखा गया।
	(अगस्त १०) रेवाड़ी फुलेरा लाईन के बीच पड़ने वाली भूमि का पूर्ण अधिकार जोधपुर नरेश ने अंग्रेजी सरकार को सौंपा।
	(अक्टुबर १६) बंगाल का विभाजन किया गया जिसके कारण भारत भर में स्वतन्त्रता आन्दोलन की लौ जल उठी।
	(नवम्बर २२) जोधपुर बीकानेर रेल्वे तथा उत्तर पश्चिमी रेल्वे के बीच हैदराबाद (सिन्ध) स्टेशन पर रेल्वे का सामान व यात्रियों के विनिमय तथा रहोका व टाण्डो स्टेशनों पर संयुक्त रूप से काम करने के बारे में समझौता हुआ।
	प्रिंस आफ वेल्स बीकानेर, जयपुर आदि गया।
	अलवर तथा भरतपुर राज्य के बीच रूपारेल नदी के विवाद के सम्बन्ध में भारत सरकार ने निर्णय दिया।
	प्रतापगढ़ के महारावत रघुनाथसिंह ने महाराजकुमार मानसिंह को राज्य के अधिकार सौंपे।
	स्वामी गोविंदसिंह ने सिरोही राज्य में संप सभा स्थापित की।
	बूंदी नरेश ने रेल्वे लाईन के लिए मुफ्त भूमि देने का इकरार किया।
	बीकानेर के कुछ जागीरदारों ने विद्रोह किया अतः वे बीकानेर के किले में नजरबन्द किये गये।
	बीकानेर व गजनेर में टेलीफोन लगाये गये।
१९०६	(जनवरी ११) बांसवाड़ा के महारावत शंभुसिंह को भारत सरकार की ओर से राज्य के अधिकार मिले।
	(अप्रेल ४) वायसराय लार्ड मेयो अजमेर आया।
	(अगस्त २) भारत सरकार ने पाई, पैसा व आधा आना के सिक्के ताम्बे के बदले कांसे के ढालने की घोषणा की।
	(सितम्बर ११) जयपुर राज्य रेल्वे द्वारा सांगानेर से सवाई माधोपुर रेल्वे लाईन बनाने के लिये बी० बी० एण्ड सी० आई० रेल्वे से जयपुर राज्य का समझौता हुआ।
	(नवम्बर ३) जोधपुर में सबसे पहले महाराजा ने मोटरगाड़ी का उपयोग करना आरम्भ किया।
	(नवम्बर ४) नया पैसा (सिक्का) जारी किया गया।
	(नवम्बर २१) वाइसराय लार्ड मिन्टो बीकानेर गया।
	करौली में अंग्रेजी कलदार सिक्का जारी किया गया।

ई० सन्	घटना
१९०६	कोटा राज्य में तांबे का पैसा बंद कर भारत सरकार का नया पैसा जारी किया गया ।
	करौली में पोलिटिकल एजेन्ट की अध्यक्षता में शासन प्रबंध सुधारने के लिए कौंसिल बनाई गई जो १९१७ तक चली ।
	भारत में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई ।
१९०७	(अप्रेल १४) जोधपुर में चीनी लाने की इजाजत दी गई। पहले इसे अपवित्र माना जाता था अतः लाना मना था।
	जयपुर में जैन वर्द्धमान विद्यालय की स्थापना अर्जुनलाल सेठी द्वारा की गई। सांगानेर से सवाई माधोपुर तक की रेल्वे लाईन चालू की गई।
१९०८	(जनवरी ८) जोधपुर के रेल्वे के कारखानों में मजदूरों ने ८ घंटे की हड़ताल की जिसके कारण मजदूरों की मांगें राज्य ने ८ जनवरी को मानली ।
	(मार्च) धोलपुर में रेल लाईन खुली ।
	(मई २५) मारले मिन्टो शासन सुधार योजना भारत में लागू की गई ।
	(अक्टुबर) बांसवाड़ा नरेश शंभूसिंह के राज्याधिकार छीने जाकर शासन कार्य पोलिटिकल एजेन्ट की अध्यक्षता में होने लगा ।
	(अक्टुबर १९) अजमेर के किले में राजपूताना संग्रहालय स्थापित हुआ ।
	अलवर नरेश ने उर्दू के स्थान पर हिन्दी को राजभाषा घोषित किया ।
१९०९	(जून) धोलपुर नरेश को शासन के पूर्ण अधिकार मिले ।
	(सितम्बर १६) डगाना से सुजानगढ़ तक रेल्वे लाईन चालू की गई ।
	जयपुर में घाट के बालाजी स्थान पर छात्रावास खोला गया जहां विभिन्न स्थानों के क्रांतिकारी रहने लगे ।
	मारवाड़ में राजद्रोह कानून जारी किया गया ।
	झालावाड़ की पाठशालाओं में अछूतों को प्रवेश की अनुमति मिली ।
१९१०	(मार्च ११) जोधपुर नगर में घंटाघर भवन की नींव रखी गई ।
	(जून) जोधपुर राज्य की ओर से डींगल साहित्य के संग्रह के लिए एक समिति बनाई गई ।
	बीकानेर में चीफ कोर्ट स्थापित किया गया ।
	उदयपुर नरेश महाराणा फतेहसिंह ने आदेश जारी किया कि शाहपुरा का राजाधिराज उदयपुर नरेश की सेवा में जागीरदार के रूप में पूर्ववत् रहे ।
	डूंगरपुर में शिक्षा मुफ्त दी जाने की आज्ञा जारी की गई ।
१९११	(जनवरी १२) भारत सरकार तथा कोटा नरेश के बीच गुना से बांरा रेल्वे के मध्य कोटा शाखा को रेल चलाने के लिए इकरार हुआ ।
	(फरवरी) बांसवाड़ा नरेश पृथ्वीसिंह दक्षिणी राजपूताना के पोलिटिकल एजेन्ट के निरीक्षण में राज्य कार्य करने लगा ।

ई० सन्	घटना
१६११	(मई २४) जोधपुर की महारानी ने अपने पुत्रों–सुमेरसिंह व उम्मेदसिंह को इग्लैंड जाने की अनुमति इस आशंका से नहीं दी कि वे वहीं रख लिए जायेंगे लेकिन बाद में समझाने पर इजाजत दे दी ।
	(जुलाई ८) बीकानेर से सुजानगढ लाईन का १३ मील का टुकड़ा बढ़ाया गया ।
	(सितम्बर १७) जोधपुर राज्य में सोमवार के स्थानपर इतवारकी साप्ताहिक छुट्टी होने की घोषणा की गई ।
	(दिसम्बर १२) दिल्ली में दरबार हुआ जिसमें दिल्ली को कलकत्ता के स्थान पर भारत की राजधानी घोषित किया गया ।
	(दिसम्बर १२) दिल्ली दरबार में भारतीय नरेश उपस्थित हुए । उदयपुर का महाराणा दिल्ली जाकर भी बादशाह की सवारी के जुलूस और दरबार में उपस्थित नहीं हुआ ।
	(दिसम्बर १२) सिरोही के महाराव को वंशानुगत 'महाराजाधिराज' की पदवी देने की सनद अंग्रेज सरकार ने दी ।
	(दिसम्बर २१) महारानी मेरी अजमेर गई ।
	(दिसम्बर २४) महारानी मेरी कोटा गई ।
	(दिसम्बर २७) "जन गण मन अधिनायक जय हे" नामक राष्ट्रीय गीत पहली बार कलकत्ता के कांग्रेस अधिवेशन में गाया गया ।
	महारानी मेरी शिकार खेलने बूंदी गई ।
१६१२	(सितम्बर १६) भारत सरकार का जोधपुर व बीकानेर नरेशों से मीरपुर खास से जुड़ी तक रेल चलाने के लिए इकरार हुआ ।
	जोधपुर में चीफ कोर्ट की स्थापना की गई ।
	जोधपुर में जागीरदारों द्वारा ली जाने वाली चाकरी एक हजार पीछे १२ रुपये करदी गई ।
	बीकानेर राज्य में स्वायत शासन संस्थायें स्थापित की गईं ।
	बीकानेर से रतनगढ़ तक रेल्वे लाईन चालू की गई ।
१६१३	(जनवरी १) बीकानेर व भारत सरकार के बीच नमक बनाने व इकट्ठा करने का नया समझौता हुआ ।
	(नवम्बर १०) बीकानेर में प्रजा प्रतिनिधि सभा स्थापित की गई जिसमें जनता के चुने हुए प्रतिनिधि शासन सम्बन्धी कार्यों में भाग लेने के लिये जाने लगे ।
	लाखेरी में सीमेन्ट का कारखाना खुला ।
	(दिसम्बर ५) भारत सरकार का जोधपुर व बीकानेर नरेशों से मीरपुर खास से खुदरो (सिन्ध) रेल चलाने के लिए इकरार हुआ ।
	बांसवाड़ा के लक्ष्मणसिंह को शासन प्रबंध के पूर्ण अधिकार मिले ।

ई० सन्	घटना
१९१३	बीजोलिया में आन्दोलन आरंभ हुआ जो १९३३ तक बीच बीच में बन्द होकर चलता रहा ।
	जयपुर नरेश ने बनारस विश्वविद्यालय के लिए ५ लाख रुपये दान में दिये ।
	मानगढ़ (बांसवाड़ा) की पहाड़ी के भीलों ने गोविन्दगिरी के नेतृत्व में विद्रोह किया ।
	भारत सरकार ने उदयपुर के महाराणा को अपने राज्य में अफीम की खेती बन्द करने को लिखा ।
१९१४	(अप्रेल २) झालावाड़ राज्य में काश्तकारों को सहायता देने के लिए काश्तकार फंड चालू किया गया ।
	(अगस्त) जर्मनी और इंग्लैंड के बीच प्रथम महायुद्ध आरंभ हुआ । राजस्थान के नरेशों ने इस युद्ध में अंग्रेजों की सहायता के लिए सेनायें भेजीं।
	जोधपुर में तांबे का सिक्का बनना बन्द हुआ ।
	क्रांतिकारी संगठन बनाने के आरोप में केसरीसिंह बारहठ गिरफ्तार किया गया ।
	जयपुर के अर्जुनलाल सेठी शाहपुरा के केसरीसिंह बारहठ और कोटा के हीरालाल जालौरी गिरफ्तार किये जाकर उन पर कोटा में राजनैतिक षडयंत्र करने का मुकदमा चलाया गया ।
१९१५	(फरवरी) बारहठ केसरीसिंह का पुत्र प्रतापसिंह भारतीय सेना में विद्रोह के आरोप में गिरफ्तार किया गया ।
	(फरवरी २१) राव गोपालसिंह तथा विजयसिंह पथिक द्वारा खरवा के निकट सशस्त्र क्रांति की तिथि निश्चित की गई लेकिन यह योजना सफल नहीं हो सकी ।
	(अक्टवर १) जोधपुर में अजायबघर और पुस्तकालय की स्थापना की गई।
	अर्जुनलाल सेठी को क्रांतिकारियों से मिला होने के सन्देह में गिरफ्तार किया जाकर १९१७ तक जयपुर जेल में रखा गया । बाद में बैलोर जेल भेज दिया गया जहां वह १९२० तक रहा ।
	अजमेर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की शाखा स्थापित हुई ।
	कोटा म सहकारी समितियां बनाने का कानून पास हुआ ।
१९१६	(फरवरी ४) वायसराय लार्ड हार्डिंग ने बनारस में हिन्दू विश्वविद्यालय का शिलान्यास किया तब राजस्थान के कई नरेश भी उपस्थित हुए ।
	(फरवरी २६) वायसराय लार्ड हार्डिंग ने जोधपुर आकर महाराजा सुमेरसिंह को राज्य करने के पूर्ण अधिकार दिए ।
	(मार्च) रतनगढ़ से सरदारशहर तक रेल लाईन चालू की गई ।

ई० सन्	घटना
१९१६	(अगस्त २२) भारत सरकार से सिन्ध लाइट रेल्वे कम्पनी, जोधपुर व बीकानेर नरेशों से १९१३ की पहली अप्रेल से सालाना हिसाब पहली अप्रेल से उसके आगामी वर्ष की मार्च ३१ तक का रखने का इकरार हुआ ।
	(नवम्बर १७) वायसराय लार्ड चम्सफोर्ड अजमेर आया और नरेशों का एक सम्मेलन बुलाया ।
	मेवाड राज्य के अधिकारियों ने युद्ध ऋण चन्दा विजोलिया में वसूल करना आरम्भ किया तो वहां की जनता ने कर देने से मना कर दिया ।
	झूंझनू रेल्वे लाईन चालू हुई ।
१९१७	(जनवरी १५) जोधपुर नगर में बिजलीघर चालू किया गया ।
	(मई २९) जोधपुर में पुलिस द्वारा एक महाजन की पिटाई करने के कारण तीन दिन तक हड़ताल रही जो २ जून को सेना बुलवाकर खुलवाई गई ।
	(सितम्बर) बीकानेर में प्रजा प्रतिनिधि सभा का क्षेत्राधिकार बढ़ाकर उसको व्यवस्थापक सभा का रूप दिया गया, उसके सदस्यों की संख्या भी बढ़ाई गई ।
	(अक्टूबर १) आबू पहाड़ का कुछ भाग भारत सरकार को इजारे पर दिया गया ।
	(नवम्बर) दिल्ली में नरेन्द्र सभा का उद्घाटन हुआ ।
	(दिसम्बर १) मेड़ता के गोविन्दसिंह मेड़तिया को वीरता के लिए विक्टोरिया क्रोस मिला ।
	मारवाड़ सेवा संघ का गठन हुआ ।
१९१८	(जनवरी १) झालावाड़ नरेश को वंशानुगत 'महाराज राणा' की पदवी भारत सरकार ने दी ।
	(अप्रेल २७) जोधपुर राज्य में घोषणा की कि न्यायालय की भाषा अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी है ।
	दिल्ली में युद्ध सम्बन्धी मन्त्रणा के लिए बार कान्फ्रेंस हुई ।
	(जुलाई १४) जोधपुर रिसाले ने जोर्डन की घाटी के युद्ध में अपूर्व वीरता दिखलाई ।
	(सितम्बर २३) हेफा में जोधपुर रिसाले ने अपूर्व वीरता दिखाई ।
	(नवम्बर ११) महायुद्ध समाप्त हुआ ।
	(नवम्बर २७) वर्सेलिज की सन्धि हुई ।
	(दिसम्बर २१) जयपुर राज्य का जयपुर से रींगस के बीच रेल्वे लाईन के लिए बी० बी० एण्ड सी० आई० रेल्वे से समझौता हुआ ।
	मारवाड़ हितकारिणी सभा की स्थापना हुई ।
	बीकानेर नरेश गंगासिंह की व्यक्तिगत सलामी की तोपों में दो तोपों की वृद्धि होकर १९ तोपें हो गईं ।

ई० सन्	घटना
१९१८	मेवाड़ राज्य और अंग्रेज सरकार के बीच अंग्रेजी सिक्के और मेवाड़ी सिक्के के मूल्य को लेकर मतभेद हुआ।
	डूंगरपुर नरेश ने राज्य प्रबन्ध कारिणी सभा व राज्य शासन सभा नियत की।
	मानटेग्यू तथा चम्सफोर्ड की भारत के संवैधानिक सुधारों की रिपोर्ट प्रकाशित हुई।
	राजस्थान मे इन्फ्लूएंजा की बीमारी फैली।
१९१९	(जनवरी ०८) जोधपुर रेल्वे के कारखानों के मजदूरों ने मंहगाई के कारण वेतन बढ़ाने के लिए हड़ताल की।
	(अप्रेल १३) जलियांवाला बाग का हत्याकांड हुआ।
	(जून २०) अलवर की सेना बलूचिस्तान भेजी गई।
	(जून २८) बीकानेर नरेश गंगासिंह ने वर्सेलिज के सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर किये महात्मागांधी ने भारतीय राजनीति में तेजी से भाग लेना आरभ किया।
	भारतीय शासन अधिनियम बना।
	मारवाड़ राज विद्रोह अधिनियम वापस लागू किया गया।
	उदयपुर और जोधपुर में राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं ने आन्दोलन चलाने की चेष्टा की।
	बिजोलिया जागीर के किसानों ने आन्दोलन तेजी से आरम्भ किया।
	अलवर राज्य में शिक्षा निःशुल्क कर धार्मिक शिक्षा को अनिवार्य किया गया।
	अलवर की सड़कों व बागों का नाम हिन्दी में कर भारतीय महापुरुषों के नाम पर रखे गए।
	वर्धा में राजस्थान सेवा संघ की स्थापना विजयसिंह पथिक व रामनारायण चौधरी ने की।
	भरतपुर राज्य की सेना का नये ढंग से गठन किया गया।
१९२०	(जनवरी १६) प्रथम महायुद्ध की समाप्ति के बाद जेनेवा में पहला सम्मेलन हुआ।
	(फरवरी २) जोधपुर का रिसाला ५ वर्ष तक युद्ध में रहने के बाद लौटा।
	(मार्च १८) जोधपुर राज्य ने आदेश जारी किया कि १९ मार्च को जो भारतीय प्रदेशों में हड़ताल हो रही है, उसके अनुसार यहां कोई हड़ताल न करें।
	(अप्रेल २९) सिरोही के महाराव स्वरूप रामसिंह को राज्याधिकार अपने पिता के जीवनकाल में मिले।
	(अगस्त १) भारत में असहयोग आन्दोलन आरम्भ हुआ।

ई० सन्	घटना
१६२०	(सितम्बर ४) अंग्रेज सरकार तथा बीकानेर नरेश व भावलपुर नवाब के बीच सतलज व चिनाब नदियों का पानी सिंचाई के लिए लाने की योजना के लिए समझौता हुआ।
	(सितम्बर ६) बीकानेर के युवराज शार्दूलसिंह को बीकानेर का मुख्यमन्त्री और कौंसिल का सभापति नियुक्त किया गया।
	(सितम्बर २०) दलित और अछूत जातियों को पृथक निर्वाचन अधिकार देने के विरुद्ध महात्मा गांधी ने आमरण उपवास आरम्भ किया।
	उदयपुर के महाराणा को अंग्रेजी सिक्के और मेवाड़ी सिक्के का बाजार मूल्य बदलना पड़ा।
	जोधपुर म मारवाड़ सेवा संघ का गठन भंवरलाल सर्राफ की अध्यक्षता में हुआ।
	वर्धा में स्थापित राजस्थान सेवा संघ का कार्यालय अजमेर में स्थापित हुआ।
	वायसराय लार्ड चेम्स फोर्ड बीकानेर गया। केसरीसिंह बारहठ नजरबन्दी से छूटा।
	भरतपुर राज्य में हिन्दी राजभाषा घोषित की गई।
	देशी राज्यों का अखिल भारतीय संगठन रामचन्द्ररांव की अध्यक्षता में बनाया गया।
	अलवर राज्य में पंचायतें समाप्त की गईं।
१६२१	(जनवरी १) टोंक के नवाब व जोधपुर नरेश का १६ तोपों की व्यक्तिगत सलामी मिली।
	(जनवरी) जयपुर राज्य के राष्ट्रीय कार्यकर्त्ता जमनालाल बजाज ने रायबहादुर की पदवी त्यागी।
	(जनवरी) उदयपुर महाराणा की स्थाई तोपों की सलामी २१ अपने राज्य के लिए भारत सरकार द्वारा कर दी गई।
	(फरवरी ८) नरेन्द्र मण्डल ने कार्य करना प्रारम्भ किया। बीकानेर नरेश गंगासिंह इसका अध्यक्ष निर्वाचित हुआ।
	(मार्च ७) बाली (पाली जिला) के किले में बारूद का विस्फोट हुआ जिससे कई व्यक्ति मारे गये।
	(मई) अर्जुनलाल सेठी ने महात्मा गांधी द्वारा चलाये गए सत्याग्रह में भाग लिया अतः उसे १ वर्ष की सजा दी गई।
	(जुलाई १२) शाहपुरा नरेश को स्वतन्त्र नरेश माना जाकर नौ तोपों को व्यक्तिगत सलामी का अधिकार दिया गया।
	(अगस्त १८) जयपुर में बाल अपराधी सुधार स्कूल स्थापित हुआ।
	(अक्टुबर ११) बीकानेर राज्य में जमींदारों के हित साधन के लिए जमींदार सलाहकार सभा स्थापित करने की अनुमति महाराजा ने दी।

ई० सन्	घटना
१६२१	(नवम्बर २८) प्रिंस ऑफ वैल्स अजमेर आया।
	अलवर नरेश जयसिंह को १७ तोपों की सलामी का अधिकार दिया गया।
	अलवर सेना का नये ढंग से संगठन किया गया।
	वायसराय लार्ड रीडींग बीकानेर गया।
	बीकानेर नरेश की व्यक्तिगत व स्थानीय सलामी की तोपें १६ तय की गई।
	प्रिंस ऑफ वैल्स बीकानेर गया।
	प्रिंस ऑफ वैल्स के भारत आगमन पर देश व्यापी हड़ताल हुई।
	उदयपुर के महाराणा ने अपने कुछ अधिकार भारत सरकार के आदेश से अपने युवराज महाराजकुमार भोपालसिंह को दे दिये।
	जमनालाल बजाज बिजोलिया के किसानों की मांगों को मनवाने के लिए उदयपुर गया।
	जयपुर नरेश को २१ तोपों की स्थायी सलामी का अधिकार मिला।
	राजस्थान सेवा सघ की स्थापना हुई।
	अलवर में राज-विरोधी सभा कानून लागू किया गया।
	जोधपुर में युवक राजपूत सभा स्थापित हुई जिसमें ज्यादातर जागीरदार व घुटभाई थे। इन्होंने खानों, जकात आदि की राजकीय आय में हिस्सा देने के लिए आन्दोलन किया। राज्य ने शीघ्र इनका आदोलन समाप्त कर दिया।
१६२२	(जनवरी १) शाही सेवा सेना का नाम भारतीय रियासती सेना कर दिया गया।
	(फरवरी ७) बिजोलिया आन्दोलन का प्रभाव पड़ौसी राज्यों पर भी पड़ने लगा था अतः भारत सरकार के राजनतिक विभाग ने बीच बचाव किया। आठ वर्ष के आन्दोलन व चार वर्ष के सत्याग्रह (लगान बन्दी) के बाद बिजोलिया ठिकाने व किसानों के बीच समझौता होकर ठिकाने द्वारा कई लाग बागें उठादी गई।
	सुमेरपुर के सरकारी अधिकारियों की रक्षा एवं शान्ति स्थापित करने के लिए जोधपुर रिसाले के दो दल भेजे गए।
	(मई ३) बीकानेर में चीफ-कोर्ट के स्थान पर हाईकोर्ट स्थापित हुआ।
	(मई) सिरोही राज्य की रोहिड़ा तहसील में मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में भील व गिरासिया आन्दोलन हुआ।
	(सितम्बर) अजमेर में भारतीय इम्पीरियल बैंक की शाखा खुली।
	(सितम्बर ४) जोधपुर के सर प्रतापसिंह की मृत्यु हुई।
	जोधपुर राज्य में सरदार इन्फैन्टरी नामक पैदल सेना संगठित की गई।
	जोधपुर चीफ कोर्ट स्थापित हुआ।
	मारवाड़ प्रेस कानून बना।
	मारवाड़ सेवा संघ की स्थापना हुई।

ई० सन्	घटना
१९२२	जोधपुर राज्य में मादा पशुओं की निकासी का प्रतिबन्ध उठाने पर आन्दोलन हुआ।
	अंजनादेवी के नेतृत्व में महिलाओं में अपने आपको अमरगढ़ में गिरफ्तार कराया।
	बागड़ा बेगूँ व सिरोही में आन्दोलन हुए।
	अजमेर में चांदकरण शारदा की धर्मपत्नी सुखदादेवी ने राजनैतिक आन्दोलन में भाग लिया।
	अलवर नरेश ने अपने राजचिन्ह में पुनः परिवर्तन किया।
१९२३	(जनवरी २३) वायसराय लार्ड रीडींग जोधपुर आया।
	(जनवरी २७) वायसराय लार्ड रीडींग अजमेर आया।
	(अगस्त) भारत सरकार के आदेश से यह तय किया गया कि जयपुर प्रशासन के महत्वपूर्ण मामले जयपुर स्थित अंग्रेज रेजीडंट की सलाह से निपटाये जायेंगे।
	भारत में शुद्धि आन्दोलन आरम्भ हुआ।
	बम्बई में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के वार्षिक अधिवेशन में जयनारायण व्यास को राजपूताना शाखा का मन्त्री नियुक्त किया गया।
	मारवाड़ टाइप राईटर कानून बना।
	जोधपुर में कर्जदार जागीरदारों की जागीर का कानून बनाया गया।
	अर्जुनलाल सेठी अजमेर प्रदेश कांग्रेस कमेटी का अध्यक्ष निर्वाचित हुआ।
	अलवर राज्य के मुसलमानों द्वारा अंजुमन ए खादीमूल इस्लाम नाम की संस्था बनाई गई।
	महाराजा कालिज जयपुर में एम० ए० व एम० एस० सी० की कक्षाऐं खोली गईं।
	जयपुर में कानून सलाहकार समित बनाई गई।
	जयपुर में नये ढंग से बजट बनाने की पद्धति चालू की गई।
१९२४	(अप्रेल ५) बूंदी राज्य ने ८०००० रुपये वार्षिक पर केशोरायभाटन के दो-तिहाई हिस्से का पूर्ण स्वत्वाधिकार अंग्रेज सरकार से लिया।
	(अप्रेल ८) जयपुर में चीफ कोर्ट स्थापित हुआ।
	विजयसिंह पथिक मेवाड़ में गिरफ्तार किया गया।
	(जुलाई २२) मादा जानवर मारवाड़ के बाहर न जाने के लिए जोधपुर की जनता द्वारा प्रदर्शन किया गया जिसके कारण मादा जानवरों की १५ अगस्त से निकासी बन्द कर दी गई।
	(नवम्बर) बीकानेर राज्य की रेल्वे जोधपुर राज्य की रेल्वे से अलग हुई।
	जोधपुर नरेश की इंग्लैंड यात्रा पर जन-आन्दोलन हुआ।

ई० सन्	घटना
१९२४	जयनारायण व्यास आनन्दराज सुराणा और भंवरमाल सर्राफ को राज्य से निर्वासित किया गया।
	नित्यानन्द नागर बूंदी से निर्वासित किया गया।
	अजमेर मेरवाड़ा को प्रथम बार अपना एक सदस्य चुनकर केन्द्रीय विधान सभा को भेजने का अधिकार दिया गया तब हरविलास शारदा चुना गया।
	जयपुर राज्य में राजस्व मण्डल की स्थापना हुई।
	जोधपुर राज्य में शराब तैयार करने के लिए एक आधुनिक ढंग का कारखाना तैयार खोला गया।
	जोधपुर नगर में निःशुल्क मेजिस्ट्रेटों की नियुक्ति की गई।
	जोधपुर में राजस्व न्यायालय स्थापित किए गए।
	बीकानेर नरेश गंगासिंह ने जेनेवा की राष्ट्र संघ की बैठक में भाग लिया।
१९२५	(मार्च १८) बीकानेर में रेल्वे के कारखाने की नींव रखी गई।
	(मई १४) नमूचाणा (अलवर) में एक सभा को भंग करने के लिए अलवर राज्य की सेना ने गोली चलाई।
	(नवम्बर) शाहपुरा नरेश को वंशपरम्परागत तोपों की सलामी दी गई।
	(दिसम्बर ५) बीकानेर ने गंगनहर का शिलान्यास किया।
	(दिसम्बर १५) जोधपुर के राजनैतिक कैदियों को, जिनका नाम पुलिस ने दस नम्बरी सूची में लिखा रखा था, माफी दी गई।
	जयपुर में महकमा खास (केबिनेट) भंग कर एक नई राज्य परिषद् बनाई गई।
	तिजारा अलवर राज्य में उपद्रव हुए।
	जोधपुर के शिवकरण जोशी, चांदमल सुराणा और प्रतापचन्द सोनी को राजनैतिक कारणों से मारवाड़ से निकाला गया तथा जयनारायण व्यास, अब्दुल रहमान अंसारी कस्तूरचन्द जोशी, अमरचन्द मूथा व बछराज को दस-नम्बरी घोषित किया गया।
१९२६	(अप्रैल २७) जोधपुर में भँवरलाल सर्राफ आदि ने राज्य के मन्त्री सुखदेवप्रसाद के खिलाफ पर्चे बांटे जिसके कारण वे गिरफ्तार किए गए।
	(जुलाई ७) शाहपुरा नरेश को फांसी तथा आजीवन कारावास देने की सजा का अधिकार कुछ शर्तों पर भारत सरकार ने दिया।
	(नवम्बर ३०) जोधपुर का सुखदेवप्रसाद जनता की शिकायतों पर अपने पद से हटाया गया।
	विजयसिंह पथिक जेल से छूटने पर महात्मा गांधी से मिला।
	भारत सरकार ने टोंक, प्रतापगढ़ व झालावाड़ नरेशों से अफीम के उत्पादन व खरीद के बारे में समझौता किया।

ई० सन्	घटना
१९२६	जोधपुर में सहकारी समितियों का कानून बना और जोधपुर रेल्वे सहकारी समिति बनाई गई।
	कोटा, बूंदी व उदयपुर राज्यों में बेगार व चराई लाग के विरुद्ध आन्दोलन हुआ।
	बूंदी में नानका भील को आन्दोलन में भाग लेने के कारण पुलिस द्वारा मार डाला गया।
१९२७	(जनवरी १) भरतपुर राज्य समाज सुधार अधिनियम १९२६ लागू किया गया जिसके अनुसार स्त्री का १४ व पुरुष का १७ वर्ष का विवाह के वक्त होना अनिवार्य किया गया।
	(मार्च) शाही घोषणा द्वारा सन १९१९ के भारतीय सुधार कानून की पुन: जांच करके सुधारों में वृद्धि करने के लिए एक कमीशन बैठाया।
	(जून, अलवर नरेश ने यह आदेश जारी किया कि हिन्दी भाषा से अनभिज्ञ कोई भी कर्मचारी राज्य में नौकर न रखा जावे।
	(जुलाई ६, बूंदी राज्य ने नित्यानन्द नागर को अपनी राष्ट्रीय गतिविधियों के कारण बूंदी राज्य से निर्वासित किया।
	(सितम्बर १) जयपुर में पुलिस जुल्म के विरुद्ध विशाल प्रदर्शन व हड़ताल की गई।
	(अक्टुवर २६) गंगानहर का उदघाटन वाइसराय लार्ड इरविन द्वारा किया गया।
	(दिसम्बर १६) भारत सरकार ने सर बटलर की अध्यक्षता में सर्वोच्च सत्ता तथा रियासतों के सम्बन्धी की जांच के लिए ३ सदस्यों की एकसमिति बनाई।
	(दिसम्बर १७) बम्बई मे अखिल भारतीय देशी राज्य परिषद् का अधिवेशन हुआ। जिसमें यह मांग की गई कि ब्रिटिश भारतीय प्रान्तों और देशी रियासतों का संघ बनाया जाए।
	उदयपुर, जयपुर, जोधपुर के वकीलों के न्यायालय समाप्त किए गए।
	जयनारायण व्यास को राजपूताना शाखा का मन्त्री नियुक्त किया गया।
	कोटा राज्य में कानून बनाया गया कि १२ वर्ष की लड़की और १६ वर्ष के लड़के की उम्र विवाह के वक्त होना आवश्यक है।
१९२८	(फरवरी १६) डूंगरपुर के महारावल लक्ष्मणसिंह को शासन के पूर्ण अधिकार मिले।
	(मार्च १५) उड़ीसा से अंग्रेज छावनी हटी।
	(मई २९) जोधपुर में कुछ मुसलमानों द्वारा कुर्बानी का बकरा सदर बाजार से निकालने के कारण शहर में दंगा हो गया।

ई० सन्	घटना
१६२८	(नवम्बर ८) राजस्थान में पहली महिला डाक्टर पार्वती गहलोत जोधपुर राज्य की स्वास्थ्य सेवा में नियुक्त की गई।
	(नवम्बर) जैसलमेर में श्री जवाहर प्रिंटिंग प्रेस नामक सरकारी छापेखाने की स्थापना हुई।
	बीकानेर में हिन्दू विवाह कानून बना।
	कोटा में सहकारी बैंक स्थापित हुआ।
	भरतपुर नरेश कृष्णसिंह को राज्यकार्य में अनुचित हस्तक्षेप करने के कारण भारत सरकार द्वारा भरतपुर से बाहर रहने का आदेश दिया गया।
	जयपुर में जागीरदारों से नगदी सेवा ली जाने लगी।
	राजस्थान सेवा संघ विघटित हुआ।
	बीकानेर में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा कानून बनाया।
	बीकानेर में पंचायत कानून बनाकर पंचायतों को दीवानी तथा फौजदारी के कई अधिकार दिये गये।
१६२६	(जून ४) मोतीलाल नेजावत गिरफ्तार किया जाकर बिना मुकदमा जेल में रखा गया।
	(अक्टबर २३) जोधपुर में मारवाड़ राज्य प्रजा परिषद् पर रोक लगाई गई और जयनारायण व्यास और आनन्दराय सुराणा को गिरफ्तार किया।
	(नवम्बर १८) जोधपुर में उम्मेद भवन महल की नींव रखी गई।
	(दिसम्बर २४) भरतपुर सप्ताह अत्याचार विरोध में मनाया गया।
	(दिसम्बर ३१) सम्पूर्ण आजादी का प्रण कांग्रेस अधिवेशन में किया गया।
	अजमेर में हाईस्कूल तथा इन्टरमीडियेट शिक्षा का बोर्ड स्थापित किया गया जिसके अन्तर्गत राजपूताना ग्वालियर तथा मध्यभारत थे।
	बीकानेर नरेश ने सलाहकार बोर्ड सदस्यों की संख्या में वृद्धि की।
	जयनारायण व्यास की धर्मपत्नी राजनैतिक आन्दोलन में भाग लेने के कारण जोधपुर राज्य से निर्वासित की गई।
१६३०	(जनवरी १) पूर्ण स्वराज्य के ध्येय की लाहौर कांग्रेस अधिवेशन में घोषणा की गई।
	(जनवरी २६) देश ने पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए भरसक चेष्टा करने का व्रत लिया।
	(मार्च ७) वाइसराय लार्ड इरविन अजमेर आया।
	(मार्च १२) गांधी ने साबरमति आश्रम से डांडी को प्रस्थान कर सविनय अवज्ञा आन्दोलन आरम्भ किया।
	(अप्रेल १) अजमेर में बाल विवाह निषेध कानून लागू किया गया।

ई० सन्	घटना
१६३०	(अक्टूबर १) अलवर राज्य व अंग्रेज सरकार के बीच नमक के लिए जो समझौता १७ अप्रेल १८७६ को हुआ था वह रद्द किया जाकर नया इकरारनामा लिखा गया।
	(नवम्बर १) भरतपुर राज्य में शासन चलाने के लिए राज्य कौंसल बनाई गई।
	(नवम्बर १२) प्रथम गोलमेज कान्फ्रेंस चालू हुई।
	बीकानेर नरेश गंगासिंह ने राष्ट्रसंघ की बैठक में भाग लिया।
	बीकानेर राज्य द्वारा चूरू में राष्ट्रीय झण्डा फहराने जाने को खतरनाक प्रवृत्ति बतलाया गया।
	अजमेर शहर में बिजली लगी।
१६३१	(जनवरी २५) महात्मा गांधी यर्वदा जेल से छोड़े गए।
	(मार्च ५) गांधी व इरविन के बीच समझौता होने के कारण जोधपुर के राजनैतिक कैदी जयनारायण व्यास, भंवरलाल सर्राफ व आनन्दराव मुराणा जेल से छोड़े गये।
	(मार्च २३) भारत के प्रसिद्ध क्रांतिकारी भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को जेल में फांसी दी गई।
	(जून १२) बूंदी में रामनाथ कुदाल को पुलिस ने निर्दयतापूर्वक मार डाला।
	(जुलाई २०) जमनालाल बजाज उदयपुर राजनैतिक नेताओं तथा राज्य के बीच समझौता करवाने के लिए गया।
	(जुलाई २३) उदयपुर में सर सुखदेव की अध्यक्षता में एक सभा हुई जिसमें खादी पर कर माफ करने की घोषणा की गई।
	(सितम्बर १७) द्वितीय गोलमेज कान्फ्रेंस हुई।
	(अक्टुबर २) बाल भारत सभा तथा इसकी शाखा मारवाड़ यूथलीग की स्थापना जोधपुर में की गई।
	(नवम्बर २८) जोधपुर के मुख्य न्यायाधीश ने समस्त मेजिस्ट्रेटों को आदेश दिया कि वे अंग्रेजी शब्दों का कम से कम प्रयोग करें।
	जयपुर में प्रजा मण्डल स्थापित हुआ।
	झालावाड़ राज्य में हाईकोर्ट स्थापित हुआ।
	उदयपुर राज्य सरकार को विधिवत् नोटिस दिया जाकर बिजोलिया सत्याग्रह आरम्भ हुआ।
	रमादेवी बिजोलिया सत्याग्रह में गिरफ्तार हुई।
	अलवर राज्य में इन्टर कालिज स्थापित हुआ।
	जोधपुर में हवाई क्लब खुला।
	झालावाड़ राज्य में बैंक स्थापित हुआ।

ई० सन्	घटना
१९३२	(जनवरी ६) राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं – अजमेर में हरिभाऊ उपाध्याय तथा ब्यावर में घीसूलाल आजोदिया व कुमारानन्द को गिरफ्तार किया गया ।
	(जनवरी १३) बीकानेर राज्य में ८ राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं–खूबराम सर्राफ, स्वामी गोपालदास, चन्दनमल बहड़ सत्यनारायण सर्राफ आदि को गिरफ्तार कर बाद में (अप्रेल) उनके विरुद्ध फौजदारी मुकदमें चलाए गए ।
	(जनवरी २६) जोधपुर में अगनराज चौपासनी वाला को राष्ट्रीय झण्डा फहराते वक्त गिरफ्तार किया गया ।
	(फरवरी १५) बीकानेर के महाराजकुमार विजयसिंह ने आत्महत्या की ।
	(मई २९) अलवर नगर में मुसलमानों द्वारा चादर का जुलूस निकाला गया जिससे दंगा हो गया ।
	(अगस्त १७) साम्प्रदायिक चुनावों की घोषणा भारत सरकार ने की ।
	(अगस्त २२) जोधपुर के प्रसिद्ध सन्यासी देवीदान की मृत्यु हुई ।
	(सितम्बर ९) जोधपुर नगर में आधुनिक ढंग के नए अस्पताल (विन्डम अस्पताल), जो अब महात्मा गांधी अस्पताल कहलाता है, का उद्घाटन हुआ ।
	(सितम्बर २७) भारत के हरिजनों के मताधिकार के लिए पुनः समझौता हुआ ।
	(नवम्बर १७) तृतीय गोल मेज कान्फ्रेंस हुई ।
१९३३	(फरवरी) महात्मा गांधी ने हरिजन सेवक संघ की स्थापना की तथा हरिजन पत्र निकालना शुरू किया ।
	(फरवरी) भरतपुर, धोलपुर व करौली के काश्तकारों ने आन्दोलन किया ।
	(मई) महात्मा गांधी ने हरिजनों के लिए आत्म शुद्धि उपवास किया ।
	(दिसम्बर ३१) ब्यावर में राजपूताना देशी राज्य प्रजा परिषद् का दो दिन का कार्यकर्त्ता सम्मेलन हुआ ।
	बम्बई में सिरोही राज्य प्रजा मण्डल की स्थापना हुई ।
	अलवर में प्रजा मण्डल स्थापित हुआ ।
	बम्बई में केलकर की अध्यक्षता में देशी राज्य प्रजा परिषद् का सम्मेलन हुआ जिसमें जयनारायण व्यास ने भाग लिया ।
	उदयपुर में पुरातत्व संग्रहालय स्थापित हुआ ।
	जोधपुर में इजलासे खास (सर्वोच्च न्यायालय) स्थापित किया गया ।
	अजमेर में दयानन्द सरस्वती के महाप्रयाण की अर्द्ध शताब्दी मनाई गई जिसमें देश व विदेश के आर्य समाजियों ने भाग लिया ।
	अलवर नरेश जयसिंह को राजगद्दी से हटाया गया और वहां का शासन भारत सरकार की देख-रेख में होने लगा ।
	जयपुर नरेश मानसिंह पोलो टीम लेकर पहली बार इंग्लैंड गया ।

ई० सन् घटना

१९३३ अलवर राज्य में नामजद सदस्यों की नगरपालिका स्थापित हुई।

१९३४ (फरवरी) वायसराय लार्ड विलिंग्डन बीकानेर गया।
(मई २२) अलवर नरेश जयसिंह ने खदर का भेष धारण कर राज्य छोड़ दिया।
(नवम्बर ४) जैसलमेर में सरकारी मासिक पत्र "जेसलमेर राजपत्र" प्रकाशित होने लगा।
शेखावाटी व सीकरवाटी के किसानों ने आन्दोलन किया।
सीकर में गोली बारी व लाठी चार्ज हुआ।
मारवाड़ प्रजा मण्डल स्थापित हुआ।
व्यावर में राजनैतिक सम्मेलन तथा विद्यार्थी सम्मेलन हुआ।

१९३५ (जनवरी ८) अलवर नरेश जयसिंह को विलायत से लौटने पर भारत सरकार द्वारा राज्य की सीमा में घुसने नहीं दिया गया।
(अप्रेल १६) बम्बई में सिरोही प्रजामण्डल की स्थापना हुई।
(अगस्त) लोहारू के सिंहानी तथा आसपास के अन्य गांवों में नृशंस एवं भीषण गोलीकाण्ड व हत्याकाड हुए।
(अगस्त ४) बादशाह ने भारत के नए शासन विधान को स्वीकृत किया।
(अक्टुबर) वनस्थली विद्यापीठ नामक महिला शिक्षण संस्था हीरालाल शास्त्री ने चालू की।
डूंगरपुर में बाल तथा अनमेल विवाह निषेध कानून बनाया गया।
कलकत्ता में बीकानेर राज्य प्रजा मण्डल की स्थापना हुई।

१९३६ (फरवरी ४) खामली घाट से फुलाद तक रेल्वे लाईन खुली।
(मार्च १६) बीकानेर के जननेता मघाराम तथा लक्ष्मणदास को देश-निकाला दिया गया।
(मार्च १७) जोधपुर में संग्रहालय तथा पुस्तकालय के नए भवन का उद्घाटन वाइसराय लार्ड विलिंगडन ने किया।
(मार्च २९) जवाहरलाल नेहरू के जोधपुर आने पर जनता ने उसको मान-पत्र दिया।
(अप्रेल २९) भील नेता मोतीलाल तेजावत जेल से छूटा।
(जुलाई) कराची में डाक्टर पट्टाभी सीतार मैया की अध्यक्षता में देशी राज्यों के प्रतिनिधियों का सम्मेलन हुआ जिसमें "प्रजा" व "लोक" शब्द पर विस्तृत विवेचन किया गया। तब ही देशी राज्य प्रजा परिषद् के बदले लोक-परिषद् नाम दिया गया।
(अक्टुबर ४) बीकानेर में प्रजामण्डल की स्थापना हुई।
गोकुल भाई भट्ट ने बम्बई में सिरोही राज्य प्रजामण्डल बनाया।
(नवम्बर) जयपुर प्रजामण्डल का पुनर्गठन हुआ।

ई० सन्	घटना
१९३६	(दिसम्बर ३१) मारवाड़ उत्तराधिकार कानून लागू किया गया।
	बीकानेर के कार्यकर्त्ता स्वामी गोपालदास की मृत्यु हुई।
	जोधपुर में तांबे का सिक्का फिर से बनाया जाने लगा।
	जोधपुर में नागरिक स्वतन्त्रता संघ की स्थापना रणछोड़दास गट्टानी की अध्यक्षता में हुई।
	जोधपुर में नाप तोल के लिए कानून बनाया गया।
१९३७	(मार्च ३) बीकानेर राज्य का राजनैतिक कार्यकर्त्ता मधाराम वैद्य गिरफ्तार किया गया।
	(अप्रेल १) भारतीय शासन अधिनियम १९३५ का प्रांतीय भाग लागू किया गया।
	(अप्रेल २१) बहरोड़ में गोलीकांड हुआ।
	(नवम्बर) मारवाड़ प्रजामण्डल और नागरिक स्वतन्त्रता संघ गैर कानूनी घोषित किए गए।
	जयपुर महाराजा और सीकर ठिकाने के बीच झगड़ा होकर समझौता हुआ।
	भारत सरकार ने प्रतापगढ़ के खिराज में कमी की।
	ब्यावर में अजमेर मेरवाड़ा राजनैतिक सम्मेलन किया गया।
१९३८	(जनवरी ३१) जयपुर सरकार द्वारा जमनालाल बजाज गिरफ्तार किया गया जयपुर में जमनालाल बजाज की गिरफ्तारी पर गांधीजी ने धमकी दी कि वे इसे एक अखिल भारतीय मामला बना देंगे।
	(जनवरी) भारत सरकार ने मेरवाड़ा के २२ गांवों (२७३ वर्गमील) जोधपुर राज्य को तथा ९३ गांव (२२३ वर्गमील) उदयपुर राज्य को लौटा दिए।
	(फरवरी) हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन में निर्णय लिया गया कि देशी राज्यों में प्रत्यक्ष रूप से कांग्रेस की शाखायें न खोलकर वहां प्रजामण्डल आदि नामों से पृथक स्वतन्त्र संगठन स्थापित किए जावें।
	(फरवरी १) नवसारी में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के तत्वाधान में देशी राज्यों के कार्यकर्त्ताओं का सम्मेलन हुआ।
	(मई) जयपुर प्रजामण्डल का प्रथम अधिवेशन जमनालाल बजाज की अध्यक्षता में हुआ।
	(नवम्बर) बम्बई में विभिन्न नरेशों तथा मन्त्रियों का सम्मेलन हुआ।
	जयपुर राज्य में पंचायत कानून बना।
	(दिसम्बर १६) जयपुर सरकार ने जमनालाल बजाज पर जयपुर में घुसने पर प्रतिबन्ध लगाया।
	मेवाड़ प्रजा मण्डल की स्थापना हुई लेकिन वह शीघ्र गैर कानूनी घोषित कर दी गई।

ई० सन्	घटना
१६३८	जयपुर प्रजामण्डल को गैर कानूनी घोषित किया गया एवं आदेश जारी किया गया कि कोई भी सार्वजनिक संस्था महाराज की सहमति बिना नहीं बनाई जा सकती ।
	जैसलमेर में बिजली लगी ।
	जोधपुर नगर को पानी पहुंचाने के लिए ५६ मील लम्बी सुमेर समन्द नहर बनाई गई ।
	अलवर में झण्डारोहण पर मास्टर भोलानाथ, द्वारकाप्रसाद, [illegible] आदि को गिरफ्तार किया गया ।
	जोधपुर में मारवाड़ लोक परिषद् की स्थापना की गई ।
	भारत सरकार ने बूंदी राज्य का खिराज एक लाख बीस हजार रुपये से घटाकर सत्तर हजार चार सौ कर दिया ।
	बूंदी राज्य ने हाली, ग्यारह सन्, रामशाही तथा कटारशाही सिक्के बन्द कर अंग्रेजी कलदार सिक्के चालू किये ।
	अलवर, जैसलमेर व शाहपुरा राज्यों में प्रजामण्डलों की स्थापना की गई ।
	बूंदी राज्य में समाज उत्थान संघ (वर्तमान हरिजन सेवक संघ) की शाखा स्थापित हुई ।
	जयपुर के ११ जिलों के लिए जिला सलाहकार बोर्ड स्थापित किए गए ।
१६३६	(जनवरी २३) सिरोही में प्रजामण्डल की स्थापना हुई ।
	(फरवरी ३) जमनालाल बजाज आदि को प्रजामण्डल के कार्यकर्ताओं में गिरफ्तार किया गया । जयपुर प्रजामण्डल के सत्याग्रह में जानकीदेवी बजाज ने भाग लिया ।
	(फरवरी १५) अखिल भारतीय प्रजामण्डल का छठा अधिवेशन जवाहरलाल नेहरू के सभापतित्व में लुधियाना में हुआ ।
	(मार्च ५) गंगानगर में सरदार दरबारासिंह की अध्यक्षता में किसानों का सम्मेलन हुआ ।
	(अगस्त ७) जमनालाल बजाज बिना शर्त छोड़ दिया गया ।
	(सितम्बर ३) द्वितीय विश्व युद्ध प्रारम्भ हुआ ।
	शाहपुरा व सिरोही में बाल विवाह निषेध कानून बने ।
	जोधपुर, जयपुर व सिरोही राज्यों में केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड स्थापित हुए ।
	भरतपुर में प्रजामण्डल की स्थापना की गई लेकिन इसका पंजीयन ६ माह के सत्याग्रह के बाद ही हो सका । सत्याग्रह चलाने पर भरतपुर प्रजामण्डल अवैध घोषित किया गया तथा कई नेता गिरफ्तार किए गए । बाद में (दिसम्बर) राज्य से समझौता हो गया और प्रजामण्डल का नाम प्रजा-परिषद् रख दिया गया ।

ई० सन्	घटना
१९४०	(जनवरी) मोहम्मदअली जिन्ना ने घोषणा की कि भारत में हिन्दू मुसलमानों के अलग-अलग राष्ट्र हों।
	(मार्च) वायसराय लार्ड लिनलिथगो अजमेर व जोधपुर आया।
	(अप्रेल) अखिल भारतीय देशी राज्य जनता कोन्फ्रेंस का सभापति द्वारकादास कचरू राजनैतिक समझौते के लिए दीवान से बातचीत करने जोधपुर आया लेकिन दीवान ने मिलने से इन्कार कर दिया।
	(मई ९) जयपुर नरेश मानसिंह ने कूचबिहार की राजकुमारी गायत्रीदेवी से विवाह किया। इस महारानी ने आगे चलकर राजस्थान के सामाजिक व राजनैतिक आन्दोलनों में अभूतपूर्व भाग लिया।
	(जून २६) जोधपुर सरकार व मारवाड़ राज्य लोक परिषद् के बीच समझौता हुआ जिसके कारण जयनारायण व्यास आदि राजनैतिक कार्यकर्त्ता छोड़े गए।
	(अगस्त १) उदयपुर राज्य की रेल्वे का नाम मेवाड़ राज्य रेल्वे रखा गया।
	(नवम्बर) अलवर राज्य में संग्रहालय स्थापित हुआ।
	झालावाड़ राज्य के मन्दिरों में अछूतों के लिए प्रवेश की अनुमति दी गई।
	मारवाड़ राज्य लोक परिषद् गैर कानूनी घोषित की गई।
	जयपुर में बाल विवाह निषेध कानून बना।
	जोधपुर सरकार ने सार्वजनिक संस्था अधिनियम बनाया।
	बूंदी राज्य में हाईकोर्ट स्थापित हुआ।
	भरतपुर मे राष्ट्रीय ध्वज पर प्रतिबन्ध लगाया गया।
	भरतपुर में नगरपालिका चुनाव में भरतपुर प्रजा परिषद् ने भाग लिया।
१९४१	(मई) सागरमल गोपा जैसलमेर राज्य द्वारा गिरफ्तार किया गया।
	(मई) टोंक राज्य का सिक्का चंवरशाही बन्द किया जाकर अंग्रेजी कलदार सिक्का चालू किया गया।
	(मई) जोधपुर में निर्वाचन होकर प्रतिनिधि सलाहकार बोर्ड बनाया गया जिसमें निर्वाचित सदस्यों का बहुमत था।
	(जून १) जोधपुर राज्य सरकार ने जागीरों में लागबागों के मामलों को सुलझाने तथा जागीरदारों व काश्तकारों के सम्बन्धों को ठीक-ठाक करने को एक कमेटी नियुक्त की।
	(दिसम्बर २) अर्जुनलाल सेठी की मृत्यु हुई।
	(दिसम्बर ४) जापान ने पर्लहारबर पर आक्रमण कर महायुद्ध में प्रवेश किया।
	उदयपुर में प्रजामण्डल पर से प्रतिबन्ध हटाया गया।
	उदयपुर में अनमेल विवाह निषेध कानून बनाया गया।
	जोधपुर के नगरपालिका चुनावों में लोक परिषद् ने बहुमत प्राप्त किया।

ई० सन्	घटना
१९४१	जोधपुर में लागबागों को नियमित किया गया।
	प्रसिद्ध क्रांतिकारी केशरीसिंह बारहठ की मृत्यु हुई।
	अलवर राज्य में हाईकोर्ट स्थापित हुआ।
१९४२	(फरवरी ११) जमनालाल बजाज की मृत्यु हुई।
	(फरवरी) मारवाड़ लोक परिषद् का एक खुला अधिवेशन लाडनूं में हुआ।
	(मार्च २७) चंडावल के जागीदार द्वारा लोक परिषद् के कार्यकर्ताओं के साथ मारपीट की गई।
	(मार्च २८) जोधपुर में उत्तरदायी शासन मांग दिवस मनाया गया।
	(मार्च) जयपुर प्रजा मंडल का वार्षिक अधिवेशन श्रीमाधोपुर में किया गया।
	(अप्रेल २) देशी राज्यों के शासकों के प्रतिनिधि के रूप में बीकानेर नरेश शार्दूलसिंह ने सर इस्टेफर्ड क्रिप्स से बातचीत की।
	(अप्रेल २६) मारवाड़ राज्य में चंडावल अत्याचार विरोधी दिवस मनाया गया।
	(मई २७) जयनारायण व्यास को सत्याग्रह आन्दोलन के सिलसिले में गिरफ्तार किया गया।
	(जून २०) मिर्जा ईस्माईल जयपुर राज्य का प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया।
	(जुलाई २२) बीकानेर राज्य प्रजापरिषद् प्रजामण्डल के स्थान पर स्थापित हुई। इसका सभापति रघुवरदयाल चुना गया।
	(अगस्त ८) अखिल भारतीय कांग्रेस समिति ने भारत छोड़ो प्रस्ताव पास किया।
	(अगस्त) भरतपुर प्रजा परिषद् के कार्यकर्त्ता भारत छोड़ो आन्दोलन के पूर्व ही गिरफ्तार कर लिये गये।
	(अगस्त ९) बीकानेर राज्य प्रजा परिषद् के कार्यकर्त्ता गिरफ्तार किये गये।
	उदयपुर के कार्यकर्त्ता भी गिरफ्तार किये गये लेकिन शीघ्र छोड़ दिये गये।
	(अगस्त) अजमेर की कांग्रेस समिति अवैध घोषित की गई।
	(सितम्बर) जयपुर में हाईकोर्ट स्थापित किया गया।
	(दिसम्बर ९) बीकानेर मे झंडा सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ।
	भरतपुर में आदित्येन्द्र रेवतीसरण जुगलकिशोर चतुर्वेदी, जगपतसिंह, जीवाराम, रमेश स्वामी आदि को गिरफ्तार किया गया।
	मारवाड़ में लागबाग नियमित करने के लिये नियम लागू किये गये।
	जयपुर में रेवेन्यू बोर्ड स्थापित हुआ।
१९४३	(फरवरी) जयपुर राज्यों में हिन्दी व उर्दू को राजभाषा घोषित किया गया।
	(फरवरी २) बीकानेर नरेश गंगासिंह का देहान्त हुआ।

ई० सन्	घटना
१९४३	(अप्रेल २) जयपुर राज्य का संविधान सुधार समिति ने अपनी रिपोर्ट पेश की।
	(अक्टुबर १८) बूंदी में प्रतिनिधि धारा सभा का निर्माण हुआ।
	जयपुर उत्तराधिकार कानून बना। मारवाड़ फेक्टरी कानून बना।
	बूंदी में प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य की गई।
	जयपुर में खान में काम करने वाली गर्भवती मजदूरनियों की भलाई का कानून बनाया गया।
	जयपुर में बालिकाओं की हत्या रोकने का कानून बनाया गया।
	जोधपुर राज्य के जागीरी गांवों में किश्तवार पैमाइश आरंभ हुई।
१९४४	(जनवरी १) जयपुर ने केन्द्रीय व जिला सलाहकार बोर्डों को भंग कर ५१ सदस्यों की विधान परिषद् व १२५ सदस्यों की विधान सभा बनाने की घोषणा की।
	(मई) जोधपुर राज्य के उन समस्त कैदियों को जो भारत रक्षा नियम के अन्तर्गत जेल में थे, मुक्त कर दिया गया।
	(जुलाई ६) बूंदी में प्रजामंडल का नाम लोकपरिषद् रखा जाकर पुनर्गठन किया गया।
	(अगस्त २६) बीकानेर के रघुवरदयाल गोयल, गंगादास कौशिक व दाऊदयाल आचार्य को गिरफ्तार किया गया।
	जयपुर में पंचायतों को ज्यादा अधिकार देने के लिये नया कानून बना।
	भरतपुर राज्य में हिन्दू विवाह प्रतिफल निषेध कानून बनाया गया।
	भरतपुर राज्य में केन्द्रीय गर्भवती कल्याण अधिनियम १९४४ लागू किया।
	बूंदी में मजदूरों ने आन्दोलन किया।
	राजस्थान राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलन हुआ।
१९४५	(जनवरी १) बीकानेर में संवैधानिक सुधारों की घोषणा की गई।
	(जनवरी २६) बीकानेर प्रजापरिषद् का पुनः संगठन किया गया।
	(मई) बीकानेर में विधान सभा का उद्घाटन हुआ।
	(जून २५) वायसराय लार्ड वेवल ने घोषणा की कि देशी राज्यों के अंग्रेज सरकार से जो संबध हैं उनको उनकी सहमति के बिना किसी अन्य अधिकारी को हस्तांतरित नहीं किये जायेंगे।
	(जून) दूदवा खारा (बीकानेर राज्य) में जागीरदारों जुल्मों के विरुद्ध आन्दोलन हुआ।
	(अगस्त ४) बूंदी नरेश ने संवैधानिक सुधारों की घोषणा की।
	(अगस्त १४) द्वितीय महायुद्ध समाप्त हुआ। बीकानेर राज्य प्रजा मंडल की की स्थापना हुई।

ई० सन्	घटना
१९४५	(सितम्बर ५) जयपुर राज्य परिषद व विधानसभा का उद्घाटन महाराजा सवाई मानसिंह ने किया।
	(नवम्बर ५) दिल्ली में भारतीय राष्ट्रीय सेना के तीन सैनिक अधिकारियों के विरुद्ध मुकदमें की कार्यवाही आरंभ हुई।
	(दिसम्बर २८) बीकानेर की रायपुरीया इन्टर कालेज के विद्यार्थी द्वारकाप्रसाद कौशिक को 'जयहिन्द' कहने से कालेज से निकाल दिया गया।
	(दिसम्बर ३०) उदयपुर में जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में देशी राज्य लोक परिषद का वृहत् अधिवेशन हुआ।
	बूंदी में कालेज खुला। बूंदी में "राजस्थान साप्ताहिक" प्रकाशित होने लगा।
	मारवाड ग्राम पंचायत कानून बना।
	टोंक में हाईकोर्ट स्थापित हुआ।
	जयपुर में काश्तकारी कानून लागू किया गया।
१९४६	(जनवरी १७) वायसराय लार्ड वैवल ने नरेन्द्र मंडल में नरेशों को आश्वासन दिया कि रियासतों तथा अंग्रेज सरकार के बीच जो संबंध हैं उनको उनकी सहमति के बिना किसी अन्य सत्ता को हस्तांतरित नहीं किये जायेंगे।
	(फरवरी ८) अलवर राज्य में दमन विरोधी दिवस मनाया गया तथा कई कार्यकर्ता गिरफ्तार किये गये। बाद में हीरालाल शास्त्री के प्रयत्नों से महाराजा तेजसिंह व प्रजा मंडल के बीच समझौता हो गया। अतः (फरवरी १० को) आन्दोलनकारियों को जेल से छोड़ दिया गया।
	(फरवरी १९) भारतीय नाविकों ने विद्रोह किया।
	(मार्च ३१) मुस्लिम नेता मौलवी अब्दुलकद्दूस अलवर में गिरफ्तार हुआ।
	(मार्च) जयपुर विधान सभा ने प्रस्ताव पारित किया कि जयपुर राज्य में लोकप्रिय शासन स्थापित हो।
	(अप्रैल) जैसलमेर जेल में सागरमल गोपा को पेट्रोल से जला कर मारा गया।
	(मई १५) जयपुर में प्रथम लोकप्रिय मंत्री की नियुक्ति की गई। वह जयपुर प्रजा मंडल का सदस्य था तथा राजस्थान में पहला निर्वाचित मंत्री था।
	(जून १६) वायसराय लार्ड वैवल द्वारा अपनी कौन्सिल के १६ भारतीय सदस्यों (मंत्रियों) की नियुक्ति की घोषणा की। इस प्रकार प्रथम राष्ट्रीय सरकार बनी।
	(जून २५) बीकानेर में रघुवरदयाल गोयल राज्य में प्रवेश निषेध आज्ञा का उल्लंघन कर गिरफ्तार हुआ।

ई० सन्	घटना
१९४६	(जून २६) बीकानेर राज्य प्रजा परिषद् प्रवासी शाखा कानपुर का अध्यक्ष हीरालाल शर्मा बीकानेर में एक आम सभा में राज्य विरोधी भाषण देने के कारण गिरफ्तार किया गया।
	(जून३०) बीकानेर राज्य का प्रथम द्विवर्षीय राजनैतिक सम्मेलन रायसिंह-नगर (जिला गंगानगर) में रामचन्द्र जैन के सभापतित्व में हुआ।
	(जुलाई २७) महाराजा बीकानेर ने वैधानिक सुधारों के वातावरण को ठीक करने के लिए कुल राजनैतिक अपराधियों (७) को रिहा किया।
	(अगस्त १३) अलवर राज्य के वहादुरपुर गांव को दंगाईयों ने जला दिया।
	(अगस्त १६) अलवर नगर में पाकिस्तान दिवस मनाया गया जिसमें १६ मई के केबीनेट मिशन के वक्तव्य का विरोध किया गया।
	भारत में मुस्लिम लगी ने "प्रतिवाद दिवस" मनाया जिसके कारण कलकत्ते में खूनी दगे हुए।
	(अगस्त २४) अलवर नगर में १४४ धारा का उल्लंघन कर राजनैतिक कार्यकर्ताओं ने जुलूस निकाला।
	(अगस्त २३) अलवर नगर व कई कस्बों में हड़तालें की गई और जुलूस निकाले गए।
	(अगस्त ३१) बीकानेर नरेश ने उत्तरदाई शासन की घोषणा की।
	(सितम्बर २) जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में अन्तरिम भारत सरकार बनी।
	(सितम्बर २४) मुसलमानों का नेता गुलामबख्श नारंग अलवर आया।
	(अक्टूबर १५) मुस्लिम लीग के प्रतिनिधि भारत की अन्तरिम सरकार में सम्मिलित हुए।
	(अक्टबर २४) बूंदी के महारावने संवैधानिक सुधारों की घोषणा की जिनमें एक निर्वाचित संविधान सभा बनाए जाने जाने की भी योजना थी।
	(नवम्बर १) कांगड (जिला चूरू) में बीकानेर प्रजा परिषद के ७ कार्यकर्ता स्वामी सच्चिदानन्द केदारनथा आदि वहां के जागीरदार द्वारा पीटे गये।
	(दिसम्बर २१) भारत की विधान निर्मात्री सभा ने एक समझौता कमेटी, नरेन्द्र मण्डल की एक ऐसी ही कमेटी के समक्ष बातचीत करने के लिए, नियुक्त की।
	(दिसम्बर १) भारतीय संविधान सभा की पहली बैठक हुई।
	बीकानेर में वेदकुमारी ने बीकानेर महाराजा के अत्याचारों के विरुद्ध आन्दोलन कर अपने आपको गिरफ्तार कराया।
	जयपुर में वेश्यावृत्ति रोकने का कानून बनाया गया।

ई० सन्	घटना
१९४६	अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् से जयपुर राज्य प्रजामंडल का संबंध हुआ।
	झालावाड़ मंत्रि मंडल में लोकप्रिय मंत्री लिया गया।
	बूंदी में प्रजा परिषद् का गठन हुआ।
१९४७	(फरवरी २०) इंगलेंड के प्रधानमंत्री ने अपनी सरकार की भारत की सत्ता हस्तान्तरित करने की घोषणा की।
	बम्बई में केबिनेट मिशन योजना पर विचार करने के लिए नरेशों का एक सम्मेलन हुआ।
	(मार्च १३) डीडवाना के गाँव डावडा में किसान सम्मेलन हुआ। इसमें किसान सभा के कई कार्यकर्ताओं के साथ जागीरदारों ने मारपीट की।
	(अप्रेल १) जोधपुर राज्य का नया संविधान लागू हुआ।
	(अप्रेल १) जोधपुर में हाईकोर्ट स्थापित हुआ।
	(अप्रेल १७) इतिहासज्ञ गोरीशंकर हीराचन्द का स्वर्गवास हुआ।
	(अप्रेल २८) जोधपुर व बीकानेर राज्यों के प्रतिनिधियों ने संविधान सभा में आसन ग्रहण किया।
	(जून ३) भारत विभाजन की घोषणा हुई।
	(जून १५) अखिल भारतीय कांग्रेस महासमिति ने बहुमत से भारत का विभाजन स्वीकार किया।
	(जून ८) मोहम्मदअली जिन्ना ने यह वक्तव्य दिया कि संविधान तथा कानून से सर्वोच्च सत्ता की समाप्ति पर रियासतें पूर्ण तथा स्वतंत्र राज्य होंगी और वे कोई भी रास्ता अपनाने को स्वतंत्र होंगी।
	(जुलाई १) भारत स्वतंत्रता अधिनियम अंग्रेजी पार्लियामेन्ट ने पास किया।
	जुलाई १) जयपुर में राजस्थान विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।
	(जुलाई ५) सरदार वल्लभभाई पटेल की अध्यक्षता में रियासती सचिवालय स्थापित हुआ।
	(अगस्त ५) आबू वापस सिरोही राज्य के नियन्त्रण में आया।
	(अगस्त १४) सिरोही राज्य में रीजेंसी कौंसिल बनी।
	(अगस्त १५) भारत स्वतंत्र हुआ।
	(अगस्त) बूंदी राज्य भारत संघ में सम्मिलित हुआ।
	(सितम्बर २७) जयपुर में हिन्दू विवाहित स्त्रियों के अलग रहने व निर्वाह भत्ता पाने के अधिकार विषयक कानून लागू किया गया।
	(अक्टुबर २२) पाकिस्तान ने काश्मीर पर हमला करने के लिए कबायली भेजे।
	(अक्टुबर २४) काश्मीर राज्य भारत में सम्मिलित हुआ।

ई० सन्	घटना
१९४७	(अक्टुबर २४) सिरोही प्रजामंडल का एक प्रतिनिधि लोकप्रिय मंत्री नियुक्त किया गया ।
	(अक्टुवर) अलवर नरेश ने मंत्रिमंडल में ३ लोकप्रिय मंत्री लेने की घोषणा की लेकिन प्रजामंडल ने इस घोषणा को स्वीकार नहीं किया ।
	(नवम्बर १७) जोधपुर राज्य की विधानसभा का उद्घाटन हुआ ।
	सरदार पटेल ने अलवर व भरतपुर नरेशोंको राज्यमें होने वाले दंगों के सिलसिले में दिल्ली बुलाया ।
	जयपुर मेडिकल कालेज खुला ।
	कोटा नरेश ने लोक प्रिय सरकार वनाने की घोषणा की ।
	गोकुललाल असावा के नेतृत्व में शाहपुरा राज्य में लोकप्रिय मन्त्रिमण्डल वनाया गया ।
	जयपुर राज्य अनदान भूमि भूधृति अधिनियम लागू किया गया ।
	उदयपुर राज्य के कर्मचारियों ने वेतन वढ़ाने के लिए आन्दोलन किया ।
	जयपुर व कोटा में दरोगों को दायजे में देने की प्रथा के विरुद्ध कानून वनाया गया ।
	सिरोही राज्य कन्या विक्रय निषेध कानून वनाया गया ।
	भरतपुर में वेगार विरोधी आन्दोलन हुआ ।
	भरतपुर के सत्याग्रह में रमेश स्वामी मारा गया ।
	अजमेर में अजमेर मेरवाड़ा को राजस्थान में शामिल करने का आन्दोलन हुआ ।
१९४८	(जनवरी ३०) महात्मा गांधी की हत्या की गई ।
	(फरवरी १) सिरोही गुजरात राज्य एजेंसी का भाग बना दिया गया ।
	(फरवरी ७) अलवर नरेश को यह आदेश दिया गया कि वह अपने राज्य का प्रशासन केन्द्र को सौंप देवे ।
	(फरवरी २७) अलवर, धोलपुर व करौली के नरेशों ने भारत सरकार के राज्य संघ में मिलने का निश्चय किया ।
	(फरवरी २८) जोधपुर नरेश व जोधपुर कांग्रेस के बीच जिम्मेदार सरकार के लिए समझौता हुआ ।
	(फरवरी २८) मत्स्य संघ वनाने का समझौता लिखा गया ।
	(मार्च ३) जोधपुर में जयनारायण व्यास ने प्रथम लोकप्रिय मिली-जुली सरकार का मन्त्रिमण्डल वनाया ।
	(मार्च १७) भरतपुर नगर में अलवर, भरतपुर, धोलपुर व करौली राज्यों का संघ मत्स्य संघ के नाम से वना जिसका राजप्रमुख धोलपुर नरेश को वनाया गया तथा राजधानी अलवर रखी गई ।

ई० सन्	घटना
१९४८	(मार्च १८) बीकानेर राज्य में अन्तरिम सरकार बनी जिसमें आधे जनता के व आधे महाराजा द्वारा नियुक्त मन्त्री थे ।
	(मार्च २५) कोटा राज्य छोटे राजस्थान में सम्मिलित हुआ ।
	(मार्च २७) जयपुर राज्य के संविधान में संशोधन किया गया तथा हीरालाल शास्त्री को मुख्य सचिव तथा बी० टी० कृष्णमाचारी को दीवान तथा ५ अन्य मन्त्री नियुक्त किए गए जो विधानसभा के प्रति जिम्मेदार थे ।
	(मार्च २५) कोटा, बूंदी, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, शाहपुरा, झालावाड़, टोंक व किशनगढ़ राज्यों को सम्मिलित कर संयुक्त राजस्थान संघ का निर्माण किया ।
	(अप्रेल १८) राजस्थान संघ में उदयपुर सम्मिलित हुआ । इसका उद्घाटन जवाहरलाल नेहरू ने किया ।
	(जून ५) पालनपुर व दांता राज्य बम्बई प्रान्त में विलीन हुए ।
	(जून १७) जोधपुर में लोकप्रिय मन्त्रिमण्डल का पुनः निर्माण हुआ ।
	(अगस्त १२) जयपुर नरेश ने विदेशी सुरक्षा व यातायात के मामलों में जयपुर को भारत में विलय करने का इकरार किया ।
	(अगस्त २१) जोधपुर में शासन सम्बन्धी कार्यों के प्रति जिम्मेदार मंत्रिमंडल स्थापित हुआ ।
	(सितम्बर १३) भारतीय सेना हैदराबाद (दक्षिण) में घुसी ।
	(नवम्बर ४) स्वतन्त्र भारत के संविधान का मसौदा भारतीय संविधान सभा में पेश हुआ ।
	(नवम्बर ८) सिरोही को केन्द्रीय प्रशासन के अन्तर्गत लिया गया ।
	(दिसम्बर १५) मेवाड़ स्टेट रेल्वे का नाम राजस्थान रेल्वे रखा गया ।
	(दिसम्बर) जयपुर में अखिल भारतीय कांग्रेस का खुला अधिवेशन हुआ ।
	मत्स्य में दरोगों को दायजे में देने की प्रथा के विरुद्ध कानून बनाया गया ।
	जयपुर अनमेल विवाह निषेध कानून बनाया गया ।
	देशी राज्यों की लोक परिषदों को समाप्त कर कांग्रेस समितियां बनी ।
१९४९	(जनवरी १) जोधपुर में जागीरदारों के न्यायालय समाप्त किए गए ।
	(जनवरी ५) सिरोही राज्यों को केन्द्रीय सरकार के अन्तर्गत लिया गया तथा आबू पर केन्द्रीय सरकार की ओर से बम्बई सरकार का शासन स्थापित हुआ ।
	(जनवरी १४) जयपुर, जोधपुर, बीकानेर व जैसलमेर रियासतों के राजस्थान में विलय करने की घोषणा सरदार पटेल ने की ।
	(मार्च ३०) जयपुर, जोधपुर, बीकानेर व जैसलमेर राज्य संयुक्त राजस्थान में सम्मिलित हुए ।

ई० सन्	घटना
१९४९	मारवाड़ भू-राजस्व कानून तथा मारवाड़ काश्तकारी कानून लागू किए गए।
	(अप्रेल ६) जोधपुर का कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल समाप्त हुआ।
	(अप्रेल ७) जोधपुर राजस्थान में विलय हुआ।
	(अप्रेल ७) राजस्थान प्रशासन अध्यादेश बनाया जाकर लागू किया गया।
	जयपुर में राजस्थान का प्रथम मन्त्रिमण्डल हीरालाल शास्त्री की अध्यक्षता में बनाया गया। जयपुर नरेश मानसिंह राजप्रमुख बना।
	"राजस्थान राज पत्र" का प्रकाशन आरम्भ हुआ।
	(मई १५) मत्स्य संघ राज्य में सम्मिलित हुआ।
	(जून २१) राजस्थान के काश्तकारों को संरक्षण देने का कानून लागू किया गया।
	(अगस्त १५) राजस्थान में सीमा विभाजन कानून लागू किया गया।
	(अगस्त २०) सी० एस० वेंकटाचारी की अध्यक्षता में राजस्थान में जागीर जांच कमेटी संगठित की गई।
	(अगस्त २१) राजस्थान हाईकोर्ट जोधपुर में स्थापित हुआ।
	(अक्टुबर ६) जैसलमेर राज्य राजस्थान का एक जिला बनाया गया।
	किशनगढ राज्य जयपुर जिला का, झालावाड़ राज्य में खानपुर तहसील मिलाई जाकर झालावाड़ जिला बनाया गया।
	(अक्टुबर २३) जोधपुर के कटला बाजार में एक भयंकर विस्फोट हुआ। इसमें कई व्यक्ति मारे गए।
	(नवम्बर १) राजस्थान में राजस्व मण्डल बनाए जाने का कानून लागू किया गया।
	(नवम्बर १८) छोटी सादड़ी (उदयपुर) रेल्वे लाईन खुली।
	(नवम्बर २६) भारतीय संविधान सभा ने भारतीय संविधान पारित किया।
	(दिसम्बर ८) राजस्थान में समाचार पत्रों तथा मुद्रणालयों के नियमन व पुस्तकों के पंजीकरण का कानून बनाया गया।
	(दिसम्बर १४) राजस्थान में सार्वजनिक जूआ कानून लागू किया गया।
	(दिसम्बर १८) वेंकटाचार समिति ने जागीरदारी समस्या पर अपनी रिपोर्ट पेश की।
	(दिसम्बर २२) राजस्थान लोक सेवा आयोग कानून लागू किया गया।
१९५०	(जनवरी १४) राजस्थान में अफीम का कानून बनाया गया।
	(जनवरी २६) अजमेर भारत में विलीन हुआ तथा सिरोही राज्य आबूरोड व देलवाड़ा तहसीलों को छोड़कर जो बम्बई राज्य में मिलाई गई राजस्थान में मिलाया गया।
	(जनवरी २५) राजस्थान दीवानी न्यायालय कानून लागू किया गया।

ई० सन्	घटना
१९५०	(जनवरी २६) भारतीय गणतन्त्र का संविधान लागू हुआ तथा राजेन्द्रप्रसाद को भारतीय गणतन्त्र का प्रथम राष्ट्रपति बनाया गया।
	(मार्च) राजस्थान के राजस्थान संघ में विलय हो जाने पर बूंदी को अलग जिला बनाया गया।
	(जुलाई १) राजस्थानी आबकारी कानून लागू हुआ।
	(जून १) राजस्थान बाल धूम्रपान निषेध कानून लागू किया गया।
	(जुलाई १) राजस्थान अफीम व धूम्रपान निषेध कानून लागू किया गया।
	जोधपुर के तीन लोकप्रिय मन्त्रियों—जयनारायण व्यास, मथुरादास माथुर व द्वारकादास पुरोहित पर राज्य सरकार ने मुकदमें चलाए जो बाद में वापस ले लिए गए।
१९५१	(जनवरी ४) हीरालाल शास्त्री ने राजस्थान के मुख्यमन्त्री का पद छोड़ा।
	(अप्रेल १) भारत सरकार ने रियासतों की सेना पूर्णतया अपने नियन्त्रण में लेली और वे भारतीय सेना का एक अंग बन गई।
	(अप्रेल १८) भारत में भूदान आन्दोलन आरम्भ हुआ।
	(अप्रेल २६) जयनारायण व्यास राजस्थान का मुख्यमन्त्री बना।
	(दिसम्बर २२) राजस्थान नगरपालिका कानून लागू किया गया।
	भारतीय जनसंघ की स्थापना डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने की अतः उसकी शाखायें राजस्थान में भी स्थापित हुई।
	राजस्थान में केन्द्रीय बाल विवाह निषेध कानून १९२९ लागू किया गया।
१९५२	(फरवरी १८) राजस्थान भूमि सुधार तथा जागीर पुनर्ग्रहण कानून लागू किया गया।
	(मार्च २) जयनारायण व्यास मन्त्रिमण्डल समाप्त हुआ।
	(मार्च ३) टीकाराम पालीवाल ने अपना मन्त्रिमण्डल बनाया।
	(मार्च २९) राजस्थान विधानसभा का उद्घाटन हुआ।
	(अप्रेल २२) राजस्थान विधान सभा ने सर्व सम्मति से प्रस्ताव पास किया कि आबू राजस्थान का ही अंग है अतः उसे राजस्थान में मिलाया जावे।
	(मई १६) अलवर व भरतपुर जिलों में राजस्थान कृषि लगान नियन्त्रण कानून लागू किया गया।
	(अगस्त १५) राजस्थान जंगली जानवरों व पक्षियों का संरक्षण कानून १९५१ लागू किया गया।
	(अक्टुबर २) सामुदायिक विकास कार्यक्रम आरम्भ किये जाने से राजस्थान में सामाजिक क्रांति व आर्थिक विकास विकास का सूत्रपात हुआ।
	(नवम्बर १) जयनारायण व्यास ने पुनः अपना मन्त्रिमण्डल बनाया।
१९५३	(फरवरी २८) जैसलमेर जिला एक खण्ड बना लिया गया।

ई० सन्	घटना
१९५३	(मार्च २३) राजस्थान आदतन अपराधी अधिनियम १९५३ लागू किया गया।
	(अप्रेल १) राजस्थान सहकारी समिति कानून लागू किया गया तथा राजस्थान कृषि आयकर कानून लागू किए गए।
	(जून १) राजस्थान वन अधिनियम लागू किया गया।
	(अगस्त १२) राजस्थान मछली पालन कानून लागू किया गया।
	(नवम्बर १९) राजस्थान सरकार ने तत्कालीन मुख्यमन्त्री मोहनलाल सुखाड़िया की अध्यक्षता में जोतों की अधिकतम सीमा तय करने के लिए एक कमेटी बनाई।
	(दिसम्बर १२) राजस्थान भूमि अवाप्ति कानून लागू किया गया।
	अजमेर वेश्यावृत्ति रोकने का कानून राजस्थान पर लागू किया गया।
१९५४	(जनवरी १) राजस्थान पंचायत कानून १९५३ लागू किया गया।
	(जनवरी २) राजस्थान गर्भवती मजदूरनियों के कल्याण का कानून १९५३ लागू किया गया।
	(जनवरी २६) राजस्थान सरकारी भाषा कानून १९५२ लागू किया गया।
	(फरवरी २७) राजस्थान के कुछ कानूनों को रद्द करने का कानून लागू किया गया।
	(मार्च १) राजस्थान सरसरी बन्दोबस्त कानून लागू किया गया।
	(अप्रेल १७) राजस्थान कृषि लगान नियन्त्रण कानून १९५४ में राजस्थान कृषि नियन्त्रण का कानून १९५२ को निरसित किया लेकिन स्वयं राजस्थान काश्तकारी अधिनियम १९५५ से बाद में निरसित हो गया।
	(मई १५) राजस्थान में भारतीय औषध अधिनियम १९५४ लागू किया गया।
	(मई २५) राजस्थान उपकर समाप्ति अधिनियम लागू किया गया।
	(मई२८) प्रसिद्ध राजनैतिक कार्यकर्त्ता विजयसिंह पथिक की मृत्यु हुई।
	(जून १६) सीकर व खेतड़ी की जागीरें सबसे पहले पुनर्ग्रहित की जाकर राजस्थान में जागीरदारी प्रथा की समाप्ति आरम्भ हुई।
	(जुलाई २५) भाखरा नहर से राजस्थान नहरों में पानी आना चालू हुआ।
	(अगस्त ७) राजस्थान भूदान यज्ञ अधिनियम १९५४ लागू किया गया।
	(सितम्बर ४) राजस्थान धर्मार्थ भवन व स्थान अधिनियम लागू किया गया।
	(नवम्बर १३) मोहनलाल सुखाड़िया राजस्थान का मुख्यमन्त्री बना।
	(अक्टुबर १५) जवाहरलाल नेहरू ने जागीरदारी समस्या पर अपना पंच निर्णय दिया।

ई० सन्	घटना
१९५४	(दिसम्बर ११) राजस्थान जोत (समीकरण व विखण्डन रोक) अधिनियम लागू किया गया।
	(दिसम्बर २४) राजस्थान उपनिवेशन कानून लागू किया गया।
१९५५	(जनवरी २६) राजस्थान जिला बोर्ड कानून १९५४ लागू किया गया।
	(अप्रेल १) राजस्थान बिक्री कर अधिनियम १९५४ लागू किया गया।
	(अप्रेल ६) राजस्थान खादी व ग्रामोद्योग बोर्ड कानून लागू किया गया।
	(अप्रेल १) आकाशवाणी जयपुर ने प्रसारण कार्य प्रारम्भ किया।
	(अप्रेल १५) सर्वोच्च न्यायालय द्वारा जागीरदारों द्वारा प्रस्तुत की गई रिट पर निर्णय दिया गया।
	(जून ६) जयपुर में राजस्थान के जागीरदारों का सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ।
	(अक्टुबर १५) राजस्थान काश्तकारी कानून लागू किया गया।
	हिन्दू विवाह कानून लागू किया गया।
१९५६	(फरवरी) राजस्थान सरकार ने तत्कालीन राजस्व मंत्री दामोदरलाल व्यास की अध्यक्षता में जमीदारी व बिस्वेदारी समाप्त करने के लिए एक कमेटी बनाई जिसने अपनी रिपोर्ट राज्य सरकार को सितम्बर में दी।
	(जुलाई १) राजस्थान भूराजस्व कानून लागू किया गया। भारत में बीमा व्यवसाय का राष्ट्रीयकरण किया गया।
	(सितम्बर ३) राजस्थान जनरल क्लॉजिज एक्ट १९५५ लागू किया गया।
	(नवम्बर १) अजमेर आबू तथा सुनेलटप्पा राजस्थान में मिलाये गए तथा सिरोंज मध्यप्रदेश में मिलाया गया तथा सिरोंज मध्यप्रदेश में मिलाया जाकर वर्तमान राजस्थान नव निर्माण हुआ राजप्रमुख का पद समाप्त हुआ। नव निर्मित राजस्थान का मुख्यमन्त्री मोहनलाल सुखाड़िया चुना गया।
	किशनगढ़ राज्य अजमेर जिले का एक उपखण्ड बना।
	केन्द्रीय हिन्दू गोद तथा निर्वाह कानून लागू किया गया।
	केन्द्रीय हिन्दू उत्तराधिकार कानून लागू किया गया।
१९५७	(जनवरी ५) राजस्थान कृषि ऋण कानून १९५६ लागू किया गया।
	(मार्च २२) राष्ट्रीय पंचांग (सरकारी शक संवत्) प्रयोग में लाया जाने लगा।
	(मई) जोतों का समेकन आरम्भ हुआ।
	(जून ६) राजस्थान शीतला टीका अधिनियम लागू किया गया।
	(सितम्बर ५) अधिकतम जोत सीमा कमेटी की रिपोर्ट सरकार को प्राप्त हुई।
	(नवम्बर २२) राजस्थान महामारी रोग रोकने का अधिनियम लागू किया गया।
	(दिसम्बर १४) राजस्थान माध्यमिक शिक्षा अधिनियम लागू किया गया।

ई० सन्	घटना
१९५७	(दिसम्बर १६) धार्मिक जागीरों को पुनर्ग्रहण करने का कानून बना।
१९५८	(मार्च १५) राजस्थान भूमि उपयोग अधिनियम १९५४ लागू किया गया।
	(अप्रेल १) राजस्थान की सब जागीरों का पुनर्ग्रहण कर लिया गया।
	(अप्रेल) राजस्थान नहर कानून आरम्भ हुआ।
	(मई १५) राजस्थान काश्तकारों के ऋण निवारणार्थ कानून १९५७ लागू किया गया।
	(जुलाई १) अजमेर की इस्तमरारियां व माफियां समाप्त करने की विज्ञप्ति जारी की गई।
	(अगस्त ११) राजस्थान तोल माप (प्रचालन) अधिनियम लागू किया गया।
	(सितम्बर २२) इतिहासज्ञ जगदीशसिंह गहलोत का स्वर्गवास हुआ।
	(दिसम्बर १७) राजस्थान पशु सुधार अधिनियम लागू किया गया।
१९५९	(मार्च ३०) नाथद्वारा मन्दिर अधिनियम लागू किया गया।
	(अप्रेल १) राजस्थान संस्था पंजीकरण अधिनियम १९५८ लागू किया गया।
	(मई) भारत सरकार ने अनैतिकता रोकने का अधिनियम १९५६ समस्त राज्यों में लागू किया।
	राजस्थान यात्री व माल करारोपण अधिनियम लागू किया गया।
	(जून १) राजस्थान दूकान व वाणिज्य संस्थान कानून १९५८ लागू किया गया।
	(अगस्त ३) राजस्थान नगर सुधार अधिनियम प्रकाशित हुआ।
	(सितम्बर १०) राजस्थान पंचायत समिति तथा जिला परिषद् अधिनियम १९५९ लागू किया गया।
	(अक्टूबर २२) राजस्थान में लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण (पंचायतीराज) का उद्‌घाटन नागोर में जवाहरलाल नेहरू ने किया।
	(अक्टुबर १७) राजस्थान नगरपालिका अधिनियम पुनः बनाया जाकर लागू किया गया।
	(अक्टुबर २८) राजस्थान सार्वजनिक विन्यास (ट्रस्ट) अधिनियम लागू किया गया।
	(नवम्बर २१) राजस्थान जमीदारी व विस्वेदारी समाप्ति अधिनियम लागू किया गया।
१९६०	(जुलाई २१) राजस्थान गौशाला अधिनियम बनाया गया।
	(फरवरी १०) राजस्थान मृत्युभोज रोकने का अधिनियम लागू किया गया।
	(नवम्बर २०) जवाहरलाल नेहरू ने कोटा बांध का उद्‌घाटन किया।
१९६१	(जून ५) मारवाड़ विवाह प्रशासन अधिनियम बनाया गया।

ई० सन्	घटना
	(जुलाई १७) राजस्थान प्राचीन स्मारक व पुरातत्व स्थान व प्राचीन वस्तु अधिनियम लागू किया गया।
	(नवम्बर १) राजस्थान न्याय शुल्क व दावा मूल्यांकन अधिनियम लागू किया गया।
	(नवम्बर १४) राजस्थान कसर भोम उत्सादन अधिनियम लागू किया गया।
	(नवम्बर ३०) राजस्थान सागड़ी प्रथा उन्सादन अधिनियम लागू किया गया।
१९६२	(अप्रेल १६) डा० सम्पूर्णानन्द ने राजस्थान के राज्यपाल का पद सम्भाला।
	(जून) राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय अधिनियम लागू किया गया जिसके अन्तर्गत उदयपुर में विश्वविद्यालय स्थापित हुआ।
	(जुलाई १२) जोधपुर विश्वविद्यालय अधिनियम लागू किया गया।
	(सितम्बर ८) चीन भारत की पूर्वी सीमा में घुस आया।
	(अक्टूबर १८) चीन का भारत पर बाकायदा आक्रमण हुआ।
	(अक्टूबर २६) भारत के राष्ट्रपति ने संकट की स्थिति घोषणा की तथा भारत सुरक्षा कानून लागू किया।
	(नवम्बर १८) परमवीर मेजर शैतानसिंह चुशूल मोर्चे पर [illegible] का प्राप्त हुआ।
	(नवम्बर २१) चीन ने घोषणा की कि उसकी सेनायें आधी रात से युद्ध बन्द कर देगी।
१९६३	(मार्च १४) जयनारायण व्यास की मृत्यु हुई।
	(दिसम्बर २५) भील नेता मोतीलाल तेजावत की मृत्यु हुई।
	राजस्थान सरकार ने दौलतमल भण्डारी की अध्यक्षता में राजस्व कानून आयोग गठित किया।
	स्वर्ण नियन्त्रण कानून लागू किया गया।
	(सितम्बर १५) जोतों की अधिकतम सीमा कर कानून लागू किया गया।
१९६४	(फरवरी १३) राजस्थान जन्म, मृत्यु व विवाह पंजीकरण अधिनियम १९५८ लागू किया गया।
	(अप्रेल १३) राजस्थान भूमि सुधार व भूमि मालिकों की भूसम्पदाओं के पुनर्ग्रहण अधिनियम को लागू किया गया।
	(मई २७) प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू की मृत्यु हुई।
	(जून) लालबहादुर शास्त्री भारत का प्रधानमन्त्री बना।
	(सितम्बर १) राजस्थान में भूमि मालिकों की भूसम्पदाओं का अधिग्रहण प्रारम्भ हुआ।
१९६५	(जनवरी २६) हिन्दी भारतीय संघ की सरकारी भाषा बन गई।

ई० सन्	घटना
१९६५	(अगस्त २६) भारतीय सेना ने उडी क्षेत्र में होकर युद्ध विराम रेखा पार की।
	(सितम्बर १) पाकिस्तान ने भारत पर आक्रमण किया। प्रधानमन्त्री शास्त्री ने इसे नियमित आक्रमण बताया।
	(सितम्बर ६) पाकिस्तान के राष्ट्रपति ने घोषणा की कि हमारा भारत से युद्ध चल रहा है।
	(सितम्बर २३) प्रातःकाल ३॥ बजे से भारत व पाकिस्तान के बीच का युद्ध समाप्त हुआ।
	(अक्टुबर २) जयपुर नरेश मानसिंह स्पेन में भारत का राजदूत नियुक्त किया गया।
	(अक्टुवर १०) राजस्थान साहूकारी अधिनियम १९६३ लागू हुआ।
	(दिसम्बर ३१) राजस्थान के कुल भूमि मध्यस्थों (६,०९,५७५) को कानून से समाप्त कर दिया गया।
१९६६	(जनवरी ४) भारत के प्रधानमन्त्री शास्त्री व पाकिस्तानी के राष्ट्रपति अयूबखां के बीच ताशकन्द में शांति वार्ता आरम्भ हुई।
	(जनवरी १०) रूस की मध्यस्थता से भारत व पाकिस्तान के बीच तशाकन्द में समझौता हुआ तथा उसी रात भारत के प्रधानमन्त्री लालबहादुर शास्त्री का वहीं स्वर्गवास हुआ।
	(जनवरी १९) इन्दिरागांधी भारत की प्रधानमन्त्री बनी।
	(फरवरी १०) राजस्थान हक्कशफा अधिनियम १९६६ लागू किया गया।
	(फरवरी २५) पाकिस्तान द्वारा खाली किए गए क्षेत्रों में भारतीय सेनाओं ने पुनः प्रवेश किया।
	(जून ६) रुपये अवमूल्यन हुआ।
	राजस्थान प्राथमिक शिक्षा अधिनियम १९६४ लागू किया गया। इससे बीकानेर अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा अधिनियम १९२९ तथा अजमेर प्राथमिक शिक्षा अधिनियम १९५२ खण्डित हो गए।
१९६७	(फरवरी २७) सर्वोच्च न्यायालय द्वारा यह निर्णय दिया गया कि भविष्य में संसद को संविधान द्वारा प्रदत्त मूल अधिकारों का संशोधन करने या उनमें कटौती करने का कोई अधिकार नहीं है।
	(मार्च १३) राजस्थान में राष्ट्रपति शासन लागू किया गया।
	(अप्रेल १६) सरदार हुकमसिंह ने राजस्थान के राज्यपाल पद को सम्भाला।
	(अप्रेल२६) राजस्थान से राष्ट्रपति शासन हटा। राजस्थान में कांग्रेस दल के नेता मोहनलाल सुखाड़िया ने मुख्यमन्त्री की शपथ ली।

———

परिशिष्ट

राजस्थान के इतिहास से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित राजवंशों, शासकों, नरेशों आदि का तिथिक्रम।

जिन राजवंशों व शासकों के सामने कोई वर्ष अंकित नहीं है उनका समय अज्ञात है।

मेवाड़ राज्य के नरेश

गुहिल	ई० सन् ५३६
भोज	
महेन्द्र	
नाग (नागादित्य)	
शील (शीलादित्य)	ई० सन् ६४६
अपराजित	ई० सन् ६६१
महेन्द्र (द्वितीय)	
कालभोज (बापा)	७३४–७५३
खुम्माण	७५३
मत्तट	
भर्तृभट	
सिंह	
खुम्माण (द्वितीय)	
महायक	
खुम्माण (तृतीय)	
भर्तृभट (द्वितीय)	९४२–९५१
अल्लट	९५१
नरवाहन	९७१
शालिवाहन	
शक्तिकुमार	९७७
अम्बाप्रसाद (आम्रप्रसाद)	
शुचिवर्मा	
नरवर्मा	
कीर्तिवर्मा	

योगराज	
वैराट	
हंसयान	
वैरीसिंह	
विजयसिंह	११०७–१११७
अरिसिंह	
चोडसिंह	
विक्रमसिंह	११४९
रणसिंह	
क्षेमसिंह	
कुमारसिंह	
मथनसिंह	
पद्मसिंह	
जैत्रसिंह	१२१३–१२५३
तेजसिंह	१२५३–१२७३
समरसिंह	१२७३–१३०२
रतनसिंह	१३०२–१३०३
हमीर	१३१४–१३७८
क्षेत्रसिंह	१३७८–१४०५
लक्षसिंह	१४०५–१४२०
मोकल	१४२०–१४३३
कुम्भा	१४३३–१४६८
उदयकर्ण	१४६८–१४७३
रायमल	१४७३–१५०९
संग्रामसिंह	१५०९–१५२८
रतनसिंह	१५२८–१५३१
विक्रमादित्य	१५३१–१५३६
वणवीर	१५३६–१५४०
उदयसिंह	१५४०–१५७२
प्रतापसिंह	१५७२–१५९७
अमरसिंह	१५९७–१६२०
करणसिंह	१६२०–१६२८
जगतसिंह	१६२८–१६५२
राजसिंह	१६५२–१६८०
जयसिंह	१६८०–१६९८
अमरसिंह (द्वितीय)	१६९८–१७१०

संग्रामसिंह (द्वितीय)	१७१०-१७३४
जगतसिंह (द्वितीय)	१७३४-१७५१
प्रतापसिंह (द्वितीय)	१७५१-१७५४
राजसिंह (द्वितीय)	१७५४-१७६१
अरिसिंह (द्वितीय)	१७६१-१७७३
हम्मीरसिंह (द्वितीय)	१७७३-१७७८
भीमसिंह	१७७८-१८२८
जवानसिंह	१८२८-१८३८
सरदारसिंह	१८३८-१८४२
स्वरूपसिंह	१८४२-१८६१
शम्भूसिंह	१८६१-१८७४
सज्जनसिंह	१८७४-१८८४
फतहसिंह	१८८४-१९३०
भूपालसिंह	१९३०-१९५५
भगवतसिंह	१९५५-

बागड़ राज्य (डूंगरपुर व बांसवाड़ा का सम्मिलित राज्य) के नरेश

सामन्तसिंह (मेवाड़ राज्य से आया)	११७१- १७९
जयन्तसिंह	११७९-१२२०
सीहड़सिंह	१२२०-१२३४
विजयसिंह (जयसिंह)	—१२५१
देवपालदेव (देदा रावल)	
वीरसिंहदेव (वरसी रावल)	१२८६-१३०२
भूचण्ड (भचूंड)	
डूंगरसिंह	
कर्मसिंह	
कान्हड़देव	
प्रतापसिंह (पाता रावल)	
गोपीनाथ (गेपा रावल)	१४२६-१४४१
सोमदास	१४४१-१४८०

गंगदास १४८०-१४६७
उदयसिंह १४६७-१५२७

पृथ्वीराज (डूंगरपुर नरेश)	जगमाल बांसवाड़ा नरेश

डूंगरपुर राज्य के नरेश

पृथ्वीराज	१५२७-१५४६
आसकरण	१५४६-१५८१
सहसमल	१५८१-१६०६
कर्मसिंह	१६०६-१६०६
पूंजराज	१६०६-१६५७
गिरधरदास	१६५७-१६
जसवंतसिंह	१६६१-१६६१
खुम्मानसिंह	१६६१-१७०२
रामसिंह	१७०२-१७३०
शिवसिंह	१७३०-१७८५
वैरीसाल	१७८५-१७६०
फतहसिंह	१७६०-१८०८
जसवंतसिंह (द्वितीय)	१८०८-१८२५
दलपतसिंह	१८२५-१८४४
उदयसिंह (द्वितीय)	१८४६-१८६८
विजयसिंह	१८६८-१९१८
लक्ष्मणसिंह	१९१८

बांसवाड़ा राज्य के नरेश

जगमाल	१५१८-१५४५
जयसिंह	१५४५-१५४६
प्रतापसिंह	१५४६-१५८०
मानसिंह	१५८०-१५८६
उग्रसेन	१५८६-१६१३
उदयभाण	१६१३-१६१४
समरसिंह	१६१४-१६६०

कुशलसिंह १६६०-१६८७
अजबसिंह १६८७-१७०५
भीमसिंह १७०५-१७१३
विष्णुसिंह १७१३-१७३७
उदयसिंह (द्वितीय) १७३७-१७४७
पृथ्वीसिंह १७४७-१७८६
विजयसिंह १७८६-१८१६
उम्मेदसिंह १८१६-१८१९
भवानीसिंह १८१९-१८३९
बहादुरसिंह १८३९-१८४४
लक्ष्मणसिंह १८४४-१९०५
शम्भुसिंह १९०५-१९१३
पृथ्वीसिंह १९१३-१९४४
चन्द्रवीरसिंह १९४४-

प्रतापगढ़ राज्य के नरेश

खेमकरण
मेवाड़ के राणा मोकल का पुत्र)
सूरजमल १४७३-१५३०
बाघसिंह १५३०-१५३५
रामसिंह १५३५-१५५२
विक्रमसिंह (बीका) १५५२-१५७९
तेजसिंह १५७९-१५९४
भानुसिंह १५९४-१६०४
सिंहा १६०४-१६२३
जसवंतसिंह १६२३-१६३४
हरिसिंह १६३४-१६७४
प्रतापसिंह १६७४-१७०८
पृथ्वीसिंह १७०८-१७१७
संग्रामसिंह १७१७-१७१८
उम्मेदसिंह १७१८-१७२३
गोपालसिंह १७२३-१७५८
सालिमसिंह १७५८-१७७५

सामन्तसिंह	१७७५-१८४४
दलपतसिंह	१८४४-१८६४
उदयसिंह	१८६४-१८६०
रघुनाथसिंह	१८६०-१६२८
रामसिंह	१६२८-१६४६
अम्बिकाप्रसादसिंह	१६४६-

शाहपुरा राज्य के नरेश

सुजानसिंह	१६३१-१६५८
हिम्मतसिंह	१६५८-१६६४
दौलतसिंह	१६६४-१६८५
भारतसिंह	१६८५-१७२६
उम्मेदसिंह	१७२६-१७६६
रणसिंह	१७६६-१७७४
भीमसिंह	१७७४-१७६६
अमरसिंह	१७६६-१८२७
माधोसिंह	१८२७-१८४५
जगतसिंह	१८४५-१८५३
लक्ष्मणसिंह	१८५३-१८६६
रामसिंह	१८६६-१८७०
नाहरसिंह	१८७०-१६३२
उम्मेदसिंह	१६३२-१६५५
सुदर्शदेवसिंह	१६५५-

करौली राज्य के नरेश

विजयपाल	१०४०-१०६३
तवनपाल	१०६३-११६०
धर्मपाल	११६०-
कुंवरपाल	
सोहनपाल	
तिलोकपाल	

गोकुलदेव	१३२७-१३६१
अर्जुनदेव	१३६१-
विक्रमादित्य	
अभयपाल	
पृथ्वीपाल	१४०३-
उदयपाल	
प्रतापरुद्र	
चन्द्रसेन	१४४६-
गोपालदास	
द्वारकादास	१५८६-१६०४
मुकन्ददास	१६०४-१६२२
जगमल	१६२२-१६४३
छत्रमल	१६४३-१६५५
धर्मपाल (द्वितीय)	१६५५-१६७४
रतनपाल	१६७४-१६८८
कुंवरपाल	१६८८-१७२४
गोपालसिंह (द्वितीय)	१७२४-१७५७
तुरसमपाल	१७५७-१७७२
माणकपाल	१७७२-१८०४
हरबक्षपाल	१८०४-१८३७
प्रतापपाल	१८३७-१८४९
नरसिंहपाल	१८४९-१८५४
मदनपाल	१८५४-१८६९
लक्ष्मणपाल	१८६९-१८६९
जयसिंहपाल	१८६९-१८७६
अर्जुनपाल	१८७६-१८८६
भंवरपाल	१८८६-१९२७
भोमपाल	१९२७-१९४७
गणेशपाल	१९४७-

जैसलमेर राज्य के नरेश

भाटी	६२३
मंगलराव	६४३
पंजयराव	

केहर	
तनू	
विजयराज (प्रथम)	
देवराज	
मूंध	
वछराज	
दूसाज	
विजयराज (द्वितीय)	११६४–११७५
जैसलदेव	
शालिवाहन (द्वितीय)	
वीजलदेव	
केलण	१२०१–
चाचिगदेव	
कर्णसी	
लाखणसेन	१२१३–
पुण्यपाल	
जैतसिंह	१२७६–
मूलराज	१३११–१३१६
घड़सी	१३१६–१३५२
दूदा	१३५२–१३७१
केहरदेव	१३७१–१३९६
लक्ष्मण	१३९६–१४३६
वैरसी	१४३६–१४४८
चाचिगदेव (द्वितीय)	१४४८–१४६१
देवकर्ण	१४६१–१४९६
जैतसिंह	१४९६–१५२८
लूणकरण	१५२८–१५५०
मालदेव	१५५०–१५६१
हरराज	१५६१–१५७७
भीमसिंह	१५७७–१५९७
कल्याणदास	१५९७–१६२७
मनोहरदास	१६२७–१६५०
रामचन्द्र	१६५०–१६५०
सबलसिंह	१६५०–१६५९
ग्रमरसिंह	१६५९–१७०१
जसवन्तसिंह	१७०१–१७०७

बुधसिंह	१७०७-१७२१
तेजसिंह	१७२१-१७२२
सवाईसिंह	१७२२-१७२३
अखेसिंह	१७२३-१७६१
मूलराज (द्वितीय)	१७६१-१८१९
गजसिंह	१८१९-१८४६
रणजीतसिंह	१८४६-१८६४
बैरीशाल	१८६४-१८९१
शालिवाहन (तृतीय)	१८९१-१९१४
जवाहरसिंह	१९१४-१९४९
गिरधरसिंह	१९४९-१९५०
रघुनाथसिंह	१९५०-

शाकम्भरी के चौहान नरेश

वासुदेव	५५१
(वासुदेव के बाद के कुछ नरेश अज्ञात हैं)	
सामान्त	६६८
नरदेव	
जयराज	
विग्रहराज	
चन्द्रराज	
गोपेन्द्रराज	
दुर्लभराज	
गोविन्दराज	
चन्द्रराज (द्वितीय)	
गोविन्द्र राज (गूवक)	८३३-
चन्दनराज	
वाकपतिराज	
विन्ध्यराज	
सिंहराज	९५०-
विग्रहराज (द्वितीय)	
दुर्लभराज (द्वितीय)	९७३-९९
गोविन्दराज (तृतीय)	

वाक्पतिराज (द्वितीय)	
वीर्यराज	
चामुण्डराज	
सिहट	
दुर्लभराज (तृतीय)	१०७५-१०८०
विग्रहराज (द्वितीय)	१०८०-११०५
पृथ्वीराज	११०५-१११३
अजयराज	१११३-११३३
अर्णोराज	११३३-११५१
जगददेव	११५१-११५२
चतुर्थ विग्रहराज (वीसलदेव)	११५२-११६३
अमर गांगेय	११६३-११६७
द्वितीय पृथ्वीराज (पृथ्वीभट्ट)	११६७-११७०
सोमेश्वर	११७०-११७८
तृतीय पृथ्वीराज	११७८-११९२
चतुर्थ गोविन्दराज	११९२-
हरिराज	११९२-११९४
(गोविन्दराज को अजमेर से हटाया)	

रणथम्भौर के चौहान नरेश

गोविन्दराज	११९४-
(तृतीय पृथ्वीराज चौहान का पुत्र)	
वाल्हण	१२१५-
प्रह्लाद	
वीरनारायण	
वागभट्ट	१२२६-
जैत्रसिंह	
हम्मीर	१२८२-१३०१

नाडोल के चौहान नरेश

लक्ष्मण	९४३
(साकम्भरी के वाक्पति का पुत्र)	

सोभित	
बलिराज	
विग्रहपाल	
महेन्द्र	९९६-
अश्वपाल	
अहिल	
अणहिल्ल	
बालप्रसाद	
झण्डुराज	१०६३-
पृथ्वीपाल	
जोजलदेव	१०९०-
आसराज	(१११७ में राज्यच्युत)
रत्नपाल	(११२०में राज्य पुनः प्राप्त किया)
रायपाल	११३२-११४५
सहजपाल	(११४८ में राज्यच्युत
कटुदेव	
जयन्तसिंह	
अल्हण	११५२-११६३
केल्हण	११६३-११९३
जयन्तसिंह (द्वितीय)	११९३-११९७
सामन्तसिंह	११९७-१२०२

जालोर के चौहान नरेश

कीर्तिपाल	११६३-११८२
(नाडोल के अल्हण का पुत्र)	
समरसिंह	११८२-१२०५
उदयसिंह	१२०५-१२५७
चाचिग	१२५७-१२८२
सामन्तसिंह	१२८२-१३०५
कान्हड़देव	१२९६-१३१४
वीरम	

सत्यपुर (सांचोर) के चौहान

विजयसिंह (१०८५ में राज्य स्थापित)
(नाडोल के अल्हण का पुत्र)
पद्मसिंह
शोभित
साल्ह
विक्रमसिंह
हरिपाल
संग्रामसिंह
प्रतापसिंह — १३८७-
वरजंग — १४२१-

धौलपुर के चौहान नरेश

ईसुक
महिसराम
चण्डमहासेन — ८४२-

प्रतापगढ़ के चौहान नरेश

गोविन्दराज
दुर्लभराज
इन्द्रराज — ९४६-

बून्दी राज्य के नरेश

देवसिंह — १३४२-१३४३
समरसिंह — १३४३-१३४६
नरपाल — १३४६-१३७०
हम्मीर — १३७०-१४०३
बीरसिंह — १४०३-१४१३

	१४१३-१४५६
बैरीसाल	१४५६-१५०३
भाणदेव	१५०३-१५२७
नारायणदास	१५२७-१५३१
सूरजमल	१५३१-१५५४
सुरताण	१५५४-१५८५
सुर्जन	१५८५-१६०८
भोज	१६०८-१६३१
रतन	१६३१-१६५८
शत्रुशाल	१६५८-१६८१
भावसिंह	१६८१-१६९५
अनिरुद्धसिंह	१६९५-१७२९
बुद्धसिंह	१७२९-१७४८
दलेलसिंह (करवड़)	
उम्मेदसिंह	१७४८-१७७१
अजीतसिंह	१७७१-१७७३
विष्णुसिंह	१७७३-१८२१
रामसिंह	१८२१-१८८९
रघुबीरसिंह	१८८९-१९२७
ईश्वरीसिंह	१९२७-१९४५
बहादुरसिंह	१९४५-

कोटा राज्य के नरेश

माधोसिंह (बून्दी के राव रतन का पुत्र)	१६३१-१६४९
मुकन्दसिंह	१६४९-१६५८
जगतसिंह	१६५८ १६८३
प्रेमसिंह (कोयला ठिकाना)	१६८३-१६८४
किशोरसिंह	१६८४-१६९६
रामसिंह	१६९६-१७०७
भीमसिंह	१७०७-१७२०
अर्जुनसिंह	१७२०-१७२३

दुर्जनशाल	१७२३–१७५६
अजीतसिंह	१७५७–१७५८
शत्रुशाल	१७५८–१७६४
गुमानसिंह	१७६४–१७७१
उम्मेदसिंह	१७७१–१८१६
किशोरसिंह (द्वितीय)	१८१६–१८२७
रामसिंह (द्वितीय)	१८२७–१८६५
शत्रुशाल (द्वितीय)	१८६५–१८८८
उम्मेदसिंह (द्वितीय)	१८८६–१६४०
भीमसिंह	१६४०–

सिरोही राज्य के नरेश

शिवभाण	१३६२–१४२४
(जालोर के समरसिंह का वंशज)	
सहसमल	१४२४–१४५१
लाखा	१४५१–१४८३
जगमाल	१४८३–१५२३
अखैराज	१५२३–१५३३
रामसिंह	१५३३–१५४३
दूदा	१५४३–१५५३
उदयसिंह	१५५३–१५६२
मानसिंह	१५६२–१५७२
सुरताण	१५७२–१६१०
राजसिंह	१६१०–१६२०
अखैराज	१६२०–१६७३
उदयसिंह	१६७३–१६७६
वैरीसाल	१६७६–१६६७
छत्रशाल	१६६७–१७०५
मानसिंह (उम्मेदसिंह)	१७०५–१७४६
पृथ्वीराज	१७४६–१७७२
तख्तसिंह	१७७२–१७८२
जगतसिंह	१७८२–
वैरीसाल (द्वितीय)	१७८२–१८०७

उदयभान	१८०७-१८१८
शिवसिंह	१८१८-१८४७
	१८४७-१८६२
उम्मेदसिंह	८६२-१८७५
केसरीसिंह	१८७५-१९२०
स्वरूपरायसिंह	१९२०-१९४६
तेजसिंह	१९४६-१९५०
अभयसिंह	१९५०-

जयपुर राज्य के नरेश

दुल्हराय (ढूंढाड में राज्य स्थापित किया)	११३७
काकिलदेव (मेदल) (आमेर में राज्य स्थापित किया)	
हणुदेव	
जान्हड़देव	
पजवनदेव	
मालसी	
बिजलदेव	
राजदेव	
किल्हण	
कुन्तल	
जाणसी	
उदयकरण	
नरसिंह	
बनवीर	
उदयकरण	
चन्द्रसेन	
पृथ्वीराज	१५०३-१५२७
पूर्णमल	१५२७-१५३४
भीमदेव	१५३४-१५३७
रतनसिंह	१५३७-१५४८
आसकरण	१५४८-

भारमल	१५४८-१५७४
भगवंतदास	१४७४-१५८९
मानसिंह	१५८९-१६१४
भावसिंह	१६१४-१६२८
जयसिंह	१६२१-१६६७
रामसिंह	१६६७-१६८९
विशनसिंह	१६८९-१७००
जयसिंह (द्वितीय) (जयपुर में राजधानी स्थापित की)	१७००-१७४३
ईश्वरीसिंह	१७४३-१७५०
माधवसिंह	१८५१-१७६७
पृथ्वीसिंह	१७६८-१७७८
प्रतापसिंह	१७७८-१८०३
जगतसिंह	१८०३-१८१९
जयसिंह (तृतीय)	१८१९-१८३५
रामसिंह (द्वितीय)	१८३५-१८८०
माधवसिंह (द्वितीय)	१८८०-१९२२
मानसिंह (द्वितीय)	१९२२-

———

अलवर राज्य के नरेश

प्रतापसिंह (माचेड़ी के कल्याणसिंह का वंशज)	१७७५-१७९०
बख्तावरसिंह	१७९०-१८१५
बन्नेसिंह	१८१५-१८५७
शिवदानसिंह	१८५७-१८७४
मंगलसिंह	१८७४-१८९२
जयसिंह	१८९२-१९३३
तेजसिंह	१९३७

———

जोधपुर राज्य के नरेश

सीहा (बदायूं से आया)	१२४३-१२७३
आसवान	१२७३-१२९२
धूहड	१२९२-१३०९
रायपाल	१३०९-१३१३
कानापाल	१३१३-१३२३
जालणसी	१३२३-१३२८
छाड़ा	१३२८-१३४४
टीडा	१३४४-१३५७
सलखा	१३५७-१३७४
वीरम	१३७४-१३८३
चूण्डा (मण्डोर में राज्य स्थापित किया)	१३९४-१४२३
कान्हा	१४२३-१४२४
सत्ता	१४२४-१४२७
रणमल	१४२८-१४३८
जोधा (जोधपुर में राजधानी स्थापित की)	१४५३-१४८९
सातल	१४८९-१४९२
सूजा	१४९२-१५१५
गांगा	१५१५-१५३२
मालदेव	१५३२-१५६२
चन्द्रसेन	१५६२-१५८१
रायसिंह	१५८१-१५८३
उदयसिंह	१५८३-१५९५
शूरसिंह	१५९५-१६१९
गजसिंह	१६१९-१६३८
जसवंतसिंह	१६३८-१६७८
अजीतसिंह	१७०७-१७२४
अभयसिंह	१७२४-१७४९
रामसिंह	१७४९-१७५१
बख्तसिंह	१७५१-१७५२
विजयसिंह	१७५२-१७९३
भीमसिंह	१७९३-१८०३
मानसिंह	१८०३-१८४३

तख्तसिंह	१८४३–१८७३
जसवन्तसिंह (द्वितीय)	१८७३–१८६५
सरदारसिंह	१८६५–१९११
सुमेरसिंह	१९११–१९१८
उम्मेदसिंह	१९१८–१९४७
हनुवन्तसिंह	१९४७–१९५२
गजसिंह (द्वितीय)	१९५२–

———

बीकानेर राज्य के नरेश

बीका (जोधपुर के राव जोधा का पुत्र)	१४८५–१५०४
नरा	१५०४–१५०५
लूणकरण	१५०५–१५२६
जैतसी	१५२६–१५४२
कल्याणसिंह	१५४२–१५७३
रायसिंह	१५७३–१६१२
दलपतसिंह	१६१२–१६१४
सूरसिंह	१६१४–१६३१
कर्णसिंह	१६३१–१६६९
अनोपसिंह	१६६९–१६९८
स्वरूपसिंह	१६९८–१७००
सुजानसिंह	१७००–१७३६
जोरावरसिंह	१७३६–१७४६
गजसिंह	१७४६–१७८७
राजसिंह	१७८७
प्रतापसिंह	१७८७
सूरतसिंह	१७८७–१८२८
रत्नसिंह	१८२८–१८५१
सरदारसिंह	१८५१–१८७२
डूंगरसिंह	१८७२–१८८७
गंगासिंह	१८८७–१९४२
शार्दूलसिंह	१९४२–१९५०
करणीसिंह	१९५०–

किशनगढ राज्य के नरेश

किशनसिंह (जोधपुर नरेश उदयसिंह का पुत्र)	१६०६-१६१५
सहसमल	१६१५-१६१८
जगमाल	१६१८-१६२६
हरिसिंह	१६२६-१६४३
रूपसिंह	१६४३-१६५८
मानसिंह	१६५८-१७०६
राजसिंह	१७०६-१७४८
बहादुरसिंह [1]	१७४६-१७८२
बिड़दसिंह	१७८२-१७८८
प्रतापसिंह	१७८८-१७९८
कल्याणसिंह	१७९८-१८३८
मोहकमसिंह	१८३८-१८४०
पृथ्वीसिंह	१८४०-१८८०
शार्दूलसिंह	१८८०-१९००
मदनसिंह	१९००-१९२६
यज्ञनारायणसिंह	१९२६-१९३९
सुमेरसिंह	१९३९-

भरतपुर राज्य के नरेश

बदनसिंह	१७२३-१७५५
सूरजमल	१७५६-१७६३
जवाहरसिंह	१७६४-१७६८
रतनसिंह	१७६८-१७६९
केशरीसिंह	१७६९-१७७७
रणजीतसिंह	१७७७-१८०५
रणधीरसिंह	१८०५-१८२३

---

1. राजसिंह की मृत्यु के वाद राज्य का विभाजन अस्थाई रूप से होगय रूपनगर में अलग गद्दी स्थापित हुई। अतः निम्न का राज्य रहा—

सामन्तसिंह	१७४८-१७६४
सरदारसिंह	१७५५-१७६६

बलदेवसिंह	१८२३–१८२५
दुर्जनशाल	१८२५–१८२६
बलवन्तसिंह	१८२६–१८५२
जसवन्तसिंह	१८५२–१८६३
रामसिंह	१८६३–१९००
कृष्णसिंह	१९००–१९२९
ब्रजेन्द्रसिंह	१९२९–

धोलपुर राज्य के नरेश

लोकेन्द्रसिंह	१७६२–१८०४
कीरतसिंह	१८०४–१८३६
भगवन्तसिंह	१८३६–१८७३
निहालसिंह	१८७३–१९०१
रामसिंह	१९०१–१९११
उदयभानुसिंह	१९११–१९५४
हेमन्तसिंह	१९५४–

झालावाड़ राज्य के नरेश

मदनसिंह	१८३७–१८४६
पृथ्वीसिंह	१८४६–१८७५
झालमसिंह	१८७५–१८९६
भवानीसिंह	१८९७–१९२९
राजेन्द्रसिंह	१९२९–१९४३
हरिश्चन्द्र	१९४३–१९६७
इन्द्रजीतसिंह	१९६७–

टोंक राज्य के शासक

अमीरखां	१८१७-१८३४
वजीर मुहम्मदखां	१८३४-१८६४
मुहम्मद अलीखां	१८६४-१८६७
इब्राहीम अलीखां	१८६७-१९३०
सदात अलीख़ां	१९३०-१९४७
फारूक अलीखां	१९४७-१९४८
इस्माईल अलीखां	१९४८-

दांता राज्य के परमार नरेश

केसरीसिंह (तरसंगगढ़ में राजधानी स्थापित की)
(मालवा के उदयादित्य परमार का वंशज)
जगतपाल
वीरसेन
सोढदेव
सिद्धराज
भाण
जगमाल
कानड़देव
कल्याणदेव
महेपाल
गोविन्दराज
लक्ष्मणराज
रामदेव
कानदेव
मेघराज
रणवीरदेव
अर्जुनदेव
आसकरण
वाघ
जयमल (दांता में राजधानी स्थापित की)
जेठमल
पूंजा
मानसिंह
गजसिंह

पृथ्वीसिंह	
कर्णसिंह	
रतनसिंह	
अभयसिंह	१७६४–
मानसिंह	१७६४–१७६६
जगतसिंह	१७६६–१८२३
नाहरसिंह	१८२३–१८४५
जालमसिंह	१८४८–१८५८
हरिसिंह	१८५८–१८७६
जसवन्तसिंह	१८७६–१६०८
हम्मीरसिंह	१६०८–१६२५
भवानीसिंह	१६२६–
पृथ्वीसिंह	

चन्द्रावती (आबू) के परमार नरेश

आरण्यराज (चन्द्रावती में राज्य स्थापित किया)
(मालवा के मुंज (उत्पल) का पुत्र)

अदपुत कृष्णराज	
धरणीवराह (श्री नायघोसी)	
महीपाल	१००२
धन्धुक	१०३१
पूर्णपाल	१०४२
कृष्णराज	
ध्रुवभट	
रामदेव	
विक्रमसिंह	
यशोधवल	११४६–११६२
धारावर्ष	११६२–१२२७
प्रह्लादन	१२२७–१२३०
सोमदेव	१२३०–
कृष्णराज	१२८५–
प्रतापसिंह	–१२६३
विक्रमसिंह	–१३११

जालोर के परमार नरेश

वाक्पतिराज	९७२-९९२
चन्दन	९९२-१००२
देवराज	१००२-१०४२
अपराजित	१०४२-१०६७
विज्जल	१०६७-१०८२
धारावर्ष	१०८२-१११७
वीसल	१११७-११४२
कुंतपाल	

बागड़ के परमार नरेश

डम्बरसिंह (मालवा के वैरिसिंह परमार का पुत्र)	
धनिक	९२०-९४५
चच (कंकदेव)	९४५-९७०
चण्डप	९७०-९९५
सत्यराज	९९५-१०२०
लिम्बराज	१०२०-१०४५
मण्डलिक	१०४५-१०७०
चामुण्डराज	१०७०-११०२
विजयराज	११०२-११२५

मालवा के परमार नरेश

कृष्णराज	
वैरीसिंह	
सीयक	
वाकपतिराज (भञ्जदेव)	
वैरीसिंह (द्वितीय)	
द्वितीय सीमक (श्रीहर्ष)	९४८-९७२
मुंज (उत्पल, अमोघवर्ष)	९७२-९९३

सिन्धुराज नवसाहसांक	९९३-१०२०
भोज त्रिभुवन नारायण	१०२०-१०४२
जयसिंह	१०५५-१०५९
उदयादित्य	१०५९-१०८
लक्ष्मणदेव	१०८६-११०४
नरवर्मा	११०४-११३४
यशोवर्मा	११३४-११३५
जयवर्मा	
अजयवर्मा	
विंध्यवर्मा	
सुभटवर्मा	
अर्जुनवर्मा	१२१०-१२१५
देवपाल	१२१५-१२३५
जयसिंह (द्वितीय)	१२४३-१२५७
जयवर्मा (द्वितीय)	१२५७-१२६०
जयसिंह (तृतीय)	१२६०-
अर्जुनवर्मा (द्वितीय)	
भोज (द्वितीय)	
जयसिंह (चतुर्थ)	१३१०-

भीनमाल के परमार नरेश

देवराज	
कृष्णराज	१०६०-१०६६
सोछराज	
उदयराज	११७
सोमेश्वर	११६१
जयन्तसिंह	११८२
सलरव	

चित्तौड़ के मौर्य नरेश

माहेश्वर	
भीम	
भोज	
मान	७१३
धवल	

हथूंडी (जिला पाली) के राठौड़ नरेश

हरिवर्मा	
विदग्धराज	९१६
मम्मट	९३९
धवल	९९७
बालप्रसाद	

गुजरात के चालुक्य (सोलंकी) नरेश

मूलराज	९६१-९९६
चामुण्डराज	९९७-१००९
बल्लभराज	१००९
दुर्लभराज	१००९-१०२२
भीमदेव	१०२२-१०६४
कर्णदेव	१०६४-१०९४
जयसिंहदेव	१०९४-११४३
कुमारपाल	११४३-११७२
अजयपाल	११७३-११७६
मूलराज (द्वितीय)	११७६-११७८
भीमदेव (द्वितीय)	११७८-१२४१
पादुकराज	१२४१ (३ दिन)
त्रिभुवनपाल	१२४१-१२४३

गुजरात के बघेल नरेश

वीसल	१२४३-१२६१
अर्जुनदेव	१२६१-१२७४
रामदेव	१२७४
सारंगदेव	१२७४-१२९६
कर्णदेव	१२९६-१३००

भीनमाल के प्रतिहार नरेश [1]

नागभट्ट	७५६
ककुत्स्थ	
देवराज	
वत्सराज	७८३
द्वितीय नागभट्ट (नागावलोक) (कन्नोज के चक्रायुध को हटाकर वहां अपनी राजधानी स्थापित की)	८१५–८३३
रामभद्र	८३३
भोजदेव (आदिवराह या मिहिर)	८४३–८८१
महेन्द्रपाल	८९३
महीपाल	९१७
द्वितीय भोज	
विनायकपाल	९३१
द्वितीय महेन्द्रपाल	९४६
देवपाल	९४८
विजयपाल	९५९
राजपाल	१०१८
त्रिलोचनपाल	१०२७
यशपाल	१०३६

———

मण्डोर के प्रतिहार नरेश [1]

हरिश्चन्द्र	५९७
बाऊक	८३७
कुक्कुक	८६१

———

चावड़ा नरेश

वनराज	७४५–८०५
योगराज	८०५–८४०
क्षेमराज	८४०–८६५
भूयोदराज	८६५–८९४

वैरीसिंह	८६४-६१६
रत्नादित्य	६१६-६३४
सामान्तसिंह (भमड़)	६३४-६४१

पालनपुर के नवाब

फिरोजख	१६३५-१६३८
जालोर के फतेखां	
मुजाहिरखां	१६३८-१६६३
कमालखां	१६६३-१७०६
फतहखां	१७०७-१७१६
करीमदादखां	१७१६-१७३५
पहाड़खां (द्वितीय)	१७३५-१७४४
बहादुरखां	१७४४-१७८२
सलीमखां	१७८२-१७८५
शेरखां	१७८५-१७६२
मुबारकखां	
शमशेरखां	
फिरोजखां	
फतहखां	
जोरावरखां	
शेर मोहम्मदखां	१८७७-१६१८
ताले मोहम्मदखां	१६१८-

जालोर के पठान शासक

खुर्रमखां	१३६४-१३६५
युसुफखां	१३६५-१४१६
हसनखां	१४१६-१४३६
सालारखां	१४३६-१४६१
उसमानखां	१४६१-१४८४
वुड्ढनखां	१४८४-१५०६
मुजहिदखां	१५०६-१५१०
अलीशेरखां	१५१०-१५२५

सिकन्दरखां	१५२५-१५३१
गजनीखां	१५३१-१५३३
मलिकखां	१५५३-१५७६
गजनीखां	१५७६-१६१६
पहाड़खां	१६१६-१६१८

बादशाह जहांगीर ने जालोर की जागीर शाहजादा खुर्रम को ई० सन् १६१८ में दे दी लेकिन ई० सन् १६८० में बादशाह औरंगजेब ने जालोर, सांचोर व भीनमाल की सनद फतहखां को दे दी अतः उसका शासन ई० सन् १६८८ तक रहा।

पेशवा

बालाजी विश्वनाथ	१७१३-१७२०
बाजीराव	१७२०-१७४०
बालाजी बाजीराव	१७४०-१७६१
माधवराव	१७६१-१७७२
नारायणराव	१७७२-१७७३
रघुनाथराव	१७७३-१७७४
माधवराव (द्वितीय)	१७७४-१७९६
बाजीराव (द्वितीय)	१७९६-१८१८

दिल्ली के सुलतान

कुतुबी-वंश

कुतुबुद्दीन ऐबक	१२०६-१२१०
आरामशाह	१२१०-१२११

इल्तुतमिश-परिवार

शमसुद्दीन इल्तुतमिश	१२११-१२३६
रुकुनुद्दीन फीरोज	१२३६

सुल्तानों का नाम

रजिया	१२३६-१२४०
मुईजुद्दीन बहराम	१२४०
अलाउद्दीनमसूद	१२४२-१२४६
नासिरुद्दीन महमूद	१२४६-६५

बलबन वंश

बहाउद्दीन बलबंन	१२६५-१२८७
मुईजुद्दीन कैकुबाद	१२८७-१२८९
शमसुद्दीन कैयूमार	१२८९-१२९०

खिजली वंश

जलालुद्दीन फीरोज खिलजी	१२९०-१२९६
रुकुनुद्दीन इब्राहीम	१२९६
अलाउद्दीन मुहम्मद	१२९६-१३१६
शिहाबुद्दीन उमर	१३१६
कुतुबुद्दीन मुबारक	१३१६-१३२०
नासिरुद्दीन खुसरव (खिलजी नहीं)	१३२०

तुगलक वंश

गियासुद्दीन तुगलक (प्रथम)	१३२०-१३२५
मुहम्मद बिन तुगलक	१३२५-१३५१
फीरोज बिन राजब	१३५१-१३८८
गियासुद्दीन (द्वितीय)	१३८८-१३८९
अबूबकर	१३८९-१३९०
सिकन्दर	१३९४
महमूद	१३९४-१४१२
दौलतखां लोदी (निर्वाचित)	१४१३-१४

सैयद वंश

खिज्रखां सैय्यद	१४१४-१४२१
मुईजुद्दीन मुबारक	१४२१-१४३४
मुहम्मदशाह	१४३४-१४४५
अलाउद्दीन आलमशाह	१४४५-१४५१

लोदी वंश

बहलोल लोदी	१४५१-१४८९
सिकन्दर लोदी	१४८९-१५१७
इब्राहीम लोदी	१५१७-१५२६

दिल्ली के सुलतान

तुर्क वंश

मुगल वंश के बादशाह

बाबर	१५२६-१५३०
हुमायूं	१५३०-१५३९

सूरवंश

शेरशाह	१५४०-१५४५
इस्लामशाह	१५४५-१५५३
मुहम्मद आदिलशाह	१५५३
इब्राहीम शूर	१५५३
सिकन्दरशाह	१५५५

मुगल वंश (दूसरी बार)

हुमायूं (दूसरी बार)	१५५५-१५५६
अकबर	१५५६
जहांगीर	१६०५-१६२७
दवार बख्श (अस्थाई)	१६२७-१६२८
शाहजहां	१६२८-१६५८
औरंगजेब (आलमगीर)	१६५८-१७०७
बहादुरशाह (शाहआलम)	१७०७-१७१२
जहांदरशाह	१७१२-१७१३
फर्रुखसियर	१७१३-१७१९
रफिउदजात	१७१९
रफिउदौला	१७१९
मुहम्मदशाह	१७१९-१७४८
अहमदशाह	१७४८-१७५४
आलमगीर (द्वितीय)	१७५४-१७५९
शाहजहां (द्वितीय)	१७५९
शाहआलम (द्वितीय)	१७५९-१८०६
अकबर (द्वितीय)	१८०६-१८३७
बहादुरशाह (द्वितीय)	१८३७-१८५७

गुजरात (अहमदाबाद) के सुलतान

मुजफ्फर शाह	१३९२-१४११
अहमदशाह	१४११-१४४२

मुहम्मद करीमशाह	१४४३-१४५१
कुतुबद्दीन	१४५१-१४५८
दाऊदशाह	१४५८-
महमुदशाह (बेगड़ा)	१४५८-१५११
मुजफ्फरशाह (द्वितीय)	१५११-१५२६
सिकंदरशाह	१५२६-
नासिरखां महमूद (द्वितीय)	१५२६-
बहादुरशाह	१५२६-१५३६
मीरां मुहम्मदशाह (फारूकी)	१५३६-१५३७
महमूदशाह (तृतीय)	१५३७-१५५३
अहमदशाह (द्वितीय)	१५५३-१५६१
मुजफ्फरशाह (तृतीय)	१५६१-

मालवे (मांडू) के सुलतान

गौरी वंश

दिलावरखां (अमीशाह)	१४०१-१४०५
हुशंग (अल्पखां)	१४०५-१४३५
मुहम्मद (गजनीखां)	१४३५-१४३६

खिलजी वंश

मुहम्मदशाह खिलजी (हुशंग का भानजा)	१४३६-१४६९
गयासउद्दीन	१४६९-१५००
नासिरशाह खिलजी	१५००-१५११
महमूदशाह (द्वितीय)	१५११-३१

अंग्रेज शासक

ईस्ट इण्डिया कम्पनी	१७५७-१८५८
महारानी विक्टोरिया	१८५८-१९०१
एडवर्ड (सप्तम)	१९०१-१९१०
जार्ज (पंचम)	१९१०-१९३६
एडवर्ड (अष्टम)	१९३६-
जार्ज (षष्ठम)	१९३६-

ईस्ट इण्डिया कम्पनी के गवर्नर व गवर्नर जनरल

गवर्नर

क्लाईव	१७५८–१७६१
हारी	१७६१–१७७४
हैस्टींग्ज	१७७४–१७८५

गवर्नर जनरल

मेकफरसन	१७८५–१७८६
कार्नोवालीस	१७८६–१७९३
जानशोर	१७९३–१७९८
एडवर्ड क्लार्क	१७९८
वेलेजली	१७९८–१८०५
कार्नीवालिस	१८०५
बारलो	१८०५–१८०७
मिण्टो	१८०७–१८१३
हैस्टींग्ज	१८१३–१८२३
एडम	१८२३
एम्हर्स्ट	१८२३–१८२८
बेले	१८२८
बेण्टिक	१८२८–१८३५
मेटकाफ	१८३५–१८३६
आकलैण्ड	१८३६–१८४२
एलनबरा	१८४२–१८४४
बर्ड	१८४४
हार्डिन्ज	१८४४–१८४८
डलहौजी	१८४८–१८५६
कैनिंग	१८५६–१८५८

———

भारत के गवर्नर जनरल एवं वाइसराय

कैनिंग	१८५८–१८६२
एल्गिन	१८६२–१८६३
नेपियर	१८६३–

लारेन्स	१८६४–१८६६
मेयो	१८६६–१८७२
स्टार्ची	१८७२
नेपीयर	१८७२
नार्थवुक	१८७२–१८७६
लिटन	१८७६–१८८०
रिपन	१८८०–१८८४
डफरीन	१८८४–१८८८
लैण्डस्डोन	१८८८–१८९३
एल्गिन (द्वितीय)	१८९४–१८९९
कर्जन	१८९९–१९०४
एम्पटहील	१९०४
कर्जन (पुनः नियुक्त)	१९०४–१९०५
मिण्टो	१९०५–१९१०
हार्डिञ्ज	१९१०–१९१६
चेम्सफोर्ड	१९१६–१९२१
रीडींग	१९२१–१९२६
इर्विन	१९२६–१९३१
वेलिंगडन	१९३१–१९३६
लिनलिथगो	१९३६–१९४४
वैवैल	१९४४–१९४७
माउण्टबैटन	१९४७

स्वतंत्र भारत के गवर्नर जनरल

माउण्टबैटन	१९४७–१९४८
चक्रवर्ती राजगोपालाचारी	१९४८–१९५०

भारत के राष्ट्रपति

राजेन्द्रप्रसाद	१९५०–१९६२
सर्वपल्ली राधाकृष्णानन्	१९६२–१९६७
जाकिर हुसैन	१९६७

भारत के प्रधान मंत्री

जवाहरलाल नेहरू (अंतरिम सरकार)	१६४६-१६४७
जवाहरलाल नेहरू (स्वतंत्र भारत)	१६४७-१६६४
लालबहादुर शास्त्री	१६६४-१६६६
इन्दिरा गांधी	१६६६-

राजस्थान के महाराज प्रमुख

भोपालसिंह (उदयपुर के महाराणा)	१६४६-१६५६

राजस्थान के राजप्रमुख

मानसिंह (जयपुर के महाराजा)	१६४६-१६५६

राजस्थान के उपराजप्रमुख

भीमसिंह (कोटा के महाराव)	१६४६-१६५६

राजस्थान के राज्यपाल

गुरुमुख निहालसिंह	१६५६-१६६२
सम्पूर्णानन्द	१६६२-१६६७
हुकमसिंह	१६६७-

राजस्थान के मुख्यमंत्री

हीरालाल शास्त्री	१६४६-१६५१
सी० एस० वेंकटाचार	१६५१
जयनारायण व्यास	१६५१-१६५२
टीकाराम पालीवाल	१६५२
जयनारायण व्यास	१६५२-१६५४
मोहनलाल सुखाड़िया	१६५४-

परबतसर के दहिया राणा

दाधीचि	
मेघनाथ	
वेरिसिंह	
चच	६६६
यशपुष्ट	
कीर्तसी	
विन्कन	१२४३

मारोठ के दहिया राणा

कडुवराज	
पद्मसिंह	
जयन्तसिंह	१२१५

ग्वालियर के कच्छवाहा

लक्ष्मण	९५०-९७५
वज्रदामन	९७५-९९५
मंगलराज	९९५-१०१३
कीर्तिराज	१०१५-१०३५
मूलदेव	१०३५-१०५५
देवपाल	१०५५-१०७५
पद्मपाल	१०७५-१०८०
महापाल	१०८०-११००

डूबकुन्ड के कच्छवाहा

युवराज	१०००
अर्जुन	१०१५-१०३५
अभिमन्यु	१०३५-१०४४
विजयपाल	१०४४-१०७०
विक्रमसिंह	१०७०-११००

नरवर के कच्छवाहा

गगनसिंह १०७५–१०९०
शरदसिंह १०९०–११०५
वेरिसिंह ११०५–११२५

———

बदाऊँ के राठौड़

चन्द्र
विग्रहपाल
भवनपाल
गोपाल
त्रिभुवन
मदनपाल
देवपाल
भीमपाल
अमृतपाल
लखनपाल

———

सिसोदा के राणा

माहप
राहप
नरपती
दिनकर
जसकरण
नागपाल
पूर्णपाल
पृथ्वीपाल
भुवनसिंह
जयसिंह
लक्ष्मणसिंह

दिल्ली के तंवर

जोल (राजू)
वजराट (वाजू)
जज्जुक (जाजू)
पूर्णराज
ओघरु
जहेरु
वच्छहट (वत्सराज)
पीपल
पिहणपाल
तिल्हनपाल
महीपाल १०४३
सलक्षणपाल
जयपाल
अनङ्गपाल ११३२
तेजपाल
मदनपाल ११६६
कृतपाल
लखनपाल
पृथ्वीपाल
चहाड़पाल

मथुरा-भरतपुर के मौर्य

कृष्णराज
चन्द्रगुप्त
आर्यराज
डिन्डिराज

धानोप के राष्ट्रकू

भल्लिल
दन्तिवर्मन
वुधराज
गोविन्द
चच्च १००६

मण्डोर के प्रतिहार

हरिचन्द्र
राज्जिल
नागभट्ट
तात
भोज
यशोवर्धन
चन्डक
शिलुक
भोट
भिल्लादित्य
कक्क
वाडक ८३७
कक्कुक ८६१

चाटसू के गहलोत

भर्तृभट्ट
ईशानभट्ट
उपेन्द्रभट्ट
गुहिल
धनिक ६८४
धाडक
कृष्णराज
शंकरगण
हर्षराज
गुहिल (द्वितीय)
भट्ट
बालादित्य
बल्लभराज

भडानक (बयाना और त्रिभुवनगिरि) के सूरसेन[1]

जैतपाल	
विजयपाल	
तहनपाल	
धर्मपाल	
कुमारपाल	११५१
अजयपाल	११७०
हरिपाल	
सोहनपाल	११९६
कुमारपाल (द्वितीय)	
अजयपाल	
हरिपाल	
सोहनपाल	
अनंगपाल	
पृथ्वीपाल	
राजपाल	

जैसलमेर के भाटी नरेश[2]

भाटी	
वच्छराव	
विजयराव	
मेजमराव	
केरर	
तनु	
विजयराव	
देवराज	
मूण्ड	
वच्छ	
दुसाझ	
विजयराव (लांजा)	११६४-११७५
भोज	

---

(१) करौली राज्य के नरेश (पृ. १५४ व १५५) संशोधित

(२) जैसलमेर राज्य के नरेश (पृ० १५५ व १५६) संशोधित

जैसल	
शालिवाहन	
बेजल	
केल्हण	
चाचिगदेव	
कर्ण	१२८३
जैत्रसिंह	
लखणसेन	
पुन्यपाल	
जैत्रसिंह	१२९९
मूलराज	
रतनसिंह	
दूदा	
घटसिंह	
केहरदेव	१३६१–१३९६

———

जैसल	
शालिवाहन	
वेजल	
केल्हण	
चाचिगदेव	
कर्ण	१२८३
जैत्रसिंह	
लखणसेन	
पुन्यपाल	
जैत्रसिंह	१२९९
मूलराज	
रतनसिंह	
दूदा	
घटसिंह	
केहरदेव	१३६१–१३९६

———

❁ अनुक्रमणिका ❁

क (भौगोलिक)

अनुक्रमणिका (वैयक्तिक)

शुद्धि पत्र

प्रेस की असावधानी के कारण कुछ अशुद्धियां रह गई हैं। पाठक कृपा कर शुद्ध कर पढ़ लेवें। मात्राओं की अशुद्धियां छोड़ दी गई हैं।

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	११	जोधपुर	नागोर
६	२०	युद्ध पड़िहारों	युद्ध में पड़िहारों
१०	१७	अधिकार	हमला
११	१४	कब्जा किया	कब्जा कर अपने को बादशाह घोषित किया।
१७	२९	कांगड	बागड़
२५	१३	वागोट	बागोर
२६	६	वितरणो	विवरणों
२७	१	मोदी	मोही
२७	१०	(जुलाई १९) चन्द्रसेन ने सोजत पर कब्जा किया	लोपित किया जाये
२७	३२	चन्द्रसिंह... कला किया	(जुलाई ७) चन्द्र सेन ने सोजत पर कब्जा
२८	२४	दिसम्बर	दिसम्बर ७
२९	२४	दतीवा	दांतीवाड़ा
३१	१५	आमेर नरेश	(आमेर नरेश भगवानदास की पुत्री) ने जहर खाकर आत्म हत्या की। यह खुसरो की माता थी।
३३	८	माल	जात
	१५	नीमना	नीमच
३५	६	पुंजरात	पुंजराज
	१०	शाहजादा	शाहजहां
	२६	पुंजरात	पुंजराज
३६	२३	शाहजादा	शाहजहां
	२८	जमसद	जमरूद
३७	१	वलख वदखशा	वलख और वदखशा
	११	मुहमोत	मुहणोत
		नासमण	नारायण

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
	३	हुआ	किया
१२२	८	जनवरी ८	जनवरी २८
१२६	१	को राज्य	को जोधपुर राज्य
१२७	३२	उडीसा	डीसा
१२९	१३	आनन्दराव	आनन्दराज
	१८	उदयपुर	उदयपुर के
१३५	२६	उदयपुर के	(अगस्त २१) उदयपुर के
१३६	१४	(मई)	(मई ३०)
	२४	राजस्थान	(दिसम्बर ३) राजस्थान
१३८	२७	केदारना	केदारनाथ
१४९	२०	महायक	महीयाक
१५०	३	हंसयान	हंसपाल
	९	रणसिंह	रत्नसिंह (कर्णसिंह)
	१०	क्षेमसिंह	क्षेमसिंह सामन्तसिंह ११६८-११८२
	११	कुमारसिंह	कुमारसिंह ११८२-११८५
१५५	१	गोकुलदेव	गूगलदेव
१५६	८	विजयराज (द्वितीय)	विजयराज (तृतीय) भोज
१५६	१४	कर्णसी	कर्णसिंह जैत्रसिंह
	१९	धड़सी	रतनसिंह दूदा घटसिंह
१६५	४	आसवान	आस्थान
१७४	२१-२४	मण्डोर के प्रतिहार आदि	चारों पक्तियां लोपित की जावे
	२५	चावड़ा नरेश	अनहिल पट्टण के चावड़ा नरेश
१७५	५	फिरोज	फिरोजखां
१८६	१	राष्ट्रकू	राष्ट्रकूट
	१९	वाडक	वाउक